डाक पंजीयन सं. जयपुर सिटी/101/2020-22 वर्ष : 08 अंक : 26 मूल्य: 5 रुपए पृष्ठ : 12 R.N.I. No. RAJHIN/2014/56746

शिखर दृष्टि जीवन की... साप्ताहिक समाचार पत्र

हिलव्यू समाचार

जयपुर >> मंगलवार, 28 दिसम्बर, 2021

hillviewsamachar@gmail.com

जयपुर कॉलेज (नाना जी की हवेली) चौड़ा रास्ता जयपुर अवैध निर्माणों का प्रतिनिधि बना

जयपुर। शक़्ल बदलती इमारतें और लुप्त होती विरासतें यह कोई मामूली मुद्दा नहीं। राजधानी जयपुर अपनी ऐतिहासिक विरासत को खोने की कगार पर खड़ा है।

लगातार मीडिया के माध्यम से, जन प्रतिनिधि आंदोलनों से,स्थानीय लोगों के विरोध के बावजूद रात के अंधेरे में रोज़ धीरे-धीरे यूनेस्को की सूची में अंकित इस चार दिवारी परकोटा की पहचान, उसकी विरासत गुम होती जा रही है।

अवैध निर्माणों का सिलसिला चरम पर है। इस अवैध कार्यों का प्रतिनिधि बना 'जयपुर कॉलेज नाना जी की हवेली' का अवैध निर्माण चौड़ा रास्ता जयपुर अन्य अवैध गतिविधियों को लगातार प्रेरित कर रहा है।

निरन्तर शिकायतों और विरोधों के बावजूद हर दिन एक नया निर्माण का चरम पूरा होता दिखाई देता है। यह अवैध कार्य सरकार के गाल पर झन्नाटेदार तमाचा है, तानाशाही का।

जयपुर वॉल सिटी यानी परकोटा अब जल्द व्यवसायिक कॉम्प्लेक्सों में तब्दील हो जाएगा और सरकारी तंत्र सोता रह जायेगा।

इसी संदर्भ में 21 दिसम्बर को जेडीए परिसर के मंथन सभागार में स्वायत्त शासन व नगरीय विकास मंत्री शांति धारीवाल के समक्ष इस मुद्दे को संपादक शालिनी श्रीवास्तव ने रखा-

प्रश्न : सर परकोटे में होने वाले अवैध निर्माणों पर रोक क्यों नहीं लगाई जा रही है?

उत्तर: (मंत्री जी) : ऐसी कोई इन्फॉर्मेशन नहीं और अगर यह निर्माण हो रहे हैं तो जल्द इन पर कार्यवाही होगी?

प्रश्न : सर इन्फॉर्मेशन मैं आपको दे रही हूँ सबसे बड़े अवैध निर्माण की कि जयपुर कॉलेज चौड़ा रास्ता, नाना जी की हवेली लगातार चार मंजिल बन गया है शिकायतों के बावजूद?

शक्ल बदलती इमारतें और लुप्त होती विरासतें

प्रतिष्ठित स्थापत्यकला और जीवंत संस्कृति के लिए जाना जाने वाला चार दिवारी जयपुर यूनेस्को की सूची में देश का दूसरा शहर बना। इस परकोटे को जुलाई 2019 में यूनेस्को सूची में शामिल किया गया है।

जुलाई 2020 में स्वायत्त शासन व नगरीय विकास मंत्री शांति धारीवाल ने विश्व धरोहर बने इस शहर का औपचारिक प्रमाण पत्र यूनेस्को की महानिदेशक आंद्रे अजोले से जयपुर के अल्बर्ट हॉल में आयोजित एक समारोह में प्राप्त किया था। इस अवसर पर अजोले ने कहा था कि जयपुर के लोगों ने टिकाऊ और भविष्य के निर्माण के लिए सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के जो प्रयास किए हैं वह प्रशंसा के पात्र हैं और इसी कारण उन्हें अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने मान्यता दी है। उन्होंने यह भी कहा कि यह गर्व की बात है कि विरासत के संरक्षण को देखते हुए जयपुर परकोटा को विश्व विरासत सूची में अंकित किया है। उस दौरान पर्यटन मंत्री विश्वेन्द्र सिंह ने इसी बात पर यह विश्वास दिलाया था कि जयपुर दुनिया का सबसे श्रेष्ठ योजनाबद्ध शहरों में से एक है। कला साहित्य व संस्कृति के मंत्री बी.डी. कल्ला ने हर्ष के साथ कहा था कि प्रदेश के पर्यटन को इससे बढ़ावा मिलेगा।

क्या यह सब कोरी बातें थीं? केवल तात्कालीन भाषण मात्र थे या जोश था? क्या इस वक़्त यह अवैध निर्माण की गुंडागर्दी किसी अनहोनी की ओर इशारा नहीं कर रही?

उत्तर : (मंत्री जी हँसी में उड़ाते हुए)

यह नाना-मामा की हवेली हम देख लेंगे। हमारा पिंक सिटी बचाओ अभियान इस पर काम करेगा। बाक़ी कोई अवैध कार्य नहीं हो रहा अभी कहीं भी।

प्रश्न : सर मेरे पास इन निर्माणों का लाइव वीडियो है और दस्तावेज हैं। आपका आदेश हो तो आगे आकर दिखा सकती हूँ।

उत्तर : हम देख लेंगे अगर ऐसा कुछ है तो कार्यवाही की जाएगी।

प्रश्न : सर यूनेस्को की सूची से बाहर होने के हालात बन रहे हैं? यह सूची आपके कर कमलों में ही पूरे विश्वास के साथ सौंपी गई थी कि इस विरासत का आगामी संरक्षण आपके हाथ में है, उस बारे में आप क्या कहेंगे?

उत्तर : (मंत्री जी बात को समाप्त करते हुए उठ गए) कि ऐसा कुछ नहीं है!

इसके बाद क्षण भर सन्नाटा छाया रहा और सभा समाप्त कर दी गयी। परकोटे का मुद्दा उनकी खाली कुर्सी और टेबल को ताकता रह गया।

ख़बर-बेख़बर

नगर निगम हैरिटेज बना कूड़ादान

शहर में सफाई अभियान से पहले अपने निगम में नज़र दौड़ाएं मेयर साहिबा!

महत्वपूर्ण सरकारी दस्तावेज़ों के पुलिंदे, आवश्यक रिकॉर्ड और कर्मचारी रिकॉर्ड हवामहल-आमेर जोन हैरिटेज, चौगान स्टेडियम के पास, गणगौरी बाज़ार, जयपुर की छत पर खुले आसमान में, गैलरी में और ऑफिस परिसर में कूड़े में तब्दील होकर सड़ रहे हैं और इनकी सिरमौर मेयर मुनेश गुर्जर शहर सफाई अभियान में फोटो खिंचा रहीं हैं।

नगर निगम हैरिटेज जयपुर लगातार अपनी कमजोर कार्यशैली और व्यवहार के कारण चर्चा में आ रहा है। सामाजिक कार्यों व अभियानों में स्वयं का फोटो सेशन करवाना मेयर मुनेश गुर्जर का पसंदीदा कार्य लगता है। जहाँ ये घण्टों शहर में हो रहे मनोरंजक कार्यक्रम देखने में बिता देती हैं। वहीं दूसरी ओर निगम में मात्र एक या डेढ़ घण्टा गुज़ारती हैं। आम जनता से रूबरू होने का इनके पास वक़्त नहीं।

ख़बर है कि बीवीजी कंपनी से अनुबंध ख़त्म करने के बाद गत शनिवार को हैरिटेज निगम ने अपने ही संसाधनों से शहर में सफाई का अभियान छेड़ा। गली-गली जाकर लोगों से सफाई रखने की समझाइश भी की। इसी धुन में 23 से 29 दिसम्बर तक जलमहल सफाई अभियान भी चल रहा है जिसमें स्लोगन 'ऐसे न जाओ छोड़कर' है। यह स्लोगन तो मेयर मुनेश गुर्जर जी की कार्यशैली पर लागू होता है।

सबसे हास्यप्रद बात यह है कि हैरिटेज मेयर साहिबा आसपास के लोगों से सड़क पर कचरा ना डालने की अपील भी कर रही हैं। सफाई पर लेक्चर दे रहीं हैं और ये ख़ुद अपने कार्य स्थलों के हालात से बेख़बर हैं। अपने ही हैरिटेज निगमों हवामहल आमेर जोन, किशनपोल जोन यहां तक कि सभी जोन के यही हालात हैं कि महत्वपूर्ण सरकारी दस्तावेज़ कचरे में तब्दील होकर छतों पर सड़ रहे हैं। परिसर में फैले उन महत्वपूर्ण सरकारी दस्तावेज़ों की बेकद्री हो रही है। हजारों फाइलें, रिकॉर्ड रद्दी में तब्दील हो गए हैं।

'घर का पूत कुँवारा डोले पाड़ौसियां के फेरे डाले'

शहर में सफाई की नसीहतें बाँटने से पहले ज़रा अपने निगम (सभी जोन्स) में नज़रें तो दौड़ा लेतीं मेयर मेडम.....????

श्रीमती उर्मिला जैन 'भाया' को बाराँ जिला प्रमुख बनने पर हिलव्यू समाचार परिवार हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ प्रेषित करता है।

पत्रकारों की विभिन्न सुविधाओं एवं समस्याओं के निराकरण के लिए राज्य स्तरीय एवं विभाग स्तरीय समितियों का गठन

हिलव्यू समाचार

जयपुर। राज्य सरकार ने आदेश जारी कर राज्य के पत्रकारों की विभिन्न सुविधाओं एवं समस्याओं के निराकरण के लिए राज्य स्तरीय एवं विभाग स्तरीय समितियों का गठन किया है। इन समितियों में राज्य में पत्रकारों की आवासीय समस्याओं के निराकरण के लिए प्रमुख शासन सचिव, नगरीय विकास एवं आवासन विभाग की अध्यक्षता में एक राज्य स्तरीय समिति गठित की है। समिति में 21 सदस्यों सहित सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के निदेशक सदस्य सचिव होंगे।

पत्रकार कल्याण से सम्बन्धित विभिन्न नियमों, सुविधाओं एवं समस्याओं आदि की समीक्षा के लिए सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के प्रमुख शासन सचिव की अध्यक्षता में 7 सदस्यों की विभागीय समिति गठित की गई है। समिति के सदस्य सचिव सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के निदेशक होंगे।

इसी प्रकार राजस्थान विज्ञापन नियम -2001 के नियम 15 के तहत समाचार पत्रों के वर्गीकरण के लिए राज्य वर्गीकरण सलाहकार समिति का पुनर्गठन दो वर्ष की अवधि के लिए किया गया है। सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के निदेशक इसके अध्यक्ष होंगे तथा अतिरिक्त निदेशक सदस्य सचिव होंगे। समिति में 12 सदस्य होंगे।

विभिन्न पत्रकार एवं सामाचार पत्र संघों और संगठनों की समस्याओं तथा सुविधाओं और अन्य मांगों के लिए राज्य सरकार को समय-समय पर प्रस्तुत ज्ञापनों पर विचार कर अनुशंषा प्रस्तुत करने के लिए पत्रकार समस्या समाधान समिति का पुनर्गठन किया गया है। इस समिति में सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के राज्य मंत्री की अध्यक्षता में 34 सदस्य होंगे। सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के निदेशक समिति के सदस्य सचिव होंगे।

राजस्थान प्रेस प्रतिनिधि अधिस्वीकरण नियम, 1995 के नियम -3 के अन्तर्गत समाचार पत्रों, समाचार समितियों एवं इलैक्ट्रोनिक मीडिया के प्रतिनिधियों तथा स्वतंत्र पत्रकारों के अधिस्वीकरण के विषय में राज्य सरकार को परामर्श देने के लिए राज्य प्रेस अधिस्वीकरण समिति का पुनर्गठन भी दो वर्ष की अवधि के लिए किया गया है। समिति के अध्यक्ष सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के निदेशक होंगे तथा अतिरिक्त निदेशक समिति के सदस्य सचिव होंगे। समिति में 9 सदस्य होंगे।

राजस्थान पत्रकार और सहित्यकार कल्याण कोष नियम, 2001 के नियम 6 के अतर्गत राजस्थान पत्रकार और सहित्यकार कल्याण कोष के संचालन के लिए वॉइस प्रबंध समिति का पुनर्गठन दो वर्ष की अवधि के लिए किया गया है। इस समिति के अध्यक्ष सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के राज्य मंत्री होंगे। समिति में 11 सदस्य और सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के निदेशक सदस्य सचिव होंगे।

आवासीय क्षेत्र में भी अवैध निर्माण जारी....

राजापार्क, जवाहर नगर, आदर्श नगर आवासीय क्षेत्रों में अवैध निर्माणों की बाढ़!

नगर निगम ग्रेटर व नगर निगम हैरिटेज में आने वाले इन क्षेत्रों में अचानक अवैध निर्माण बढ़ गए हैं। जैसे 'मुद्दई सुस्त तो गधे चुस्त' वाली कहावत यहाँ चरितार्थ हो रही है।

बिल्डरों, नगर निगम जोन,जोन उपायुक्तों व पार्षदों की मिलिभगत या गैर-ज़िम्मेदाराना नज़रिए व व्यवहार से इन रिहायशी इलाकों में लगातार अब कंक्रीट का जंगल पनप रहा है।

क्षेत्र में रहने वाले नागरिक इन अवैध निर्माणों की अवैध गतिविधियों से लगातार परेशान हैं। ट्रेफिक जाम व प्रदूषण से जीना दुर्भर हो गया है।

दोनों निगमों की यह लापरवाही लगातार शहर की खूबसूरती व सूकून पर ग्रहण का काम कर रही है।

संपादकीय

निरंकुश होते चीन को चुनौती: विंटर ओलिंपिक का बहिष्कार कितना साबित होगा मददगार

दुनिया भर में इन दिनों शीत युद्ध वाली भावनाओं का ज्वार तेजी से बढ़ रहा है। इसका ही प्रमाण है कि यह साल अमेरिका और चीन के बीच और तकरार बढ़ने के रूप में भी याद किया जाएगा। इसकी छाया फरवरी में चीन में आयोजित होने वाले विंटर ओलिंपिक पर भी पड़ती दिख रही है। हाल में बाइडन प्रशासन ने एलान किया कि चीन के लचर मानवाधिकार रिकार्ड को देखते हुए अमेरिका वहां अपने राजनयिक नहीं भेजेगा। हालांकि अमेरिका की मंशा खेलों के बहिष्कार की नहीं है, क्योंकि इससे उन खिलाड़ियों को निराशा होगी, जो अर्से से तैयारी में लगे हैं। फिर भी अमेरिका ने यह संदेश तो दे ही दिया कि शिनजियांग में मानवाधिकारों के घोर उल्लंघन को देखते हुए सब कुछ सामान्य ढें पर नहीं चल सकता। यह 1979 में सोवियत संघ द्वारा अफगानिस्तान में घुसने के विरोध में मास्को (1980) ओलिंपिक के अमेरिकी बहिष्कार जैसा नहीं है, फिर भी बाइडन प्रशासन द्वारा विंटर ओलिंपिक का कूटनीतिक बहिष्कार अमेरिका-चीन के बीच पहले से ही बढ़ रहे मतभेदों की खाई को और गहरा करने का काम करेगा। शिनजियांग से लेकर हांगकांग और दक्षिण चीन सागर से लेकर हिमालयी सीमाओं तक चीन अपनी परिधि में उन तौर-तरीकों से पश्चिमी और अन्य देशों को चुनौती दे रहा है, जिसने गंभीर टकरावों को जन्म दिया है। आज वाशिंगटन को चीन एक रणनीतिक प्रतिस्पर्धी दिख रहा है। ऐसा प्रतिस्पर्धी जिसके साथ ताल मिलाने की संभावनाएं दिन-प्रतिदिन कमजोर पड़ती जा रही हैं।

भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में सबसे नया मोर्चा खेलों का जुड़ गया है। चीनी टेनिस खिलाड़ी पेंग शुई ने कुछ समय पहले चीनी सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी पर यौन

शोषण का आरोप लगाया था। इसके बाद वह गायब हो गई। इस मामले ने पूरी दुनिया को चिंता में डाल दिया। इसका ही परिणाम था कि चीन जैसे अपने भीमकाय बाजार की परवाह न करते हुए महिला टेनिस संघ यानी डब्ल्यूटीए ने बहुत ही साहसिक फैसला लेते हुए पेंग शुई के मसले पर चीन में प्रस्तावित सभी टूर्नामेंट रद्द कर दिए। हालांकि बाद में पेंग शुई इससे मुकर गईं कि उन्होंने किसी पर यौन शोषण के आरोप लगाए थे। फिर भी उन्हें लेकर डब्ल्यूटीए ने जो कदम उठाया, उसकी अंतरराष्ट्रीय ओलिंपिक संघ (आइओसी) के रुख से तुलना करें तो निराशा होती है। आइओसी चीन के साथ असहज मुद्दों को उठाने में हिचकता है, जो दर्शाता है कि राजनीतिक मुद्दों पर वह 'बेपरवाह' रवैया अपनाता है।

हालिया अमेरिकी पहल की भर्त्सना करते हुए चीन ने उस पर 'खेल में राजनीतिक निरपेक्षता' के उल्लंघन का आरोप लगाकर इसके विरोध में कदम उठाने की धमकी दी। वहीं ब्रिटेन, कनाडा और आस्ट्रेलिया जैसे देश भी विंटर ओलिंपिक के कूटनीतिक बहिष्कार की अमेरिकी मुहिम में शामिल हो गए हैं तो चीन को रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन का मुखर समर्थन मिला है। पुतिन न केवल खेलों के उद्घाटन समारोह में शिरकत करेंगे, बल्कि इस दौरान चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग से उनकी बैठक भी होनी है। पुतिन के इस दांव के बाद शी ने भी नाटो से सुरक्षा की लिखित गारंटी संबंधी रूस की मांग का समर्थन किया है कि नाटो पूरब की ओर अपना विस्तार नहीं करे और यूक्रेन में हथियारों के जमावड़े से बचे। दरअसल रूस को इससे अपने लिए खतरे की आशंका है। यह देखना दिलचस्प है कि इटली और फ्रांस जैसे देश इस बहिष्कार के इच्छुक नहीं। फ्रांसीसी राष्ट्रपति मैक्रों ने इसे 'प्रतीकात्मक और निरर्थक' बताया है।

यूरोपीय संघ ने हमेशा की तरह चीन को सीधे-सीधे आड़े हाथों लेने में संकोच किया। जबकि जुलाई में ही यूरोपीय संसद ने संघ की सरकारों से आग्रह किया था कि जब तक चीनी सरकार हांगकांग, शिनजियांग उइगर क्षेत्र, तिब्बत, इनर मंगोलिया और चीन के अन्य हिस्सों में मानवाधिकार को लेकर अपना रवैया नहीं सुधारती, तब तक वे बीजिंग विंटर ओलिंपिक में भागीदारी के लिए सरकारी प्रतिनिधियों और राजनयिकों को मिले आमंत्रण न स्वीकार करें।

निःसंदेह अमेरिका का कदम विशुद्ध रूप से प्रतीकात्मक है। इससे खेलों की आभा फीकी पड़ने के कोई आसार नहीं। दुनिया के अधिकांश हिस्सों में इससे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। इसकी उम्मीद भी कम ही है कि खेलों में कुछ राजनयिकों की गैरमौजूदगी के कारण चीन अपनी नीतियों और व्यवहार में कुछ बदलाव लाएगा। हालांकि अमेरिका में इस मसले पर दुर्लभ सर्वदलीय समर्थन देखने को मिला है। इससे भी बढ़कर यह कि कुछ सांसदों को यह अपर्याप्त लगता है। उनके मुताबिक बाइडन प्रशासन को इन खेलों का पूर्ण बहिष्कार करना चाहिए था। जो भी हो, आगामी विंटर ओलिंपिक हालिया दौर के इतिहास के सबसे तल्ख खेल आयोजनों में से एक बनता दिख रहा है और 1936 के बर्लिन ओलिंपिक की प्रेत छाया इस विमर्श को निरंतर आकार देती है।

यह सही है कि शी चिनफिंग की अतिवादी नीतियों से विश्व के समक्ष जो चुनौतियां उत्पन्न हुई हैं, वे अभी वैसी नहीं जैसी हिटलर के समय थीं, परंतु शी की तिकड़मों के खिलाफ आवाज न उठाने के खतरे दिन-प्रतिदिन प्रत्यक्ष होते जा रहे हैं। यही कारण है कि विंटर ओलिंपिक के ऐसे बहिष्कार अभियान ने नागरिक समाजों और देशों के बीच समान रूप से प्रभाव उत्पन्न किया है। चीन खुद अपने राजनीतिक एजेंडे के लिए खेलों का इस्तेमाल करने में आगे रहा है। फिर चाहे उसके द्वारा 1956 में मेलबर्न ओलिंपिक का बहिष्कार करना हो या फिर आलोचकों को शांत करने के लिए अपने बड़े बाजार का डर दिखाकर निजी क्षेत्र पर दबाव बनना हो। अब यह स्पष्ट है कि शी चिनफिंग की आक्रामक विदेश नीति और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के क्रूर निरंकुश एजेंडे को चुनौती मिलना तय है। यद्यपि यह स्पष्ट नहीं कि इसमें ओलिंपिक का बहिष्कार कितना मददगार साबित हो पाएगा। चूंकि अंतरराष्ट्रीय पटल पर शी चिनफिंग की स्वीकार्यता लगातार घट रही है तो उनके पास इसकी काट का यही तरीका है कि वह घरेलू स्तर पर अपनी साख बढ़ाएं। इसमें वह बाहरी दुनिया के ख़िलाफ़ और कड़ा रवैया अपनाएंगे। अब इसमें संदेह नहीं कि महाशक्तियों के बीच तल्ख प्रतिस्पर्धा के दौर में खेल एक बार फिर जंग के मैदान के रूप में उभर रहे हैं, जहां प्रतिद्वंद्विता और ठोस आकार लेगी।

रणबीर कपूर ने खुलासा करते हुए बताया कि जब वो संजय लीला भंसाली की प्रोडक्शन कंपनी में काम करते थे तो भंसाली उन्हें काफी गाली देते थे और उन्हें मारते भी थे. उन्होंने कहा कि आज के निर्माता सिर्फ व्यावसायिक पहलू के पीछे भागते हैं, जब मैं असिस्टेंट के रूप में भंसाली के साथ काम करता था तब मैं घंटों-घंटों घुटनों पर बैठा रहता था. वो हमें मजबूत बनाने और दुनिया के सामने खड़े होने के लिए मारते थे और गालियां देते थे.

घंटों घुटनों पर बिठाया मजबूत बनाया

भंसाली को लेकर रणबीर का खुलासा

जाग रहा ताकतवर हथियार

रणबीर कपूर की फिल्म ब्रम्हास्त्र पार्ट-1 'शिवा' का पहला मोशन पोस्टर रिलीज कर दिया गया है. इसमें रणबीर के किरदार शिवा के लुक और ब्रह्मांड के सबसे बड़े हथियार ब्रम्हास्त्र की झलक दिखाई गई है. फिल्म में उनके अलावा आलिया भट्ट, अमिताभ बच्चन, मौनी रॉय और नागार्जुन अक्कीनेनी मुख्य किरदारों में हैं. ब्रम्हास्त्र एक फैंटेसी-एडवेंचर फिल्म है और यह निर्देशक अयान मुखर्जी का ब्रेन-चाइल्ड है. मोशन पोस्टर में रणबीर और आलिया के किरदारों की आवाजों के जरिए पता चलता है कि दुनिया में कोई बड़ा फेरबदल हो रहा है और एक बेहद ताकतवर हथियार जाग रहा है. मोशन पोस्टर के अंत में रणबीर को भगवान शिव के त्रिशूल जैसा ब्रम्हास्त्र थामे हुए दिखाया जाता है. फिल्म 3डी फॉर्मेट में हिंदी के अलावा तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ भाषाओं में भी रिलीज की जाएगी. फिल्म के पोस्टर हिंदी और अंग्रेजी में जारी किए गए हैं.

शादी के सवाल पर शरमाईं आलिया

हाल ही में एक फैन ने रणबीर से सवाल करते हुए कहा कि आप आलिया या फिर किसी और से कब शादी कर रहे हैं? रणबीर ने जवाब देते हुए कहा, पिछले साल और इस साल कई लोगों ने शादी की है और कर रहे हैं. मुझे लगता है कि हमें इस बात से खुश होना चाहिए. इसके बाद रणबीर ने खुद ही आलिया से पूछ डाला, हमारी शादी कब होगी? इस पर आलिया ने शरमाते हुए जवाब दिया, 'तुम ये मुझसे क्यों पूछ रहे हो?'

फिल्ममेकर्स पर भड़की एक्ट्रेस

स्टार किड्स को मौका आउटर्स को धोखा

अभिनेत्री आहना कुमरा उन अभिनेत्रियों में से एक हैं जिनका परिवार फिल्मी दुनिया से बिल्कुल भी संबंध नहीं रखता है. ऐसे में उनको बॉलीवुड में बहुत बार नेपोटिज्म का सामना करना पड़ा है. उनका मानना है कि बहुत बार फिल्ममेकर्स बाहर से आए कलाकारों का मौका स्टार किड्स को दे देते हैं. इतना काम करने के बाद भी लोग मुझसे यह उम्मीद करते हैं कि अब भी ऑडिशन दूं, लेकिन उसी रोल के लिए वह किसी स्टारकिड से ऑडिशन देने के लिए नहीं कहते हैं. आहना ने कहा कि मुझे ऑडिशन देना पसंद है क्योंकि यह एक फेयर प्रॉसेस है, लेकिन यहां तो ऑडिशन के लिए आपको बुलाया तो जाता है लेकिन कास्ट किसी स्टारकिड को कर लिया जाता है. मुझे समझ नहीं आता कि जब आपको स्टारकिड को ही लेना है तो ऑडिशन क्यों ले रहे हैं भला? उन्होंने कहा कि बाहरी कलाकारों को भ्रम में रखा जाता है और बाद में उनको काम देने के नाम पर छला जाता है.

अनन्या पांडे ने ऐसी तस्वीर शेयर कर दी है जिसके चलते उन्हें लोगों की ट्रोलिंग का शिकार होना पड़ा है. उनकी ये तस्वीर देखकर फैंस को उनका फैशन सेंस कुछ समझ नहीं आ रहा. उन्होंने हाल ही में एक फोटोशूट करवाया है. जिसमें वो मल्टी स्ट्राइप वाले स्वेटर को पहने हुए नजर आ रही हैं. जिसकी हॉफ स्लीव के साथ नेट जोड़ी गई है.

अनन्या से लोगों ने कहा-

आपके घर में चूहे हैं क्या ?

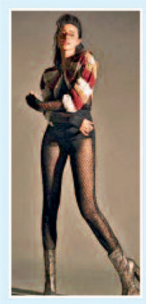

उनकी इस ड्रेस को देखकर सबकी नजरें उन्हीं पर अटक गई हैं क्योंकि उन्होंने पुलोवर के साथ जो मैचिंग पैंट पहनी है, वो जालीदार है जिसमें उनके पैर साफ नजर आ रहे हैं. कुछ फैंस को अनन्या का ये अवतार बेहद पसंद आ रहा है. उन्होंने सोशल मीडिया का सहारा लेते हुए 'स्टनिंग' और 'wow' जैसे कमेंट्स किए हैं. वहीं कुछ फैंस ने उनको ट्रोल करते हुए कह दिया कि 'आपके घर पर चूहे बहुत हैं क्या?' एक यूजर ने लिखा - कभी-कभी आप बिना सोचे-समझे ऐसी ड्रेस पहन लेती हैं.

रणवीर-दीपिका की हरकत देख

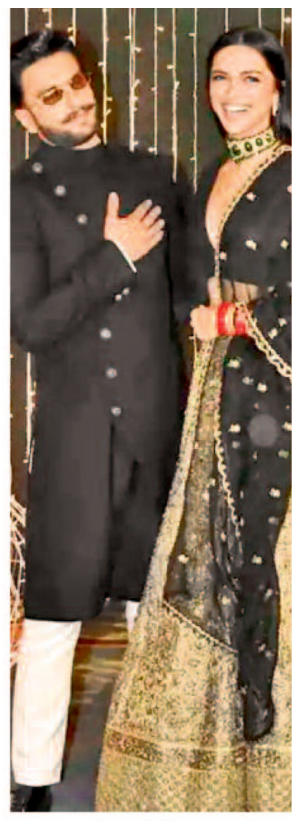

'वन्स मोर' चिल्लाने लगे लोग

हाल ही में रणवीर सिंह ने सभी के सामने अपनी पत्नी दीपिका पादुकोण को सरेआम किस कर लिया. सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे वीडियो में पैपराजी के सामने पोज देते हुए रणवीर दीपिका को ये कहते सुनाई देते हैं, 'प्रोड्यूसर है मेरी.' इतना कहकर वह, दीपिका को किस कर लेते हैं. इसके बाद पैपराजी 'वन्स मोर, वन्स मोर' चिल्लाने लगते हैं. वहीं, दीपिका उनकी बात सुनकर कहती हैं, 'अरे!' और दोनों मुस्कुराते हुए आगे बढ़ जाते हैं. कपल के इस वीडियो पर लोग तरह-तरह के कमेंट्स कर रहे हैं. जहां कुछ लोगों ने उन्हें क्यूट कहा है और हार्ट वाला इमोजी शेयर किया है, वहीं कई लोग ऐसे भी हैं, जिन्होंने रणवीर को इस हरकत के लिए फटकार लगाई है. दोनों जल्द ही अपनी अपकमिंग फिल्म '83' में साथ नजर आने वाले हैं. यह फिल्म 1983 के वर्ल्ड कप में भारतीय टीम की ऐतिहासिक जीत और उसमें कपिल देव के योगदान पर आधारित है.

सुपरकॉप जॉन

जॉन अब्राहम अभिनीत फिल्म अटैक का टीजर जारी कर दिया गया है और यह एक सुपरकॉप के एक्शन से भरपूर फिल्म है, जिसका एकमात्र फोकस भारतीय धरती को आतंकवादी खतरों से दूर करना है.

टीजर में चारों तरफ धुआं, भागते-चिल्लाते लोग और बीच में घुटनों पर बैठे जॉन को रोता हुआ दिखाया गया है. वहीं इसमें जैकलीन फर्नांडीज और रकुलप्रीत की भी झलक दिखाई गई है. यह फिल्म एक एक्शन ओरिएंटेड वेंचर है.

पुलिस अधिकारी तापसी

एक्ट्रेस तापसी पन्नू अपनी आगामी फिल्म 'वो लड़की है कहां' को लेकर उत्साहित हैं. अभिनेत्री ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम पर फिल्म के सेट की एक तस्वीर शेयर की है. फोटो में वह गन जैकेट पहने हुए वॉक करती दिख रही हैं. इस कॉमेडी ड्रामा फिल्म में अभिनेत्री एक पुलिस अधिकारी एसीपी कोमल शर्मा के किरदार में नजर आने वाली हैं. फिल्म में उनके साथ अभिनेता प्रतीक गांधी हैं.

धड़ाम से गिरी एक्ट्रेस

एक्ट्रेस अदा शर्मा ने हाल ही में सोशल मीडिया पर एक वीडियो शेयर किया है, जिसमें वो एक करतब करती हुई नजर आ रही हैं और इस दौरान वो धड़ाम से गिर जाती हैं.

उन्होंने हाल ही में इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर किया है, जिसमें वो चांद जैसे आकार के ऊपर बैठी हुई हैं और कुछ करतब करती नजर आ रही हैं, इसी दौरान उनका बैलेंस बिगड़ता है और वो जमीन पर आकर गिर जाती हैं. हालांकि, एक्ट्रेस ने गिरने के बाद अपना ही मजाक बना लिया है. उन्होंने लिखा कि उस इंसान को टैग करो जो प्यार में इस तरह गिर रहा हो. प्यार में गिरते वक्त का यह मेरा असली वीडियो है. वह 'कमांडो 2', 'कमांडो 3' और 'बाईपास रोड' जैसी फिल्मों में नजर आई हैं.

TV मैजिक

रिश्ते को जिंदा रखती है जलन

शो 'बड़े अच्छे लगते हैं 2' में प्रिया की भूमिका निभाने वाली दिशा परमार ने कहा कि शो में राम और प्रिया की प्रेम कहानी का उतार-चढ़ाव भरा सफर है. कहानी में राम अपनी एक्स गर्लफ्रेंड वेदिका की तरफ आकर्षित होता है, जिसके कारण प्रिया को थोड़ी जलन होती है. दिशा परमार ने कहा कि किसी रिश्ते को जीवित रखने के लिए हल्की जलन होना जरूरी है. ये दर्द भरे एहसास हैं और अपने प्यार को दिखाने का तरीका है. प्रिया की जलन अच्छी है, जरूरी है, उसकी जलन की भावना उसे सही रास्ते पर ले जाएगी, ताकि वह राम के प्यार में डूब सके.

Gadgets जोन

गैलेक्सी टैब A8

सैमसंग ने अपने लेटेस्ट टैब गैलेक्सी टैब A8 लांच किया है. टैब 10.5-inch* 1920x1200 (WUXGA) TFT डिस्प्ले को सपोर्ट करता है और एंड्रॉइड 11 ओएस पर काम करता है. इसमें 8 मेगापिक्सल का रियर कैमरा और 5 मेगापिक्सल का सेल्फी कैमरा है. 2GHz ऑक्टा-कोर प्रोसेसर पर काम करेगा व 7040 mAh बैटरी मिलेगी, जो 15W फास्ट चार्जिंग सपोर्ट के साथ आएगी. कनेक्टिविटी के लिए टैब में LTE, Wi-Fi 5 (802.11 a/b/g/n/ac), Wi-Fi Direct, Bluetooth v5.0 की सुविधा मिलेगी. इसमें Type C USB 2.0, 3.5mm ऑडियो जैक भी मिलेगा. सेंसर के तौर पर टैब में एक्सीलेरोमीटर, कंपास, जायरो, लाइट और हॉल सेंसर मिलेंगे.

ईएसआईसी ने इंश्योरेंस मेडिकल ऑफिसर के पदों पर निकाली वैकेंसी

नियुक्ति वार्ता

कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआईसी) ने इंश्योरेंस मेडिकल ऑफिसर के पदों पर 1120 वैकेंसी निकाली हैं. ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया 31 दिसंबर 2021 से शुरू होगी. आवेदन की अंतिम तिथि 31 जनवरी 2022 तय की गई है. इच्छुक उम्मीदवार esic.nic.in पर जाकर आवेदन कर सकेंगे. योग्यता एमबीबीएस की डिग्री होनी चाहिए एवं रोटेटिंग इंटर्नशिप पूरी हो चुकी हो. अगर इंटर्नशिप पूरी नहीं हुई है तो अभ्यर्थी परीक्षा में बैठ सकता है लेकिन नियुक्ति से पहले उसे इंटर्नशिप पूरी करनी होगी.

JIPMER

जवाहर इंस्टीट्यूट ऑफ पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च (JIPMER), पुडुचेरी ने ग्रुप-बी और ग्रुप-सी के पदों पर भर्ती के लिए योग्य व इच्छुक अभ्यर्थियों से आवेदन आमंत्रित किए हैं. जिपमेर की इस भर्ती के तहत मेडिकल लेबोरेटरी टेक्नोलॉजिस्ट और जूनियर प्रशासनिक सहायक के पदों नियुक्तियां की जानी हैं. इच्छुक अभ्यर्थी ऑफिशियल वेबसाइट jipmer.edu.in पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं. आवेदन की लास्ट डेट 05 जनवरी 2022 है.

AU 0101

AU SMALL FINANCE BANK
A SCHEDULED COMMERCIAL BANK

AU Bank पूछता है बैंकिंग की हर प्रथा से सिर्फ एक सवाल,
ऐसा क्यों? बैंकिंग में बदलाव की शुरुआत अब से है।

बदलाव हम से है

7*% p.a.

लोन पर इंटरेस्ट जाता है हर महीने पर सिवंग्स अकाउंट में आता है तीन महीने में एक बार। ऐसा क्यों?

7*% इंटरेस्ट p.a. जो मिलता है हर महीने

बैंक से काम मतलब बैंक के चक्कर। ऐसा क्यों?

वीडियो बैंकिंग कहीं से भी

सभी सर्विसेज़ सिर्फ होम ब्रांच में ही मिलती है। ऐसा क्यों?

हर ब्रांच में होम ब्रांच जैसी सर्विस

क्रेडिट कार्ड सबको नहीं मिलते। ऐसा क्यों?

अब सबके लिए एक खास क्रेडिट कार्ड

कैश डिपॉजिट के लिए भरनी पड़ेगी स्लिप। ऐसा क्यों?

नहीं भरनी पड़ेगी स्लिप, आपको मिलेगी डिपॉजिट रिसीट

UPI QR सिर्फ पेमेंट्स के लिए। ऐसा क्यों?

आपका अपना UPI QR कोड खास बिजनेस बेनिफिट्स के साथ

badlaavhumsehai

भारत का** सबसे बड़ा स्मॉल फाइनैंस बैंक

AU 0101

डाउनलोड करें

डाउनलोड करने के लिए स्कैन करें

DEPOSITS UP TO ₹5 LAKHS INSURED THROUGH ***DICGC

25+ वर्षों का भरोसा | 750+ टचपॉइंट्स | 440+ ATMs | 15 राज्य और 2 UTs में सर्विसेज उपलब्ध | www.aubank.in

सिवंग्स अकाउंट | करंट अकाउंट | फिक्स्ड डिपॉजिट | लॉकर | क्रेडिट कार्ड | लोन्स | बिजनेस बैंकिंग | इंश्योरेंस और इंवेस्टमेंट्स

विज्ञापित प्रोडक्ट और सेवाएं AU Small Finance Bank ('AU Bank') के मानक नियमों और शर्तों के अधीन हैं। यह विज्ञापन AU Bank का कोई प्रोडक्ट या सेवा लेने के लिए आमंत्रण नहीं है और इससे कोई अधिकार या दायित्व नहीं बनता है। पाठक अपनी समझ से प्रोडक्ट और सेवाएं लें। विभिन्न खातों, ऋणों और क्रेडिट कार्ड्स की ब्याज दरें और योग्यता की शर्तें बदल सकती हैं और ये प्रोडक्ट/सेवाएं केवल बैंक के नियमों के हिसाब से दी जाती हैं। *नियम व शर्तें लागू। चुनिंदा स्लैब के लिए लागू, नवीनतम दरों के लिए www.aubank.in पर जाएं। एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक के विवेकाधिकार पर दरें परिवर्तन के अधीन हैं। **डिपाजिट और एसेट्स के आधार पर। ***DICGC के अंतर्गत बचत खता, फिक्स्ड, चालू, रेकरिंग आदि सभी डिपाजिट (जमा) आते है। बैंक के प्रत्येक डिपाजिटर को उसके अधिकार और जमा राशि के अनुसार मूलधन और ब्याज दोनों राशियों के लिए ₹5,00,000 (पांच लाख रुपयों) तक का बीमा दिया जाता है। अधिक जानकारी के लिए https://www.aubank.in/dicgc पर जाएं।

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

04

जयपुर ≫ मंगलवार, 28 दिसम्बर, 2021

ख़ुशी महक है

प्रेरणा

महेंद्र बैराणी सरकार
समाजसेवी, छबड़ा बाराँ

ख़ुशी वो इत्र है जो हम दूसरों पर छिड़कते हैं तो उसकी कुछ बूँदें हम पर भी गिरकर हमें महका देती हैं।

जीवन में बाँटने जैसा कुछ है तो प्रेम है, ख़ुशियां हैं। हमेशा रात को सोने से पहले इस बात का मूल्यांकन होना चाहिए कि कहीं आज हमारे द्वारा किसी का दिल तो नहीं दुखा..? कहीं आज मन से, वचन से और कर्म से हमारे द्वारा कोई ऐसा कर्म तो सम्पन्न नहीं हुआ जिससे किसी के भी हृदय को आघात पहुँचा हो ?

जो लोग दूसरों की ख़ुशियों का ध्यान रखते हैं, उनकी ख़ुशियों का ध्यान स्वयं प्रकृति रखा करती है। ये बात भी याद रखी जानी चाहिए कि बाँटी हुई वस्तु ही लौटकर हमारे पास आती है, अब ये हम पर निर्भर करता है कि हमने बाँटा क्या था, ख़ुशियाँ या और कुछ...?

ख़ुश रखना और ख़ुश रहना ये जीवन की दो महत्वपूर्ण कलाएं हैं। जिसे पहली कला आ जाती है उसकी दूसरी कला स्वयं परिपूर्ण हो जाती है। जो लोग अपने से ज्यादा दूसरों की ख़ुशियों का ध्यान

रखते हैं, वही लोग प्रकृति दृष्टि में सबसे बड़े पुरुस्कार योग्य भी बन जाते हैं।

एक बात और ख़ुशियाँ एक चमत्कारिक इत्र हैं। छिड़कते हम दूसरों के ऊपर हैं और महकता स्वयं का जीवन है। जितना जितना हम दूसरों के ऊपर छिड़कते जाते हैं, उसी अनुपात में हमारा स्वयं का जीवन भी महकने लगता है।

मनुष्य हो तो ख़ुशियाँ बाँटना सीखो! ताकि स्वयं भी खुश रह सको।

मानवता पानी-पानी है

कपिल देव कल्याणी
पूर्णिया बिहार

यह दुनिया कितनी खोटी है ।
फिर आज गई वह लूटी है ।।
वह उसी गांव की बेटी है।
पर जाति उसकी छोटी है ।।
जिस गांव का वह बेटा है।
भाई औ बहन का नाता है ।।
क्यों उसे काम ने घेर लिया?
हो गया बेशरम वह बेहया ।।
उसने जो भी किया सो किया।
संगी ने भी अति जुल्म किया।।
फिर प्रशासन तक तथ्य गया।
धनुरासन उसने करा दिया ।।
आका ने कैसा फुसलाया?
पुलिसवाला भी मुस्काया।।
सबने मिलकर पासा फेंका
हथिया भी लिया चौका-छक्का।।
मेडिकल ने जो बयान लिया ।
वो एफआइआर ने बदल दिया।।
फिर जीभ काटकर फेंक दिया।
हे राम! नृशंस अपराध किया।।
अपराध घोर पर घोर किया।
फिर आग फूंक कर जला दिया।।
यह कैसी रची कहानी है ।
हुई मूक तंत्र की वाणी है ।।
बनी दानवता मस्तानी है।
हुई मानवता पानी-पानी है।।

अलविदा 2021

साल कैसे गुज़रा
ये पता नहीं।
दुश्वारियां, हैरानियाँ
बदहवासी, बीमारियाँ
मंहगाइयाँ, रुसवाईयाँ
बिछड़नें, रुलाइयाँ।
दौड़ते- भागते लोग
परेशान लोग।
रोटी बँटती रहीं
फिर भी पथराई आँखें
बेजान लोग।
साल कैसे गुज़रा ये पता ही नहीं।
उम्मीद की थी
कि सुकून होगा
साल 2021 में।
लेकिन वह भी
नहीं लाया राहत
धरी रह गयी
सुकून की चाहत।
सुना है
अब चल पड़ी है ज़िन्दगी।
डरे-डरे
घबराये- से लोग
सहमे - सहमे
पथराए- से लोग।
दौड़ पड़ी है
मुल्क की अर्थव्यवस्था
लेकिन चरामरा गयी
घर की व्यवस्था।
बेशक देश बढ़ रहा है
आम आदमी जैसे
ठहर- सा गया है।
हिम्मत नहीं कि
पीछे मुड़ कर देखें।
दिखते हैं अब भी
वही अपनों के चेहरे
जो अकाल ही हो गये
कालग्रस्त।

साकार फ़लक
जयपुर

लघुकथा

शुरुआत

थाने में मुखिया जी के ख़िलाफ़ बिजली चोरी का मामला दर्ज होते ही पूरे गाँव में सनसनी फैल गयी। इसके साथ ही लोगों के बीच चर्चाओं का बाजार गर्म हो गया। लोग तरह-तरह की बात करने लगे। जितने मुँह उतनी बातें। कुछ लोग तो दबी ज़ुबान से उसकी भर्त्सना करने से भी बाज नहीं आ रहे थे। कह रहे थे : --'जब मुखिया जी खुद ही बिजली की चोरी करेंगे तो बाकी गाँव वाले क्यों न करेंगे? फिर उनसे अच्छे काम की आशा भी कैसे कर सकते हैं?' इसके साथ ही उनके जेहन में यह सवाल भी तेजी से कुलबुला रहे थे कि ऐसे दबंग मुखिया के विरुद्ध बिजली बोर्ड में शिकायत कराने का दुस्साहस किसने किया होगा?

सच्चाई ज़्यादा दिन तक छुप नहीं सकी। जल्द ही पता चल गया। मुखिया जी के ख़िलाफ़ शिकायत करने वाला कोई और नहीं, उसका बेटा बिट्टू ही था। उसकी ही शिकायत पर ही थाने में मामला दर्ज कराया किया,जिसके लिए उन्हें कोर्ट से जमानत लेनी पड़ी।

इसका पता लगते ही मुखिया मूलचंद पंडित का पारा सातवें आसमान पर जा पहुँचा। गुस्से से वे तमतमा उठे। बिट्टू पर नजर पर पड़ते ही वे पिल पड़े। चीखते हुए बोलेः-अरे बिट्टवा! तू पगला क्या है रे! तू अपने बाप के ही ख़िलाफ़ केस करेगा! कौन तेरा कान फूँक रहा है, जिसकी बातों में आकर तू मेरा दुश्मन बना बैठा है! गुस्से से वे हाँफने लगे थे। हाँफते हुए बोले- जानते हो। इसके कारण मुझे जमानत के लिए कोर्ट तक का चक्कर लगाना पड़ गया। समाज में किरकिरी जो हुई सो अलग। किसी के सामने मुझे मुँह दिखाने लायक नहीं छोड़ा। आख़िर क्यों किया यह सब? क्या मिला इससे तुझे? इसके साथ ही उन्होंने बिट्टू के चेहरे पर पूरी नजर गढ़ा दी। अब भी उनकी आँखें गुस्से से दहक रही थी। मगर इसकी परवाह किये बगैर बिट्टू शांत लहजे में बोला-जानता हूँ पिताजी! मगर यह तो शुरुआत है। एक चेतावनी है। उन लोगों के लिए जो गैर क़ानूनी कारगुजारी में लिप्त है।

तो क्या! इसकी शुरुआत अपने ही बाप से करेगा? क्या सबसे बड़ा चोर मैं ही हूँ! गाँव में और भी तो बहुत से लोग चोरी-छुपे बिजली जला रहे हैं। फिर मेरी ही शिकायत क्यों? मुखिया जी ने आँखें तरेरते हुए उसे लताड़ा।

वह इसलिए कि आप गाँव के मुखिया है। आपके ख़िलाफ़ मामला दर्ज होने के बाद अन्य लोग खुद ही चेत जायेंगे। वे समझ जायेंगे कि चोरी करने पर जब मुखिया जी के ख़िलाफ़ मामला दर्ज हो सकता है तो आम लोग भला कैसे बच पायेंगे। यही सोचकर आप से ही इसकी शुरुआत की,ताकि औरों को सबक मिले। मुखिया से कुछ कहते नहीं बना। वे अवाक् थे।

अभय कुमार भारती
भागलपुर

मित्रों!

अंजनी कुमार शर्मा

रातों पहर जो किया करता है रमण मित्रों
वो तितलियों को सिखाता है व्याकरण मित्रों
अपने दिलों में सर्वप्रथम झांककर तो देखो
क्या यह नहीं लग रहा है अतिक्रमण मित्रों
आरोप गढ़ना सबकी अब बन गई आदत
कोई नहीं देखता अपना भी आचरण मित्रों
छोटे बड़ों का किया करते हैं अनादर अब
दिल को नहीं अब सुहाता तनिक यह क्षण मित्रों
अब अंजनी साफ उलट गई है दुनिया यहाँ
क्या स्वच्छ अब हो सकेगा पर्यावरण मित्रों

सोशल डिस्टेंसिंग या मानव मन में दूरी

रंजना फतेपुरकर
इंदौर

काजल सुबह सुबह अख़बार पर नज़र डाल रही थी कि आज कितने लोगों को कोरोना ने अपना शिकार बनाया। स्थिति भयावह थी। उसने मन ही मन निश्चय किया कि घर के दरवाजे बंद कर अंदर पूर्णतः सुरक्षित रहेंगे और जिस घर में कोरोना मरीज है वहां तो नज़र उठाकर भी नहीं देखेंगे, कहीं कोरोना की कुदृष्टि उनके घर पर भी नहीं पड़ जाए।

तभी उषा बाई ने आकर कहा-भाभी जी कल मैं काम पर नहीं आऊंगी, मेरे छोटे बेटे का जन्मदिन है, उसे नया ड्रेस दिलवाना है, खाना बनाना है, मिठाई भी बनानी है। आप मुझे हजार रुपये दे दो, बाद में लौटा दूंगी। काजल ने उसे रुपये दे दिए।

दूसरे दिन सुबह काजल किचन में काम करने जा ही रही थी कि उषा बाई आ गई। काजल ने हैरानी से पूछा-अरे आज तो तुम छुट्टी पर थीं न? हां भाभी जी, कल शाम को पड़ोस के रामू भैया को कोरोना हो गया और उन्हें अस्पताल ले गए। वो तो मजदूरी करते थे, रोज कमाते और रोज परिवार को खिलाते। घर में गीता भाभी और दो बच्चे थे। मैंने आपके दिए रुपयों से उनके घर मे राशन लाकर दे दिया। अब कम से कम वो भूखे तो नहीं रहेंगे,जन्मदिन तो अगले साल भी मना लुंगी पर उनके दुःख में आज तो हिस्सा बंटा पाई यही मेरे लिए संतोष की बात है।

एक साधारण महिला ने कितनी असाधारण बात कह दी थी। काजल मन ही मन शर्मिंदा हो गई।एक उषा बाई थी जो इंसानियत का धर्म निभा रही थी और वह स्वयं पड़ौसियों से

नज़रें चुरा रही थी।

काजल ने कहा-उषा बाई वो रुपये अब मैं तुमसे नहीं लूंगी। ऐसा कहकर एक फूल की पंखुरी बराबर पुण्य का भागीदार बनने का सुख काजल को भी मिल गया।

ग़ज़ल

दूर जाने का मुसलसल सिलसिला चलता रहा
याद भी आती रही औ फ़ासला बढ़ता रहा
फ़िर वही या कौन थी, क्या और थी किस ओर थी
बस इसी तफ़तीश में ही रास्ता कटता रहा
रात यूं बिखरी पड़ी है अक्स पूनम सी हसीं
तीरगी में ही मज़ा है छू ले दिल कहता रहा
इक अदद ये ज़िंदगी गुलजार सपनों से रही
आस का खाली घड़ा भी मन ही मन भरता रहा
आख़िरी में इस दफ़ा भी 'कल मिलेंगे' तय ही था
आज भी वो मैं ही था जो फोन बस करता रहा
किस तरफ है ज़िंदगी, है कौन कब किस मोड़ पर
जानता कोई नहीं, हां शोर पर करता रहा
भूल जाने की तमन्ना सच ही हो मुमक़िन नहीं
चाहते बेशक जुदा है दरमियाँ घटता रहा
था सफ़र ये खुशनुमा अंजाम पर अब आ गया
फ़िर मिलेंगे फ़िर मिलेंगे वायदा चलता रहा
टूट जाने का नशा, है होश भी बेहोश सा
मयकदे तेरी कहानी देर तक सुनता रहा
हर खुशी हर ग़म बक़ाया कर्ज़ है ये सिसकियाँ
ज़िंदगी की सेज पर मैं रोज़ कुछ बँटता रहा

शिवम तिवारी
बिहार

वक्त के फूल...

शतदल मंजरी
बिहार

वक्त के फूल
झर रहे हैं...
एक हवा
जो बरसों तक बही
मंद हो रही है
उसकी सुरभि
वक्त पीछे मुड़कर
नहीं देखना चाहता
पाँवों के वह निशान
नदी भूल चुकी है
अपने आदम-संस्कार
उसके विलाप की अस्थियाँ
तुम्हारी अँजुरी में
नहीं भरेंगी
अपना नम अवसाद
तुम्हारा सुख
सिकुड़ने लगा है
वह जो एक फूल था
जिसके साथ-साथ
लरज़ते थे पत्ते
और काँपती थीं
शाखाएँ
उनकी जगह
बदल गयी है
जीवन कहीं और बतियाना चाहता है
अपनी आस्थाओं की
निर्मल बतकहियाँ
कहीं और होती है सुबह
एक चमकीली
धूप के साथ
वक्त के फूल
झर रहे हैं
आहिस्ता-आहिस्ता।

तुम्हारी माँ...

मिन्नी मिश्रा, पटना

बचपन से बापू को देखा , हमेशा शराबी ही दिखे ! कभी उनमें पिता की झलक दिखी ही नहीं ! लंबा कद, मज़बूत हाथ, झुके हुए कंधे, चाल लड़खड़ाती हुई , हाथ में दारू का बोतल... यही थी मेरे बापू की पहचान !

जब भी उन्हें घर में प्रवेश करते देखता, मैं कांप उठता ! आते ही वो माँ पर बरसते, गाली के साथ बातें करते । माँ सहमी-सहमी सी रहती, उसे बापू से थप्पड़ भी खानी पड़ती! बिलखते हुए वह बस एक ही बात कहती, छोड़ो मुझे, मत मारो !

उस समय मेरा मन करता बापू को धक्के मारकर बाहर कर दूँ, पर ऐसा कर नहीं पाता! आख़िर वो पिता थे मेरे ...!

माँ के ऊपर जब नज़र ठहरती, जैसे कोई साक्षात देवी हो। दिन भर वह पूजा करती, जो खाना बनाती पहले मुझे खिलाती, फिर बापू के आगे बढ़ाती। अपने लिये क्या रखती... मैंने नहीं जाना! छोटी उम्र से यही सब देखा , पिता की दहशत और माँ का समर्पण !

बापू के बारे में जब कभी माँ से कुछ पूछता, तो कहती, तू अभी बच्चा है, जा, बाहर खेल। मेरा प्रश्न हर बार अनुत्तरित रह जाता !

एक दिन बापू पीकर आये, और मुझसे बकझक करने लगे, कस कर दो थप्पड़ जड़ दिये ! बापू को देखते ही उस दिन माँ के देह पर जैसे देवी सवार हो गई थी । रोटी बनाना छोड़ , बेलन लेकर वह दौड़ी, बेलन से बापू के सिर पर प्रहार किया। बापू, कटे वृक्ष की तरह गिर गए! उनके सिर से लहू का धार बह निकला।

शून्य नज़रों से वो मेरी ओर एकटक ताकने लगे। मानो कह रहे हों, माफ कर दो! लेकिन, माँ की आँखों में अभी भी नफ़रत भरा दिख रहा था। फिर भी बापू के सिर से बहते लहू को वह साफ करने में जुट गयी।

मैं बापू के करीब आने लगा। परन्तु माँ ने नजदीक आने से रोक दिया। मेरी तरफ आँखें तरेरते हुए वह ऊँचे स्वर में कहने लगी , इन्हें मैं अकेले संभाल लूँगी । जा पढ, ज़िंदगी संवार । अब तेरे बापू का साया , मैं कभी तुझ पर नहीं पड़ने दूँगी । ध्यान से सुन बेटा , मैं तुम्हारे बाप की पत्नी नहीं, तुम्हारी माँ कहलाना चाहती हूँ।

मैं,विचार शून्य खड़ा, माँ को एकटक देखता रहा। मुझे लगा, वह मुझसे कहेगी , अभी तू बच्चा है... जा खेल बाहर।

दुनिया...

आँख तेरी बन्द होते ही यतीम अब समझे दुनिया
दे रही है तोहफ़े शायद ग़रीब अब समझे दुनिया
माँ का साया सर अभी है मेरे दोस्त जान लो तुम
कल तलक़ हमसे ख़फ़ा जो थी हबीब अब समझे दुनिया
अपनों को भी छोड़ कर जाना घड़ी कैसी ये आई
देख हमको क्या देता है नसीब अब समझे दुनिया
वो अमानत लेकर अपनी सब्र देता ज़िन्दगी में
ख़्याल रखने वाला वो रब है रहीम अब समझे दुनिया
बादशाहत हो मेरी चाहत ये सबके दिल में होती
छोड़ कर लालच यहाँ सब है फ़क़ीर अब समझे दुनिया
हाँ नहीं आता यहाँ झुकना सभी को जानते हैं जो
आज भी क़ीमती है खुद्दारी 'हसीन' अब समझे दुनिया

हसीन बानो, जयपुर

एक बिटिया का प्रण....

सोनिया सूर्यप्रभा
दिल्ली

कलम हाथ ले सोच रही थी
कुछ लिख डालूँ अपनी बिटिया पर
शेर, कविता, गीत नवेला
कोई रच डालूँ अपनी बिटिया पर
आँख बंद और मन मगन था
ध्यान शब्दमय भाव सघन था
बिटिया पर लिखने को आतुर
सोच दृढ़, संधान सघन था
उसने शायद गौर कर लिया
क्यों माँ ने यूं मौन धर लिया
वह कांधे पर हाथ धर गयी
मन विजया सी बात कर गयी
क्या लिखती हो माँ मुझ पर तुम
मैं परछाई और आभा तुम
तुमसे ही तो परिचय मेरा
जानूं, सोचो मुझको हर पल तुम
मुझको रच डाला है तुमने
क्या यह कम कोई काम किया है
इस दुनिया में लेकर आयी
मुझको एक प्यारा नाम दिया है
अब दायित्व मेरा बनता है
मुझको स्वयं को रचना है
अस्तित्व सुधि सा पाया मैंने
सिद्ध यही बस करना है
साँझ ढ़लते ही आती है, काली निशा।
बीते दिन से सबक कुछ चुरा लीजिये।
दृढ़ इरादों से रोशन जहाँ कीजिये।
विश्व बंधुत्व की भावना से भरी,
भारतीय संस्कृति संग सबके चली।
अपने संकल्प को ध्येय बना लीजिए।
सर्व सिद्धि स्वयं ही पा लीजिये।।

संकल्प सिद्धि

सलोनी 'क्षितिज' रस्तोगी
जयपुर

नव संकल्प से मन बंधा लीजिये,
कर्मपथ पर सदा सिद्धि पा लीजिये।
शुभ संकल्प लेकर विश्वास से,
नेह दीपक जलाओ उल्लास से।
मन के भावों को निर्मल बना लीजिए,
अपने विश्वास को जय बना लीजिए।
भोर हर दिन नई, सूर्य हर दिन नया,

बहुत कुछ लिया मगर काफी कुछ दिया भी वर्ष 2021 ने...

सम्पत सारस्वत, सूरत

वर्ष 2020 कोरोना काल में गुज़रा, बहुत सी अनकही बातें वर्ष के साए में रह गई, इन सबके बीच जो सिमटकर रह गई वो है ज़िंदगी, बस ज़िंदगी....

बहुतों ने अपनों को खोया, कुछ लोगों के लिए बहुत कुछ यादें बन गई, समय कठिन गुज़रा सबके लिए क्योंकि ना आमदनी थी ना कोई रोज़गार और बस था तो सब तरफ सन्नाटा....

फिर भी इंसान आगे बढ़ा और वर्ष 2021 में कोरोना को मात देते हुए आगे बढ़ा और धीरे धीरे ही सही पर जीवन को पटरी पर लाया गया और देश के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ने में प्रयासरत हुआ, मैंने भी ज़िंदगी पर प्रेरणात्मक वस्तुओ का संग्रह कर जीवन से जुड़ी खट्टी मीठी यादों को साथ लेकर वर्ष 2020 में ज़िंदगी-मुफ़्त या संवेदनशील। पुस्तक लिख डाली जिसका प्रकाशन बीकानेर से जुलाई 2021 में किया गया। 24 जुलाई 2021 को गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर परम पूज्य स्वामी जी, गुरुदेव व माता पिता के आशीर्वाद से पुस्तक प्रकाशित हो गई।

पाठकों द्वारा हौसला अफजाई से पुस्तक को चहुंओर ख्याति मिली। पुस्तक में शामिल लेखों को पसंद किया जा रहा था और इसी बीच सिलसिला शुरू हुआ इसी पुस्तक का अंग्रेजी संस्करण प्रकाशित करने का और अनुवाद होकर पुस्तक तैयार हो गई है जिसका अनुमानित प्रकाशन अगले वर्ष में हो जायेगा, वहीं हिंदी की मेरी दूसरी पुस्तक। सफर जिंदगी का भी तैयार हो चुकी है जिसका प्रकाशन भी अगले वर्ष होना है, अच्छा लगता है जब आप अपनी भावनाओं को कुरेदकर कलम की मदद से कागज पर उतारते हो और फिर लोग उसे उसी भावना से पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया देते है इस दौर को महसूस करना ही अपने आप में बहुत बड़ी बात है।

हालांकि 2020-21 ने एक साथ में लोगो से बहुत कुछ लिया और दिया पर ईश्वर की कृपा से मैं सौभाग्यशाली रहा कि इस दौर ने मुझे एक नई पहचान और शिखरता दी जिसके बलबूते मैं अपनी मंजिल के और करीब आ पाया और बहुत कुछ हासिल कर पाया, इसी दौर ने मुझे हिंदुस्तान के सबसे बड़े मंच प्रसार भारती पर भी राष्ट्रीय मुद्दों पर समीक्षक के रूप ने काबिज होने का गौरव प्रदान किया जिसके द्वारा नई ऊर्जा का संचार हुआ और आगामी वर्षों की रणनीति तय हो पाई। सभी संघर्षों को पार कर मैं मेरे पथ पर बढ़ता चला गया.... बढ़ता चला गया।

साक्षात्कारकर्ता: शालिनी श्रीवास्तव

शहर की एक शख़्सियत

जीते सभी हैं मगर जीना सबको नहीं आता...

पवन गोयल

प्रतिस्पर्धा के इस दौर में हम ख़ुद से दूर हो गए हैं। औरों के पीछे भागते भागते ख़ुद से बहुत दूर निकल आये हैं जबकि हमारा जीवन हमें जीना है औरों को नहीं!

जीवन को एक नई परिभाषा में गढ़कर, ख़ुद को शान्त और धीर-गम्भीर बनाये रखकर ज़िंदादिली से कैसे जिया जाता है, यह हर कोई नहीं जानता।

भागते-दौड़ते जीवन में अक्सर युवा मन यह निश्चित नहीं कर पाता कि उसे करना क्या है? इन्हीं अनिश्चितताओं के चलते वह कभी माता-पिता की ख़्वाहिशों का ख़ुदा बन जाता है और कभी-कभी मित्रों की मन्त्रणा का मसीहा। खुद से बात ही नहीं कर पाता कि आख़िर वह ख़ुद क्या करना चाहता है।

इन्हीं अंतर्द्वंदों, दबावों, प्रभावों से उठकर अपने मन को पढ़ पाना और दिमाग को दुरुस्त रखना भी एक कला है। मन और दिमाग दोनों का तालमेल बैठाकर खुद की नींव खुद गढ़ना भी एक क़ाबिलियत है। यह हमारी वह क्षमता है जो हमें ख़ुद से रूबरू करवाती है कि हम वो कर सके जो हम चाहते थे और जीवन भर यह कह सकें कि जो सोचा वही किया और उसी में अपना मुक़ाम बनाया। परिवार की परिभाषा को पूरित करते हुए समाज में सम्मान और प्रतिष्ठा का शिखर क़ायम करना भी सफलता का एक पहलू है। केवल सम्पत्ति होने से किसी को सम्मान नहीं मिलता बल्कि सामाजिक और व्यवहारिक होने से व्यक्ति अपना स्थान समाज में उच्चस्थ स्थापित करता है। यह संस्कार परिवार और उनकी परम्पराओं से आते हैं।

जैसा कि मैंने प्रथम पंक्ति में एक वाक्य कहा कि ज़िन्दगी को एक नई परिभाषा में गढ़ते हैं कुछ लोग जिनका जीवन जीने का पहला उसूल है कि 'जीवन सबको मिला है लेकिन जीना सबको नहीं आता'

तो आइए सुनते हैं उनके मुख से ही जीवन के फ़लसफ़े.... जिन पर चलकर आज वो उस मुक़ाम पर हैं कि समाज में उन्हें मिलने वाला मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा उनको औरों से अलग बनाता है।

आज हम रूबरू होने जा रहे हैं शहर के मशहूर सफ़ारी ग्रुप ऑफ इंडस्ट्री के एमडी., राजनीतिज्ञ, जयपुर व्यापार मंडल के सक्रिय प्रतिनिधि एवं समाजसेवी श्रीमान पवन गोयल से......

Q.आप जीवन को किस तरह परिभाषित करना चाहेंगे?

जीते सभी हैं मगर जीना सबको नहीं आता। प्रतिस्पर्धा के इस दौर में हम ख़ुद से दूर हो गए हैं। औरों के पीछे भागते भागते ख़ुद से बहुत दूर निकल आये हैं।

एक छोटी सी कहानी में अगर इसे समेटे तो जिसके पास साईकिल है वो स्कूटर की, जिसके पास स्कूटर है वो कार की जिसके पास कार है वो हेलीकॉप्टर की ख़्वाहिश करता है और एक दिन स्वास्थ्य को अच्छा रखने के लिए फिर से साईकिल पर आ जाता है। अतः यह जीवन नहीं एक चक्र है इसमें हम कैसे ख़ुद को मैनेज कर पाते हैं यह महत्वपूर्ण बात है।

संतुष्टि की बात करें तो न राजा सन्तुष्ट होता है न मंत्री बल्कि एक सड़क पर सोया हुआ मज़दूर मीठी सी नींद संतुष्टि के साथ लेता दिखाई देता है। बिल्डिंग निर्माण के दौरान मैंने मज़दूरों को जी तोड़ मेहनत करते हुए देखा लेकिन वही मज़दूर रात को गीत-गाते मस्ती से नींद लेते हुए भी मैंने देखे क्योंकि उनमें भावना नहीं थी दूसरों से हौड़ करने की। जीवन चक्र को समझना ज़रूरी है। हाँ! प्रतिस्पर्धा करें लेकिन खुले मन से और खुली आँखों से सपने देखें। जो है उसका आनंद लें ।जीवन को जियें ख़ुद के लिए,अपने परिवार,देश व समाज के लिए। मेरे जीवन का यही सार है कि मैं अपने व अपनों के लिए जीता हूँ।

वर्तमान पदभार

1. उपाध्यक्ष: श्री अग्रवाल समाज समिति, जयपुर
2. संरक्षक: जयपुर व्यापार मण्डल, जयपुर
3. अध्यक्ष: अग्रवाल समिति ट्रस्ट,गीजगढ़ विहार
4. अध्यक्ष: गोपालपुरा बाईपास व्यापार मण्डल
5. उपाध्यक्ष: जिला कांग्रेस कमेटी, जयपुर
6. अध्यक्ष: बाईस गोदाम व्यापार मण्डल हवा सड़क जयपुर
7. संरक्षक: पिंक सिटी फर्नीचर एसोसिएशन, जयपुर
8. मुख्य संरक्षक: स्वर कोकिला एवं रागा क्लब जयपुर
9. मैनेजिंग डायरेक्टर: सफ़ारी ग्रुप ऑफ इण्डस्टी, जयपुर
10. डायरेक्टर: गोयल बिल्डिंग स्टेट प्रा.लि., जयपुर

Q.आप संयुक्त परिवार में रहते हैं आज की पीढ़ी को इसके लिए क्या कहना चाहेंगे आप?

बेहद अच्छा प्रश्न है ये। इस दौर में जहाँ परिवार सिमट गए हैं तो भावनाएँ भी सिमट गयीं हैं। एकाकी परिवारों के इस दौर में सयुंक्त परिवार एक आदर्शतम उदाहरण है। कॉरोना के आगमन ने फिर से इस परिभाषा को जीवंत किया है। इस कारण मैं इस महामारी का शुक्रगुज़ार हूँ कि इसने परिवार का महत्व समझाया है। इस दौरान भले सोशल डिस्टेंसिंग रही। व्यवसाय, बाज़ारों पर ताले लगे लेकिन मन के ताले खुलें हैं। आजकल की पीढ़ी को परिवार के मूल्य और उसके महत्व का अहसास हुआ है। हम सयुंक्त परिवार में रहते हैं अतः हम जानते हैं कि जो सुरक्षा, रख-रखाव, संस्कार, सार-सम्भाल एक संयुक्त परिवार से मिलती है वह एकाकी होने पर ग़ायब हो जातीं हैं। हाँ ! बंधन और कुछ उसूल बनते हैं संयुक्त परिवार में लेकिन वह सबके हित से जुड़े होते हैं। जीवन को सही दिशा देने के लिए यह नियम होते हैं न कि जीवन जीने की आज़ादी को छिनने के लिए। तनाव, स्ट्रेस, अकेलापन, अवसाद यह व्याधियाँ कुछ वर्ष पूर्व ही आयीं हैं जीवन में। अतः आज की पीढ़ी अगर पुरानी संस्कृति की तरफ़ लौटें तो जीना आसान लगने लगेगा।

Q. इतने व्यस्त जीवन में अपनी रुचि, दैनिक दिनचर्या और परिवार के लिए कैसे समय निकालते हैं आप?

जीवन जीने के लिए मिला है उसे जी भरकर जियें यही पिताजी ने सिखाया और मैंने भी यही सिद्धान्त अपनाया है। सुबह जल्दी उठकर वॉक करना योग करना और गोल्फ खेलना मेरा नियम है। क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी मेरे पसंदीदा गेम्स हैं। किताबें पढ़ना,संगीत सुनना और अब तो कराओके पर गुनगुनाना भी शौक़ बन गया है। जीवन में ख़ुद को, परिवार को पूरा समय देता हूँ। मम्मी-पापा, भाई भाभी, पत्नी निधि और पुत्र राघव व पुत्रवधु मनाली व पूरे परिवार के साथ अच्छा वक्त गुज़ारता हूँ।

Q. बिज़नेस करना आपका ख़ुद का निर्णय रहा या पारिवारिक परम्परा को अपना लक्ष्य बनाया आपने?

अगर मैं इसे मिलाजुला निर्णय कहूँ तो सही होगा क्योंकि पारिवारिक व्यवसाय पेट्रोलियम था ही और इसके अलावा दादा जी श्री बुद्धाराम जी, पिताजी श्री रामवतार जी और माता जी श्रीमती देवी कुमारी जी इन सभी का मानना था कि कम कमाओ मगर ख़ुद के लिए कमाओ, ज़्यादा कमाओ तो दूसरों के लिए कमाओ, सफलता का कोई शॉर्ट कट नहीं होता। अतः लम्बा चलें ख़ुद के क़दमों पर चलें किसी के सहारे नहीं। उनका मानना था कि नौकरी मत करो नौकरी दे सको उस मुक़ाम पर पहुँचो बस यही प्रेरणा बचपन से नींव में डाली गई जो आज इस रूप में विस्तृत होकर आप सबके बीच खड़ी है। अतः परिवार के व्यवसाय के साथ-साथ धीरे-धीरे रियलस्टेट, होटल इंडस्ट्री में अपने क़दम जमाये और माँ की प्रेरणा के साथ-साथ ख़ुद की क्षमताओं को पहचाना और इस मुक़ाम पर आ पहुँचे।

Q.सफ़ारी ग्रुप के सफ़रनामे के पीछे कोई विशेष प्रेरणा?

जी हाँ ! बिल्कुल सही मैंने पिताजी व बड़े भैया प्रमोद भाईसाहब से बहुत कुछ सीखा। उनके जीवन के संघर्ष को उनके साथ जिया। हम चार बच्चे थे। मेरे बड़े भाई प्रमोद गोयल, दीदी पुष्पा गोयल, फिर मैं स्वयं उसके बाद छोटी बहन गीता गोयल हम सभी ने कभी परिवार में ख़ुद में फ़र्क़ नहीं पाया। पिताजी ने पढ़ने से लेकर व्यवसाय करने तक भी कभी हम पर कोई प्रेशर नहीं रखा। अतः हम सब अपने-अपने मन मुताबिक़ भी सोचने के क़ाबिल बने। मैंने परिवार में मेहमान नवाज़ी को हमेशा बहुत अच्छा पाया। हॉस्पिटैलिटी मेरा शौक रहा और मुझे होटल व्यवसाय उसकी साज-सज्जा और अतिथि सत्कार शुरू से भाता था और मैं इसी फील्ड की कल्पनाएँ करने लगा और सफ़ारी ग्रुप की शुरुआत हुई। सफ़ारी नाम रखना भी बड़ा रोचक प्रसंग है। रजिस्ट्रेशन तक मैं नाम नहीं सोच पाया था। बहुत नाम सोचे लेकिन क्लिक नहीं हुए आख़िर वकील साहब के सामने बैठकर डिसकस कर ही रहा था कि एक पेपर पर नज़र गयी जिस पर सफ़ारी गाड़ी का मॉडल था मन को यह नाम छू गया और बस इसी के नाम से शुरुआत कर दी नए सफ़र की।होटल सफ़ारी, होटल ग्रेंड सफ़ारी, होटल सफ़ारी प्रीमियम का कारवां बढ़ता चला गया। कभी-कभी अचानक आप वो कर जाते हैं जो आपको एक नई राह पर ले जाता है और इस तरह होटल इंडस्ट्री में मैंने क़दम रखा।

Q. सामाजिक, सांस्कृतिक और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में भी आप काफ़ी काम करते हैं ज़रा उनके बारे में बताएं।

देश की पहचान सामाजिक और सांस्कृतिक धरोहरों से ही होती है। इस धरोहर को धारण करती हैं महिलाएं। अतः सामाजिक और सांस्कृतिक सरोकारों को ध्यान में रखते हुए हमने स्वर कोकिला नाम से एक संगीत समूह बनाया जिसकी शुरुआत घर से हुई। संगीत जीवन में उमंग और उत्साह जाग्रत करता है। किसी कार्यक्रम के दौरान मुझे कुछ गुनगुनाने को कहा गया उस वक़्त मैं थोड़ा झिझका लेकिन घर आकर मैंने ठान लिया था कि मुझे इसमें अभ्यास करना ही है। घर में कराओके सिस्टम आया। घर का माहौल एकदम बदला। घर की महिलाओं के विचार थे कि उन्हें एक अलग ऊर्जा मिलती है इससे। बस यह सोच विस्तृत हो गयी और महिलाओं का एक समूह मेरी पत्नी निधि गोयल ने बना लिया उसका नाम स्वर कोकिला रखा गया। आज यह समूह 250 से 2500 की संख्या पर पहुँच गया है। महिलाएं जो परिवार में अपने आपको भूल गयीं हैं उन्हें ख़ुद के लिए जीने की राह देता है यह समूह। इसमें अभ्यास करते-करते कई महिलाएँ आज प्रोफेशनल सिंगर बन गई हैं।अपनी आजीविका खुद कमा रही हैं अपने पैरों पर खड़ीं हैं। मात्र 100 रुपये प्रवेश फार्म के हैं अन्यथा यह समूह निःशुल्क है। इसमें कोई भी संगीत प्रेमी स्त्री प्रवेश ले सकती है।

इसी तरह रागा क्लब की शुरुआत हुई जिसमें शहर के कई संभ्रात लोग, प्रशासनिक अधिकारी, राजनीतिज्ञ लोग जुड़े हुए हैं जो जीवन की आपधापी से कुछ क्षण बचाकर संगीत की स्वर लहरियों को गुनगुनाते हैं और जीवन का आनंद लेते हैं। ख़ुद से रूबरू होते हैं। संगीत सूकून भरे जीवन का सार है।

Q. राजनीति में आपका आना संयोग है या रुचि ?

राजनीति में आना मेरा संयोग नहीं बल्कि मेरी रुचि ही थी। स्कूल और कॉलेज के वक़्त से ही लीडरशिप करना मेरी ख़ासियत थी ही। प्रबंधन करना, प्रतिनिधित्व करना शुरू से पसन्द था। पारिवारिक पृष्ठभूमि राजनैतिक नहीं थी मगर स्कूल में हमेशा मॉनिटर रहा। कॉमर्स कॉलेज में 18-20 वर्ष की आयु में चुनाव भी लड़ा। उस दौरान बहुत कुछ उतार-चढ़ाव देखे। काफी अनुभव हुआ। फिर एम.ए. राजनीति में करने के लिए यूनिवर्सिटी में प्रवेश लिया। इस दौर में 25 वर्ष की आयु में ही व्यापार मंडल में हवा सड़क, बाइस गोदाम से अध्यक्ष चुना गया। इस तरह राजनैतिक जीवन की शुरूआत हुई।

Q. राजनीति में आप किसे अपना आदर्श मानते हैं?

बेहद सम्मान और गर्व के साथ बताना चाहूँगा कि मेरा रुझान शुरू से नेशनल स्टूडेंट यूनियन ऑफ इंडिया (NSUI) की तरफ़ था जो कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की छात्र-शाखा है। इसी में मेरे आदर्श शुरू से ही माननीय अशोक गहलोत साहब रहे हैं। मैं उन्हें फॉलो करता था। जब वे पहली बार 1998 में मुख्यमंत्री बने तो उन्हें गृह भोज के लिए मैंने आमंत्रित किया। वे पूरे परिवार व अपनी टीम के साथ आये बस वहीं से मेरा पदार्पण काँग्रेस में हो गया। मेरे आग्रह को मान मिला। मुझे राजनीति का मार्गदर्शन भी यहीं से मिला। इसके अतिरिक्त श्री महेश जोशी जी, श्री राजीव अरोड़ा जी से एनएसयूआई के दौरान बहुत कुछ सीखा मैंने। गहलोत साहब की दूरदर्शिता और सबको साथ लेकर चलने की ख़ूबी उन्हें अन्य नेताओं से अलग खड़ा करती है। अनुभव के साथ-साथ व्यवहारिक समझ उनकी सफलता का कारण है। मेरा भी यही सिद्धान्त मैंने बनाया है कि टीम को कभी मत भूलो टीम है तो हम हैं। राजैनतिक गलियारों में सच्चे साथियों का होना आपकी कार्यक्षमता और कार्यशैली को मज़बूत करता है। यह सिद्धांत ही गहलोत साहब के व्यक्तित्व को और मज़बूत करता है।

Q.आगामी विधानसभा चुनाव में क्या एक चेहरा आपका भी होगा?

आने वाले चुनावों में माननीय गहलोत साहब के आशीर्वाद से अगर आदेश मिला तो अवश्य मालवीय नगर विधानसभा से मैं आगे आना चाहूँगा । पार्टी का विश्वास मेरी ताक़त बनेगा। पार्टी के हित के लिए सदैव तत्पर व तैयार रहा हूँ और आगे भी रहूँगा। देश में जो माहौल है उसे देखते हुए पार्टी को नई रणनीति और कुशलता से आगे के चुनाव लड़ने होंगे। ऐसे में माननीय मुख्यमंत्री जी जो रणनीति बनाएंगे उसमें मेरा पूरा सहयोग रहेगा। मैं अभी जिला काँग्रेस कमेटी से उपाध्यक्ष हूँ और पार्टी के मर्म पूरी तरह समझता आ रहा हूँ। भीतरी दृढ़ता और आपसी विश्वास और समझ ही हमें जिताकर ले जाएगी ऐसा मेरा विश्वास है। जनता में काँग्रेस ने विश्वास भरा है अपनी कुशल रणनीति से और कार्यशैली से। कॉरोना काल के दौरान राजस्थान सरकार पूरे विश्व के लिए आदर्श बनी। रामगंज मॉडल हो या भीलवाड़ा मॉडल, कॉरोना काल में जो संवेदनशीलता और कार्यप्रणाली अपनायी गयी वह अन्य राज्यों ही नहीं बल्कि बाहरी देशों के लिए भी प्रेरणा का स्त्रोत बनी। वैक्सिनेशन हो या हॉस्पिटल्स का नवीनीकरण,गरीब वर्ग, महिला बुजुर्ग वर्ग, अस्थिकलश विसर्जन ये सब संवेदनशील मामले थे जिन्हें काँग्रेस की सरकार ने बड़ी नरमाई और समर्पण के साथ निभाया और एक आदर्श सरकार का स्वरूप स्थापित किया है। मुझे गर्व है कि मैं इंडियन नेशनल कॉंग्रेस का ही एक सदस्य हूँ।

बीजेपी की तर्ज पर कांग्रेस भी बनाएगी ऑनलाइन कार्यकर्ता

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। कांग्रेस से नए लोगों को जोड़ने के लिए अब ऑनलाइन अभियान चलाया जाएगा। नए साल से कांग्रेस डिजिटल मेंबरशिप अभियान शुरू करेगी। कांग्रेस का मेंबरशिप अभियान 31 मार्च तक चलेगा। दिल्ली में कांग्रेस के ऑनलाइन अभियान को लेकर विस्तार से चर्चा हुई है।

कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने दिल्ली में प्रदेश प्रभारी अजय माकन, संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल, कांग्रेस ट्रैनिंग सेल के प्रभारी सचिन राव से बैठक कर चर्चा की है। राजस्थान में कांग्रेस सत्ता में है, इसलिए यहां ज्यादा से ज्यादा नए लोगों को पार्टी से जोड़ने पर फोकस रहेगा। इस बार 20 लाख के आसपास मेंबर बनाने का टारगेट है। कांग्रेस में संगठन चुनाव की प्रक्रिया से पहले 31 मार्च तक मेंबरशिप होगी। अप्रैल से अगस्त-सितंबर के बीच संगठन चुनाव की प्रक्रिया पूरी होगी, जिसमें जिलाध्यक्ष से लेकर राष्ट्रीय अध्यक्ष तक का चुनाव होगा। कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने कहा- पहले जब शक्ति प्रोजेक्ट शुरू किया गया था उस समय भी राजस्थान देश में सबसे आगे रहा था। अब जनवरी से शुरू होने वाले डिजिटल मेंबरशिप अभियान में भी राजस्थान अग्रणी रहेगा। ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरीकों से मेंबरशिप चलाई जाएगी।

बीजेपी ने 2014 के बाद एक अभियान चलाकर मिसकॉल के जरिए मेंबर बनाए थे। मिसकॉल से बनाए गए मेंबर्स की पड़ताल में कई गड़बड़ियां मिली थी। बाद में बीजेपी ने इस पैटर्न को बदल दिया। कांग्रेस इससे अलग डिजिटल माध्यम से लोगों को जोड़ने पर फोकस करने जा रही है।

कांग्रेस ऑनलाइन मेंबरशिप अभियान के जरिए यूथ तक पहुंचना चाह रही है। यूथ को टारगेट करके ही ऑनलाइन मेंबरशिप शुरू की गई है। पार्टी ट्रैनिंग पर भी जोर देने जा रही है। 26 दिसंबर से जयपुर के बाड़ा पदमपुरा में कांग्रेस का ट्रैनिंग कैंप होने जा रहा है जिसमें कांग्रेस नेताओं को पार्टी के आगे के कार्यक्रमों को लेकर ट्रैनिंग दी जाएगी।

एक शख्सियत-नारी शक्ति

साक्षात्कारकर्ताः शालिनी श्रीवास्तव

एक स्त्री दूसरी स्त्री का विश्वास जीतेः मधु सोनी

सृष्टि की दृष्टि-हर स्त्री अपने अस्तित्व को पहचाने

आज के इस दौर में जहाँ एक ओर स्त्रियों ने परिवार और व्यवसाय में अपनी अलग जगह बनाई है वहीं दूसरी और उनकी निरन्तर समाजसेवा में उपस्थिति एक नई परिभाषा गढ़ती है। समाजसेवा के क्षेत्र में कई जुझारू महिलाओं को आज काम करते देखा जा सकता है। जो उनके अस्तित्व को एक नई पहचान दे रहा है। इसी श्रृंखला में आज हम बात करने जा रहे हैं जयपुर शहर की उस महिला शख्सियत से जो मृधुभाषी और सौम्य तो हैं हीं साथ-साथ समाजसेवा के क्षेत्र में निरन्तर बिना किसी सहयोग के कार्य कर महिला जगत को प्रेरित कर रहीं हैं। आपने निरन्तर समाजसेवा से व पारम्परिक कार्यक्रमों के आयोजन से समाज में अपनी एक अलग छाप छोड़ी है। हम मुलाक़ात कर रहे हैं सृष्टि द वुमन्स क्लब की संस्थापक व अध्यक्ष श्रीमती मधु सोनी से..

प्रश्न : समाजसेवा की ओर कैसे रुख हुआ?

उत्तर : मैं शुरू से ही समाज के प्रति कुछ करने की चाहत रखती थी। महिला केवल घर चला सकती है इस भ्रांति को भी तोड़ना था अतः जब परिवार और मित्रों का सहयोग मिला तो कारवाँ चल निकला।

प्रश्न : सृष्टि क्लब का नामकरण कैसे हुआ?

उत्तर : मैं लगातार कार्य कर रही थी। मेरे पति व बेटी मुझे मेरे काम व मेरी भावनाओं को हमेशा प्रेरित करते रहे। बेटा छोटा था। बेटी प्रियदर्शिनी ने सृष्टि द वुमन्स क्लब नाम मुझे सुझाया और उसका उद्देश्य भी बताया कि माँ आप कुदरत के आवश्यक आयामों पर काम कर रहीं हैं तो हमें इसका नाम यह रखना चाहिए और इसी नाम से रजिस्ट्रेशन करवा लिया गया।

प्रश्नः बचपन में परिवार में कैसा माहौल मिला?

उत्तर : मैं आगरा के पास अचनेरा नगर से हूँ। पारिवारिक माहौल खुले विचारों का था। पिता योगेंद्र सोनी जी और माता अवधेश जी दोनों ने हमारी परवरिश बहुत ही बिंदास और खुले विचारों के साथ की। मेरे भाई उमेश और मुझ में कभी उन्होंने फर्क नहीं किया।उन्होंने हमेशा हमें सहयोग की भावना और सौम्यता के ही पाठ पढ़ाए।

मैं अपने नाना जी से बहुत प्रभावित रही हूँ। नाना जी के जीवन का एक मंत्र था कि कभी ज़िंदगी में किसी को किसी काम के लिए या सहयोग के लिए मना मत करना। जितना हो सके सहयोग करना। जो हमारे परदादा थे उन्होंने अचनेरा में द्वारकाधीश जी का मंदिर बनवाया था और दादाजी भी बहुत धार्मिक प्रवृत्ति के रहे।ऐसे में धार्मिक प्रवृति और समाजसेवा प्रवृति मुझे अपने परिवार से संस्कारों में ही मिली। मैंने रॉयल इनफील्ड से लेकर ट्रेक्टर तक चलाया है। कॉलेज में भी मैं लीडर ही रही। प्रतिनिधित्व करना और जीवन को खुल कर जीना घर-परिवार से विरासत में मिला।

प्रश्नः परिवार का संक्षिप्त परिचय?

उत्तरः मेरे पति देवेंद्र सोनी असिस्टेंट कमिश्नर सेलटैक्स डिपार्टमेंट नागौर से रिटायर्ड हैं। अभी राजस्थान हाईकोर्ट में लॉयर के तौर पर प्रैक्टिस करते हैं। वे भी अपने अनुभव की सेवाएं फ्री में ही देते हैं। बेटी प्रियदर्शिनी मार्केटिंग कंसलटेंट है और स्वयं की कंपनी चलाती हैं यह कम्पनी ग्लोबल लेवल पर काम करती है। बेटा स्वप्निल मल्टीनेशनल कंपनी हैदराबाद में डायरेक्टर है।

प्रश्नः आपकी और क्या रुचि हैं?

उत्तरः पारिवारिक माहौल बहुत खुला था तो मेरी रुचि भी थोड़ी सी अलग रहीं हैं। मुझे पुरुषों के सारे काम करना पसंद था। रॉयल एनफील्ड, ट्रैक्टर चलाना भी सीखा।

स्पोर्टस में क्रिकेट, हॉकी, कंचे खेलना, पतंग उड़ाना, गिल्ली डंडा खेलना और रेस लगाना मुझे बहुत पसंद था और आज भी है। कॉलेज में एनसीसी के कमांडर ऑफिसर (आर्मी विंग) मुझे हमेशा लीडर बनाया करते थे। मैंने एनसीसी, स्काउट्स में भी रेगुलर भाग लिया।

प्रश्न : सृष्टि क्लब की विशेष उपलब्धियाँ?

उत्तरः 1. सृष्टि क्लब अब एक रजिस्टर्ड संस्था है। चार अप्रैल को इसका फाउंडर डे मनाया जाता है इसमें लगभग 50 महिलाएँ हैं। आपसी सहयोग व बाहरी सहयोग अर्जित कर निरन्तर समाज सेवा में संलग्न है।

2.भारतीय परंपरा व संस्कृति को जीवंत रखने में निरन्तर योगदान दे रहा है। जिसका विस्तृत वर्णन आगे दिया गया है।

3. राजस्थान सरकार की भामाशाह सूची में सबसे अधिक सामाजिक सेवाओं और दानदाताओं के रूप में जयपुर ब्लॉक व जयपुर शहर से सृष्टि क्लब का नाम दर्ज है। यह क्लब की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

4.क्लब को कई सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं के द्वारा समाज में विशेष कार्य में योगदान देने हेतु पुरुस्कृत किया जा चुका है।

सामाजिक सेवा पर एक नज़र में--

1. समाज सेवा की शुरुआत सन 2016 से की। सबसे पहले बापू नगर नेचुरोपैथी सेंटर में वाटर कूलर लगवाया। अब तक 6 वाटर कूलर लगाए जा चुके हैं। टोंक रोड मानसिंहपुरा सरकारी स्कूल, खानिया आगरा रोड सरकारी

स्कूल, गेटोर सरकारी स्कूल, सत्कार मालवीय नगर स्कूल इस तरह से कई सरकारी स्कूलों में अब तक वाटर कूलर लगाए जा चुके हैं।

2. हर वर्ष सर्दियों में कंबल व गर्म कपड़े कच्ची बस्तियों में बांटे जाते हैं।

3. मुसलिम मुसाफिर खाने की तरफ मेडिकल कैंप लगाए गए हैं।

4.बालिकाओं के स्वास्थ्य को देखते हुए सेनेटरी नैपकिन्स का वितरण निरन्तर होता है। इस सम्बंध में उनसे चर्चा कर उन्हें इसका महत्व भी बताया जाता है।

5. सरकारी विद्यालयों में जितने भी शौचालय हैं उनकी मरम्मत और उनके निर्माण पर भी सृष्टि क्लब अब कार्य कर रहा है। विद्यालयों में गेट लगवाए गए हैं। टंकी फूट गई है तो नई टंकियाँ रखवायीं गयीं हैं।

6. बालिकाओं के स्वास्थ्य को देखते हुए बालिका सरकारी स्कूल में बालिका टॉयलेट भी बनवाए गए हैं और उनकी सुचारू व्यवस्था को निरंतर सहयोग दिया जाता है।

7. छोटे बच्चों के सरकारी स्कूलों में स्टेशनरी वितरण और वेशभूषा वितरण भी क्लब निरंतर करता है।

8. कोरोना काल के दौरान जरूरतमंदों में खाना वितरण और राशन वितरण का कार्य भी निरंतर किया गया।

9. दिव्यांग लोगों के लिए व्हीलचेयर और उनकी आवश्यकता की वस्तुओं को प्रदान करना भी क्लब का उद्देश्य रहता है।

10. वृक्षारोपण भी क्लब की एक विशेष गतिविधि है। जिसके तहत सरकारी स्कूलों में व मोक्ष धाम में वृक्षारोपण निरन्तर किया जाता है।

11.भारतीय परंपरा व संस्कृति को जीवंत रखने के लिए भी क्लब ने बहुत प्रयास किए हैं और इसी को ध्यान में रखते हुए कई कार्यक्रम आयोजित किये जा चुके हैं जिसमें से प्रमुख हैं गणगौर पूजा, लहरिया उत्सव, फागोत्सव, डांडिया उत्सव का हर वर्ष विशाल आयोजन।

12. टीचर्स डे पर अध्यापकों व डॉक्टर्स को घर-घर जाकर सम्मानित करते हैं जिसमें उन्हें पौधा,मोमेंटो, सर्टिफिकेट देकर व शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया जाता है।

प्रश्नः महिलाओं के लिए कोई संदेश?

उत्तरः जरूर देना चाहूंगी सिर्फ एक बात कहना चाहूंगी कि एक औरत दूसरी औरत का विश्वास जीते क्योंकि हमारी पावर हम में से ही आती है और हम में से ही चली जाती है। एक स्त्री दूसरी स्त्री की शक्ति को पहचाने और उसे सहयोग करे। उसे प्रेरित करे। महिला जगत की कमजोरी है कि एक दूसरे की टांग खींचने में अपना समय व्यतीत करती हैं और यही उनकी असफलता का कारण होता है और मैं इसी सोच से महिलाओं को उभारना चाहती हूँ। मेरे क्लब का एक मुख्य उद्देश्य यह भी है कि मैं महिलाओं में सकारात्मक सोच और स्वयं के भीतर के विश्वास को जागृत कर सकूँ। आपसी नकारात्मक माहौल, लड़ाई झगड़े और आलोचनाओं से उठकर महिलाएं स्वयं को साबित कर सके यही मेरी कोशिश है और रहेगी।

प्रश्न : सृष्टि क्लब के बारे में विस्तार से बताएँ?

उत्तरः सकारात्मक विचारों की उत्पत्ति से ही सकारात्मक सोच का जन्म होता है। इस सोच से जो भावनायें जन्म लेती हैं वो अपना विस्तृत आकार लेती हैं। वसुधैव कुटुम्बकम की भावना भी इसी का परिणाम होती है। और इन विस्तृत भावनाओं के व्यापक संगम का नाम ही सृष्टि क्लब है। सृष्टि विमन्स द क्लब महज एक क्लब ही नहीं बल्कि एक परिवार है जो भारतीय सभ्यता और संस्कृति को सहेजने के साथ-साथ समाज सेवा में भी अपना नाम दर्ज करता है। यह क्लब सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से आने वाली पीढ़ी को हमारे रीति-रिवाज़, परंपराओं से रूबरू करवाता है वहीं दूसरी ओर समाज सेवा करके आज की युवा पीढ़ी को समाज से जुड़ने की प्रेरणा भी देता है।

नाम के अनुसार ही सृष्टि के संरक्षण के लिए भी क्लब प्रतिज्ञाबद्ध है और इसी श्रृंखला में पर्यावरण संरक्षण पर भी जोर देता है। समाज के निम्न वर्ग, ज़रूरतमंद परिवारों के लिए काम करता है इसी तरह आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए स्कॉलरशिप प्रदान कर उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए सार्थक प्रयास करता है।

यह क्लब निरंतर पिछले 6 साल से अबाध रूप से समाज सेवा के क्षेत्र में बिना किसी सरकारी सहायता के अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज़ करवा रहा है।

प्रश्नः वैवाहिक जीवन में अपनी सोच से आने वाली पीढ़ी को क्या सौगात दी आपने?

उत्तरः यह बेहद महत्वपूर्ण प्रश्न है। मैं बहुत खुले विचारों की और बिंदास जीवन जीने वाली लड़की थी। शादी के लिए भी मेरे मन में सोच थी कि जो व्यक्ति हो वो सहयोगी भाव का हो और महिलाओं की इज्जत करना जानता हो। जीवन जीने की आज़ादी दे सके। मुझे उसी से विवाह करना है। मुझे वह जीवन साथी मिले भी। ससुराल मेरा भुसावर भरतपुर में था। यहाँ मुझे बिल्कुल विपरीत माहौल मिला। पर्दा प्रथा का चलन था और मैं घर में सबसे बड़ी बहू थी। ऐसे में मैंने पर्दा प्रथा का विरोध किया और आने वाली सारी पीढ़ी को पर्दा प्रथा से तार दिया। आज मेरी देवरानी बहुत अच्छे से अपना बिजनेस चलाती हैं। परिवार में पर्दा प्रथा समाप्त हो गई।उस पर्दा प्रथा का विरोध सबसे पहले मैंने किया था अतः मन को सूकून मिलता है कि मैं वो कर सकी जो महिला जगत को प्रेरित करता है।

राजस्थान आवासन मण्डल की उपलब्धियाँ

जिस विभाग को बन्द करने की कवायद शुरू हो गई थी उसी विभाग ने राज्य सरकार को अकल्पनीय रेवेन्यू करके दिया। किसी भी विभाग की सफलता उसके प्रतिनिधि अधिकारी पर निर्भर करती है। नई रणनीति व योजनाओं के साथ विभाग ने स्वयं को साबित करने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगा दिया और आज परिणाम सामने हैं। इस चुनौतीपूर्ण समय को स्वीकार कर जिस तरह से विभाग ने स्वयं को साबित किया है वह सराहनीय है। आवासन मण्डल की पिछले तीन वर्षों की उपलब्धियाँ एक नज़र में...

सिटी पार्क

राजस्थान आवासन मंडल जयपुर शहर को एक अनूठी सौगात देने जा रहा है, वह है मानसरोवर में निर्माणाधीन जयपुर का सबसे बड़ा सिटी पार्क। कोविड जैसी विपरीत परिस्थितियों के बीच सिटी पार्क की प्लानिंग की गई, टेंडर जारी किए और अब वर्क ऑर्डर के बाद काम प्रगति पर है।

मानसून के आते ही यहां थीम बेस्ट प्लांटेशन करवाया गया। वृक्षारोपण में आम जनता, सामाजिक, शैक्षणिक और स्वयंसेवी संस्थाओं ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। यह पौधारोपण कार्यक्रम पूरी तरह सफल रहा।

वृक्षारोपण की शुरूआत मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री शांति धारीवाल द्वारा दिनांक 22 अगस्त, 2020 को कल्प वृक्ष और रुद्राक्ष के पेड़ लगाकर की गई।

आमजन को पौधारोपण से जोड़ने के लिए कोविड महामारी को देखते हुए एक अनूठा और नया प्रयोग करते हुए आरएचबी ग्रीन एप बनाया गया। एप पर आमजन का पंजीकरण किया गया और लोगों को निश्चित समय और तारीख देकर, उनसे पौधारोपण करवाया गया। पौधारोपण के लिए प्रेरित लोगों को करने के लिए भेंट स्वरूप 8 से 10 फीट का एक पौधा और पौधे लिए खाद व दवाई उपलब्ध कराई गई।

फाउंटेन स्क्वायर

राजस्थान आवासन मंडल द्वारा जयपुर की प्रतिष्ठित मानसरोवर योजना में बनाए जा रहे सिटी पार्क के एक पार्ट रूप में फाउंटेन स्क्वायर का निर्माण करवाया जा रहा है। यह फाउंटेन स्क्वायर जयपुर शहर को यूरोपियन शहरों के समकक्ष खड़ा कर देगा। अभी तक इस तरह के फाउंटेन स्क्वायर फ्रांस, ब्रिटेन, इटली, जर्मनी और अमरीका जैसे विकसित शहरों में ही देखने को मिले हैं, लेकिन अब

देशी-विदेशी पर्यटकों के साथ स्थानीय लोग भी जयपुर में ही फाउंटेन स्क्वायर का आनंद ले सकेंगे।

मंडल के इस महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट का शुभारंभ मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा 22 अगस्त, 2020 को मुख्यमंत्री निवास पर आयोजित एक कार्यक्रम में किया गया।

चौपाटी का निर्माण

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा मानसरोवर और प्रताप नगर में चौपाटी का लोकार्पण किया गया।

विधायक आवास परियोजना

राजस्थान विधानसभा के सामने ज्योति नगर पश्चिम में 24 हजार 160 वर्गमीटर भूमि पर विधायकों के लिए आवास बन रहे हैं। यहां 2बी+जी+8 के रूप में 6 टावर बनाए जाएंगे, जिनमें 160 फ्लैट्स का निर्माण किया जाएगा। 4-बीएचके फ्लेट्स का निर्माण कार्य प्रगति पर है। प्रत्येक फ्लेट का निर्मित एरिया 3200 वर्ग फीट होगा और इसका सुपर बिल्टअप एरिया 4300 वर्ग फीट होगा।

सुविधाएं

इस परियोजना में फ्लैट्स के अतिरिक्त सेंट्रल पार्क, क्लब हाउस, स्वीमिंग पूल, मीटिंग कान्फ्रेंस हॉल आफिस इत्यादि का निर्माण किया जायेगा।

कोचिंग हब

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की बजट घोषणा की अनुपालना में जयपुर की प्रतिष्ठित प्रताप नगर आवासीय योजना के सेक्टर 16 में 200 फीट चौड़े मुख्य हल्दीघाटी मार्ग पर लगभग 67 हजार वर्गमीटर भूमि पर 1.5 लाख वर्ग मीटर क्षेत्रफल का निर्माण कर कोचिंग हब परियोजना विकसित की जा रही है। इस कोचिंग हब की खास बात यह है कि यहां उपलब्ध भूमि के 40 प्रतिशत क्षेत्र में ही निर्माण होगा, 60 प्रतिशत क्षेत्र खुला ही रहेगा। कोचिंग हब में कुल 8 संस्थानिक टावर बनेंगे। प्रत्येक सांस्थानिक भवन में प्रतितल 1100 वर्गफीट से लेकर 14 हजार वर्गफीट तक के कारपेटक्षेत्र के कोचिंग संस्थानों को बेचान का प्रावधान किया गया है। प्रत्येक टावर 7 मंज़िल का होगा, जिसमें कुल 1 लाख वर्ग फीट क्षेत्रफल निर्मित किया जाएगा। इन सभी भवनों के नीचे भूतल में पार्किंग विकसित की जाएगी।

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

07

जयपुर >> मंगलवार, 28 दिसम्बर, 2021

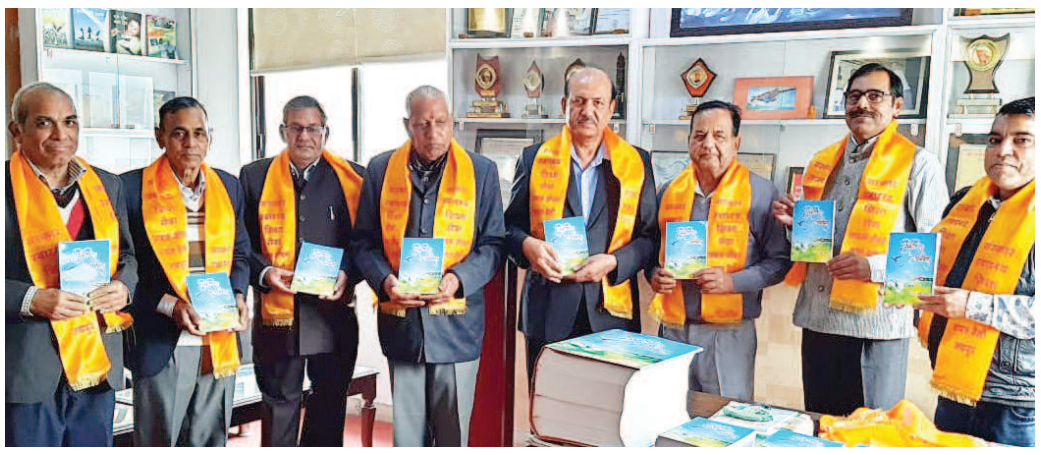

काव्य संध्या एवं पुस्तक विमोचन

हिलव्यू समाचार

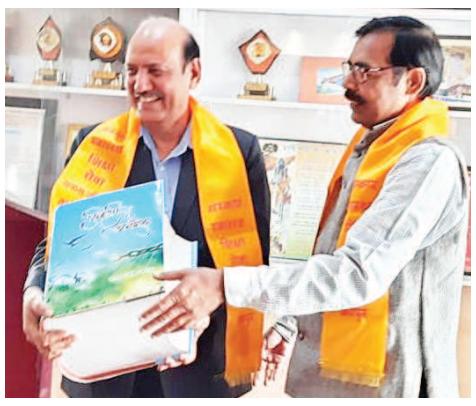

जयपुर। वसंत वैली स्कूल जयपुर में 'साहित्य सरोवर संस्था, मुरलीपुरा' के तत्वावधान में काव्य संध्या का आयोजन किया गया। काव्य गोष्ठी के साथ ही संस्था प्रधान करतार योगी की दो पुस्तकों मैं 'हूँ ना' और 'जीवन अनमोल है' का विमोचन किया गया। काव्य गोष्ठी के अध्यक्ष संस्था के अध्यक्ष गोपीनाथ पुरोहित 'गोपेश' एवं मुख्य अतिथि रिज़वान ऐजाज़ी थे । काव्य गोष्ठी के प्रारम्भ में भूतपूर्व न्यायाधीश पीडी गुप्ता, संस्था के उपाध्यक्ष विश्वनाथ शर्मा, महामंत्री हरिशंकर पारीक, अब्दुल अय्यूब ग़ौरी, सोहन प्रकाश, केसर लाल, कन्हैया लाल सैनी, विवेक श्रीवास्तव, तुलसी राम धाकड़, विवेक सक्सेना ने देशभक्ति, पुरुषार्थ सम्बंधित रचनाएँ प्रस्तुत कीं।

संचालन करतार योगी ने किया व सभी आगन्तुक अतिथियों को विमोचित कृति भेंट स्वरूप प्रदान की। कमल कांत, विमल कांत ने कार्यक्रम के अंत में सभी का धन्यवाद अर्पित किया ।

कोरोना काल की उपलब्धि

अद्भुत हैं सांझा काव्य संकलनों की दुनिया

आज जब दैनिक साप्ताहिक पत्र-पत्रिकाओं में सतो साहित्य का हिस्सा पिछड़ता या सीमित होता जा रहा है। इसके उलट सनसनीखेज और राजनैतिक विश्लेषणों खबरों ने ले ली हैं तब देश भर में बीते दशक में सांझा काव्य संकलनों का लेखकों द्वारा ही मिलजुलकर प्रकाशित किये जाने का प्रचलन काफी बढ़ गया है। इसमें भी सत्तर प्रतिशत महिलाएं भूमिका निभा रही है। इस वक्त मैं भी ऐसे ही दर्जनों प्रकाशकों व पांच हजार से ऊपर लेखकों में हूँ। हालांकि यहां जो साहित्य लिखा जा रहा है उसके पाठक सिर्फ आपसी लेखक ही होते हैं जो आपस में लिखते व सराहते रहते हैं। एक दूसरे को ये अद्भुत सहकारी साहित्य का स्वरूप है। मौजूदा परिस्थितियों में, शायद दशकों पहले किसी ने भी नहीं सोचा होगा साहित्य सृजन के इस संगठित स्वरूप के बारे में, पर लेखकों के लिए ये 'जहां चाह वहां राह' वाली हक़ीक़त साबित हुआ हैं। ये देश के समस्त प्रांतों में लिखा पढ़ा जा रहा साहित्य है। कोरोना जैसे भीत्स समय काल में भी इस सांझा काव्य साहित्य ने अपनी जड़ें उखड़ने नहीं दीं। अपितु ये संवेदना के विचार मर्म में इन लेखकों को एकजुटता प्रदान कर हौसला बढ़ाता रहा। जो सराहनीय रहा, ऐसे समय मैंने भी इस सांझा साहित्य संसार में खुद को डूबोए रखा। यहां रचनाएँ छप रहे संग्रह की कीमत अदा करने के नियम पर ही स्वीकार की जाती हैं, जो इतना बुरा भी नहीं है। सांझा संकलन में रचना छपती है। आपको संपादक की सहमति की भी अनिवार्यता नहीं रहतीं है। बस रचना उत्कृष्ट ज़रूर हो, जिसे लेखक स्वयं संपादित भी करते हैं। सच पूछो तो साहित्य प्रकाशन का का ये स्वरूप बड़ा ही रोचक व अनूठा बन पड़ता है। आज जब मैं इस छोटे से लेख के द्वारा देश भर के पाठक मित्रों को ये बताने जा रहा हूँ। तब तक मैं भी दो सौ सांझा कृतियों में छप चुका हूं। शायद ये साहित्य का चरम भी हो? परंतु संभव तो है। सांझा साहित्य में भाषा विद्वता उसकी ख़ूबी के साथ मौजूद हैं।

आनंद प्रकाश शर्मा
पिपरिया.म.प्र.

ज्योत्सना सक्सेना

आया नया साल

गुमां भूल जाएँ नए साल में हम
लगा ले गले सबको नए साल में हम

खिले फूल से हम हँसे मुस्कुराएं
उदासी भगाएं नए साल में हम

सितारे उतारें धरा झिलमिलाये
करिश्मा दिखाएँ नए साल में हम

उजाला बढ़ाएं तमस को मिटायें
दिए मन जलाएं नए साल में हम

नया रूप धर लें दुखों को भुला दें
जिएं हकीकत नए साल में हम

गिले हों न शिकवे रहें प्यार से हम
क्षमा कर दे सबको नए साल में हम

देश-विदेश की 28 हस्तियों को मिला भारत गौरव अवार्ड

जयपुर। दुबई में ''भारत गौरव अवार्ड'' आयोजित हुआ। जिसमें देश विदेश की नामी हस्तियों को ''भारत गौरव अवार्ड'' से सम्मानित किया गया। ''संस्कृति युवा संस्था'' द्वारा यह अवार्ड समारोह वर्ष 2012 से अनवरत जारी है।

इस अवार्ड समारोह में भारत, ब्रिटेन, अमेरिका, न्यूजीलैंड, पेरिस, मलेशिया, दुबई सहित कई देशों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। इस अवसर पर समारोह को संबोधित करते हुए डायरेक्टर जनरल ऑफ यूएई, एडमिनिस्टर ऑफिसर ऑफ डिपार्टमेंट ऑफ फॉरेन ट्रेड एट इकोनॉमिक डेवलपमेंट इन दुबई के शेख अवाद मोहम्मद मुजरीन ने कहा कि भारतीयों ने पुरे विश्व में भारत का नाम रौशन किया है।

जब भारत को आजादी मिली थी तो किसी ने सोचा भी नहीं था कि एक दिन विश्व पटल पर भारतीय इस प्रकार अपनी पहचान बनायेगें।

आज सभी क्षेत्रों में भारतीय लोग अग्रणी भूमिका निभा रहे है और पूरे विश्व में भारतीयों की धाक बढ रही है।

श्रद्धांजलि

श्रीमती सीमा शर्मा पत्नी श्री अशोक शर्मा (वरिष्ठ पत्रकार) के आकस्मिक देवलोक गमन पर हिलव्यू समाचार परिवार अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करता है व संवेदनाएँ प्रकट करता है। ईश्वर समस्त परिवार को यह दुख सहने की शक्ति व सम्बल प्रदान करे।

हिलव्यू इंटरनेशनल स्कूल

शास्त्री नगर, छबड़ा, बाराँ 07452-222051, 6378213439

हम गढ़ते हैं सम्पूर्ण व्यक्तित्व...

संस्कार और सौहार्द का भाव जहाँ की पहचान है। भविष्य का सपना बुनते बच्चों में आत्म विश्वास और प्रतिभा को उभारने का मौक़ा जहाँ मिलता हो वहीं तो भेजना चाहेंगे... आप शिक्षा अर्जन के लिए अपनी लाडली सन्तान को...

आइये बुनते हैं सपने अपने होनहार की आँखों में फिर से एक बार विद्यालय के द्वार

हिलव्यू इंटरनेशनल स्कूल अब हिंदी व अंग्रेजी दोनों माध्यम में है आपके लिए...

देर न करें बच्चों की स्वास्थ्य सुरक्षा अब हमारी ज़िम्मेदारी है। सभी शिक्षक व प्रबंधन के साथियों को वैक्सीन लग चुकी है और सेनेटाइजर व 2 गज़ की दूरी के साथ ही शिक्षण व्यवस्था संचालित की जाएगी। अतः ऑनलाइन कक्षा के अलावा अब ऑफलाइन में भी बिना भय के भेज सकते हैं आप अपने बच्चों को। विद्यार्थियों के स्वास्थ्य की सुरक्षा ही प्राथमिकता है।

हर बच्चे में एक झिझक होती है बोलने की, लिखने की या अपने आपको प्रस्तुत करने की। हिलव्यू इंटरनेशनल स्कूल वही झिझक मिटाता है। कविता लेखन हो या नृत्य,गायन हो या भाषण अभिव्यक्ति सभी विधाओं के साथ बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए विद्यालय दृढ़ संकल्प है।

Indoor Games, Outdoor Games, Computer Education and Huge Library, Music, Literature, Health, Yoga Sanskars with only one school determined to nurture every talent
"Hillview International School"

इनडोर गेम्स, आउटडोर गेम्स, कम्प्यूटर शिक्षा व विशाल लाइब्रेरी, संगीत, साहित्य, स्वास्थ्य, योग व संस्कारों के साथ हर प्रतिभा को उभारने के लिए दृढ़

'हिलव्यू इंटरनेशनल स्कूल'

hillviewinternationalschool18@gmail.com

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

08

जयपुर >> मंगलवार, 28 दिसम्बर, 2021

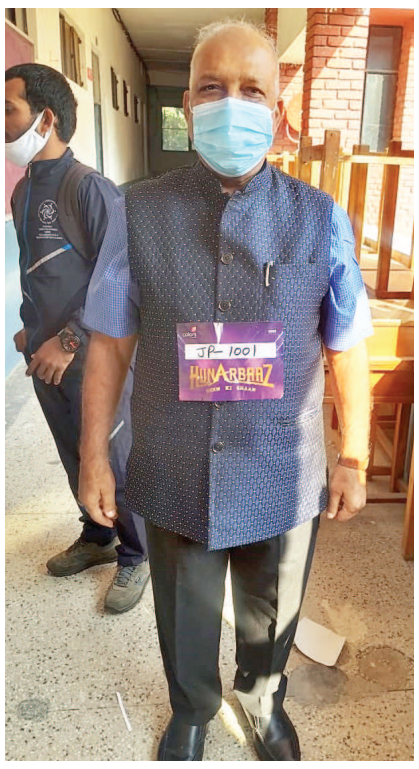

हुनरबाज़ देश की शान इस टीवी शो में किस तरह पहुँचे आप?

उत्तरः कलर चैनल पर लगातार सलमान ख़ान एड कर रहे थे। लाइव प्रतिभा प्रदर्शन का यह टीवी शो है। मैंने भी ऑनलाइन एप के माध्यम से अपना ऑडियो रिकॉर्ड (अक्टूबर के तीसरे सप्ताह में)उन तक पहुँचाया।दोबारा उन्होंने ऑनलाइन एक और वीडियो मुझ से मांगा और 19 अक्टूबर 2021 को मैंने अपना पहला लाइव ऑडिशन जयपुर मानसरोवर में दिया। जिसमें सबसे पहला नंबर मेरा था 1001 नंबर। 3 दिन पश्चात मुझे चयनित होने की सूचना मिली मैं लगातार तीन चरण में पार कर चुका था। 6 दिन बाद पुनः हमें अहमदाबाद में लाइव ऑडिशन के लिए बुलाया गया और 8 नवंबर 2020 को जब मैं बद्रीनाथ यात्रा पर था तो सुबह 8:00 बजे कलर चैनल से मेरे पास फोन आया और बधाई के साथ मुझे सूचित किया गया कि दिल्ली के लिए मुझे चुन लिया गया है और 21 नवंबर को मुझे वहां पहुँचना है। यह पांचवा चरण था।इस लाइव शो में 10 जज बैठे थे जिन्होंने ठुमरी और लाइव बैंड के साथ मुझे घुंघरू बजाने को कहा।

15 मिनट तक ऑडिशन चला। घुंघरुओं की इस ध्वनि की सराहना के साथ-साथ मेरे साँसों के नियंत्रण को उन्होंने ख़ूब सराहा। छठा चरण भी वही अन्य हॉल में कम्प्लीट किया गया।

इन ऑडिशनों में मैंने 'उड़े जब जब जुल्फें तेरी', 'ओ मेरी ज़ोहरे-जबीं', मिथुन जी की नागिन धुन इत्यादि पर घुँघरू धुन बजायी थी। इसके बाद 7वें चरण में मेरा साक्षात्कार लिया गया। अब जनवरी में मुंबई का ग्रेंड फिनाले है जो टीवी पर प्रसारित किया जाएगा। जिसके ज्यूरी मैम्बर्स में अभिनेता मिथुन चक्रवर्ती, अभिनेत्री परीणिति चौपड़ा एवं प्रोड्यूसर एण्ड डायरेक्टर करण जौहर होंगे।

अपने इस सफल मुक़ाम में आप किसको श्रेय देना चाहेंगे?

उत्तरः प्रतिभा कभी स्वयंभू नहीं होती। परिवार का साथ,मित्रों का विश्वास और पारखी नज़रों में आना ही आपको मुक़ाम पर पहुँचाता है। इसके अतिरिक्त स्वयं की मेहनत भी काम आती है। जीवन में अवसर अनायास नहीं प्रयास से आते हैं।

मैं घुंघरुओं की यह धुन शौकिया बजाता था यूँ कई छोटे-मोटे पारिवारिक सामाजिक कार्यक्रमों में मैंने प्रस्तुति दी। जहाँ मेरी प्रतिभा को बहुत उत्साह के साथ सराहा जाता रहा। मैंने कभी इसे प्रोफेशनल अंदाज़ से नहीं देखा था लेकिन 2018 में जयपुर कल्चरल सोसायटी के अध्यक्ष श्री आनंद जी गंगवार ने मुझे प्रेरित किया और मौका दिया। दिसंबर 2018 में वायलिन वादक पद्मभूषण श्री शुभम सरकार के सामने लाइव प्रस्तुति करने का। यह मेरी आधे घंटे की लाइव बैंड के साथ प्रस्तुति थी। इसके बाद लगातार आनंद जी गंगवार के साथ मैंने कई प्रोग्राम दिए। 2019 में ही जेसीएस का लाइव कार्यक्रम हुआ जिसमें मुझे दस हजार लाइक्स मिले। मेरा हौसला और हिम्मत लगातार बढ़ रही थी। गंगवार जी पत्नी कंचन आनंद मुझे लगातार प्रेरित करतीं रहीं। जेसीएस में ही मित्र संजय माथुर ने मुझे बहुत सहयोग किया। धुनों को तैयार करने में और लगातार प्रेरित किया। वे स्वयं एक शानदार बाँसुरी वादक, गायक व संगीत के ज्ञाता हैं। इसके पश्चात 2019 में साकार महिला विकास समिति की अध्यक्ष निशा पारीक जी ने भी मुझे अपने कार्यक्रम में प्रदर्शन का मौका दिया। ज्योति जोशी जी ने 3 मिनट की कथक प्रस्तुति मेरे द्वारा बजाये घुंघुरुओं की ध्वनि पर दी। इस तरह मेरे परिवार,मेरे मित्र गणों ने मुझे लगातार प्रेरित किया।

शहर की शान

(26 दिसम्बर) जन्मदिन की शुभकामनाएँ

जीवन में अवसर अनायास नहीं प्रयास से आते हैं

'हुनरबाज़ देश की शान' टीवी शो में चयनित घुँघरु आर्टिस्ट श्रीमान शंकर गर्ग से एक मुलाक़ात उनके जन्मदिन के अवसर पर

जीवन की आपाधापी और दौड़-धूप के चलते जीवन बस पटरी पर एक्सप्रेस ट्रेन की भाँति दौड़ रहा होता है। राह में ख़ूबसूरत नज़ारे भी आते हैं और स्टेशनों की भांति कई बार ठहराव भी,जो जीवन को ज़िम्मेदारियों से जोड़ते चले जाते हैं।

इस सफ़र में कब हम ख़ुद को ही भूल जाते हैं पता नहीं लगता। पारिवारिक, व्यवसायिक, सामाजिक, आर्थिक जीवन का तालमेल बैठाते-बैठाते स्वयं के भीतर छुपे स्व को ही हम बहुत पीछे छोड़ आते हैं। ज़िम्मेदारियों के अहसास में अनजान बन जाते हैं कभी-कभी खुद से हम। किंतु अवसर और भाग्य का सुंदर रूप यूँहीं जीवन में नहीं आता। परिवार का प्रेम और दोस्तों की दृष्टि विश्वास बनकर जब साथ खड़ी होती है तो जीवन अपना मुक़ाम देर से ही सही मगर पाकर ही रहता है।

यही बात लागू होती है 67 वर्षीय श्री शंकर जी गर्ग घुँघरू आर्टिस्ट पर। आप मुँह के माध्यम से श्वासों का संतुलन कर घुंघरुओं की विभिन्न प्रकार की ध्वनि निकालते हैं।

लाइव बैंड के साथ भी आप घुंघरुओं की ताल व सरगम देने में माहिर हैं। साँसों का नियंत्रण और लगातार मुँह से घुंघरुओं की धुन देना अदभुत कला है। उम्र के इस दौर में आप बेहद चुस्त,दुरुस्त और ज़िंदादिल इंसान हैं।

अक्टूबर 2020 में आप प्रतिभा प्रदर्शन के एक शो 'हुनरबाज देश की शान' में चयनित हुए हैं। राजधानी जयपुर शहर के लिए यह गर्व का विषय है।

जनवरी 2022 में आप कलर चैनल के इस शो के ज़रिए देश-विदेश तक अपनी कला का प्रदर्शन करेंगे। आइये रूबरू होते हैं उनके सफर नामे से-

साक्षात्कारकर्ता-शालिनी श्रीवास्तव

विनर : शंकर लाल, इंस्ट्रुमेंटल कैटेगिरी

मुंह से खनकाए घुंघरू

इंस्ट्रुमेंटल कैटेगिरी में आए 65 वर्षीय शंकर लाल गर्ग की जिजिविषा ने तो लोगों में भरी जोश जगा दिया। शंकर लाल ने इस मौके पर मुंह से घुंघरूओं की आवाज निकाल कर इंस्ट्रुमेंटल कैटेगिरी में बाजी मारी। उन्होंने देशभक्ति गीत हे प्रीत जहां की रीत सदा में घुंघरूओं की लय-ताल भरकर ऐसा माहौल बना दिया मानो परिसर में दर्जनों नृत्यांगनाएं नृत्य कर रही हो।

आप में यह हुनर है, इसका ज्ञान कब और कैसे हुआ आपको ?

उत्तरः यह सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है मेरे जीवन का। माता का जल्दी चला जाना और परिवार में मुझसे छोटी पाँच बहनों का होना, ऐसे में माता की भूमिका भी मैंने निभाई और इसके चलते लगभग 25 वर्ष की आयु तक मैं बिजनेस और घर की पारिवारिक ज़िम्मेदारियों में रहा। सन 1976 में जब हम अजमेर रहते थे वहाँ डॉ पी.एन.शर्मा अंकल चेस्ट स्पेशलिस्ट मेरे पिता के बहुत अच्छे मित्र थे वे कव्वाली और संगीत के बेहद शौक़ीन थे उनके माध्यम से अजमेर उर्स मेले में उस दौरान बदनाम कव्वाल नाम के कव्वाल कानपुर से आया करते थे और कव्वाली के दौरान इसी तरह मुँह से घुंघरू बजाते थे। मैंने दो-तीन साल तक लगातार उनका प्रोग्राम देखा और मैंने भी उस क्ला का अभ्यास शुरू कर दिया। यूँही शौक़-शौक़ में भी मुंह से घुंघरूँ बजाने लगा। चार वर्ष बाद एक बार उर्स में उनके आगमन पर शर्मा अंकल ने कव्वाल साहब के सामने मेरी इस प्रतिभा का प्रदर्शन मंच पर करवा दिया। वे आश्चर्यचकित हुए और उन्होंने मुझे अभ्यास करते रहने को प्रेरित किया। इस तरह मैंने पारिवारिक कार्यक्रम और मित्रों के बीच अपना अभ्यास बनाए रखा। कुछ मित्र उपहास भी करते थे तो कुछ मित्र विश्वास भी बढ़ाते थे।

अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालें?

उत्तरः मैं एक सामान्य परिवार से था। पिता हजारी लाल जी वर्मा जो कि विनोबा भावे जी की खादी से संस्था से जुड़े थे और उन्हीं का प्रभाव उनके व्यक्तित्व में रहा। सादा जीवन और उच्च विचार रहे। माता श्रीमती द्रोपदी पारिवारिक जीवन का आधार रहीं। वे मुझे हमेशा बिजनेस के लिए प्रेरित करतीं थीं। सभी की पढ़ाई पर माता-पिता ने विशेष ध्यान दिया। हम 7 भाई बहन थे। बड़ी जीजी कमलेश गुप्ता, मैं स्वयं फिर पाँच बहनें मधु, उषा, उमा, कुसुम, रेखा इस तरह हमारा भरा-पूरा परिवार था।अतः माता जी के चले जाने के बाद ज़िम्मेदारियाँ ज़्यादा बढ़ गईं। 1982 में शशि गर्ग से मेरा विवाह हुआ। जिन्होंने मेरे जीवन में बहुत सम्बल और सहयोग दिया है। इस परिवार में छोटी बहनों के लिए माँ की कमी मेरी पत्नी ने भी आकर पूरी की। मेरे दो पुत्र हैं आशीष गर्ग और सचिन गर्ग। मेरी पुत्रवधुएं महक गर्ग और नेहा मित्तल भी मेरी पत्नी की तरह सेवाभावी हैं।मैं बहुत सौभाग्यशाली हूँ कि हम आज भी संयुक्त परिवार की तरह रहते हैं।

आप हर वर्ष चार धाम की यात्रा करते हैं इसके पीछे कोई विशेष प्रेरणा ?

उत्तरः 1998 से मैं आज तक निरन्तर यह यात्राएं कर रहा हूँ। अब तो पिछले कुछ वर्षों से पूरा परिवार ही यह यात्रा कर रहा है। मैं एक छोटी सी घटना शेयर करना चाहूँगा कि मेरी पहली यात्रा के दौरान केदारनाथ में रामचन्द्र जी नाम के पंडित जी मुझे मिले। वे 88 वर्ष के थे। मेरी धर्म के प्रति आस्था देखकर उन्होंने कहा कि आप हर वर्ष यहाँ आएंगे। ऐसी प्रेरणा और आशीर्वाद उनसे मिला कि बिना नागा मैं निरन्तर यहाँ परिवार सहित आ रहा हूँ। 2002 में उन्होंने केदारनाथ में कमरे बनाने का आदेश दिया जो उन्हीं की कृपा से हमने पूर्ण किया। इस तरह 2 कमरे वहाँ बनवाये। लगभग 3000 यात्री निःशुल्क वहाँ रुकते हैं और यह ज्ञानकर और महसूस कर मन को सूकून मिलता है कि आस्था का एक दीप इस रूप में वहाँ रोज हमारे नाम का जलता है।

क्या आपने कभी सोचा था कि कभी आपकी प्रतिभा को यह राष्ट्रीय मंच मिलेगा?

उत्तरः कभी नहीं ! मैं डॉक्टर बनना चाहता था लेकिन माता जी की सोच थी कि मैं व्यवसाय करूँ और इसीलिए 18 वर्ष की आयु में मैंने ग्रीटिंग कार्ड ट्रेडिंग का काम शुरू किया। पारिवारिक ज़िम्मेदारियों के चलते कभी यह सोच मन में आ ही नहीं पाई। विवाह के बाद बेटा आशीष और सचिन जीवन में आ गए जिम्मेदारियां बढ़ती रहीं और वक्त गुज़रता रहा। 1988 से 1990 तक में मैं अजमेर अर्बन कॉऑपरेटिव बैंक में डायरेक्टर रहा। इसके बाद 1990 से 2010 तक मैं इसी बैंक में वाइस चेयरमैन बना। उस दौरान 2005 में मैं अजमेर क्लब में डायरेक्टर भी रहा। फिर 2010 में हम परिवार सहित जयपुर शिफ्ट हो गए। पारिवारिक कार्यक्रम, ऑफिसियल प्रोग्राम और मित्र मंडली में अपने इस शौक़ को मैं पूरा करता रहा। लेकिन हाँ सोशल मीडिया का प्लेटफॉर्म बहुत बड़ा प्लेटफॉर्म है इससे मुझे बहुत पहचान मिली जेसीएस से भी मैं इसी माध्यम से जुड़ सका था और देखिए आज मैं इस मुक़ाम पर अकल्पनीय रूप से आ पहुँचा।

आज के युवाओं के लिए कोई जीवन-सन्देश ?

उत्तरः जी हाँ ! यही कि परिवार की शक्ति को कभी नज़रअंदाज़ न करें। जीवन को धार परिवार के साथ और अच्छी संगत से ही मिलती है अतः मित्र बनाएं लेकिन सोच-समझकर। अपने भीतर छुपे कलाकार को पहचानें कि वो क्या चाहता है? कोशिश करें कि अपनी प्रतिभा को ही अपना प्रोफेशन बनाएँ यही मानसिक शांति देगा और इसी से सूकून और सफलता जीवन में आएगी। सोशल मीडिया हो या टीवी,मनोरंजन के किसी भी साधन का लाभ लें उसे अपनी कमज़ोरी न बनाएं। मेहनत, धैर्य और समझदारी जीवन को उस मुक़ाम पर ले जाती है जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर पाते अतः इन्हें ज़रूर अपनाएं।

भावात्मक रागों का सुदृढ़ बाँध : 'जीवन संगीत'

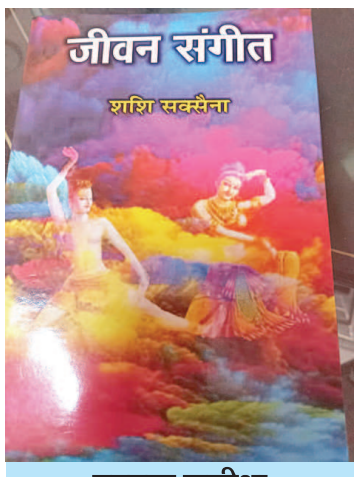

पुस्तक समीक्षा

'स्वान्त सुखाय तुलसीरघुनाथ गाथा' तुलसी ने अपने सुख के लिए काव्य रचना की जो परान्तः सुखाय बन परमानन्द के साथ जन-जन के जीवन से एकाकार हो गयी। सच ही है कविता का फलक इतना विस्तृत हो जो सबके दुखों को अपने में समेट सके। भक्ति, अध्यात्म, विराट सत्ता के प्रति कृतज्ञता, पारस्परिक सामंजस्य, कन्याओं की बेकद्री, श्रृंगार के दोनों रूप-संयोग और वियोग, मानवीय संवेदनाओं और भावनाओं के विविध रंग, देशभक्ति, समानता समय की वीथिकाओं से गुजरती कविताएं ही 'जीवन संगीत' बन राग-रंग बिखराती हैं जीवन में। जिस प्रकार प्रकृति भेद नहीं करती बंटवारे में वैसे ही मनुष्य मात्र में अंतर नहीं मानती हैं जीवन संगीत काव्य की कवयित्री शशि सक्सेना। प्रकृति का यह अनुपम परिवेश गांव, शहर, नगर दुनिया और ब्रह्मांड से अटूट स्नेहिल रिश्ता रखता है। सदा समान फिर मैं और तुम भिन्न कैसे हुए बताओ इंसान, भेद चाहे वह रंग का हो या जाति का, कदापि स्वीकार्य नहीं है, 'मैं किसी जाति में तब बंटा नहीं था, ना मैंने रंग देखा था, ना मैंने जाति पूछी थी, मेरा तो सभी ने ध्यान रखा था।' सदियों से साक्षी बना चांद अब भी मुस्कुराता रहता है। समय के बदलते चक्र में लहंगा चुनरी वाली किशोरियां जींस टॉप वाली हो गई हैं। मोबाइल पर प्रेम संदेश भेजती हैं। पुरुषों के कोप से नहीं डरती है, 'वह तो ज्वालामुखी के भीतर जा उसकी आगनाप सकती हैं। प्रत्येक कविता एक अलग कहानी कहती है।

उनकी स्त्री अब सीता भी नहीं बनेगी। वह दृढ है कि 'अब वह सत्य को दहाड़ कर कहेगी अधिकार अपने सबके सामने रखेगी अब वह अग्नि परीक्षा नहीं देगी। नई पीढ़ी को यदि आगे जाना है तो नई यात्राओं का जोखिम उठाना होगा। आगे बढ़ने के यह नियम बहुत ही सहजता के साथ जीवन में अपनाने का संदेश 'नई यात्रा करना' कविता में लुभाता है. कविता हम सबके मन में स्वाभाविक रूप से बैठी होती है और जब उसे संवेदनशील हिरदय के शब्द मिल जाएं तो बिजलियों की झांझर बन बज उठती है, कोयल के स्वर में गुनगुनाने लगती है और कवयित्री का हृदय 'बरखा रानी' के स्वागत में पलक पांवड़े बिछाने लगता है. 'जीवन संगीत' में रागे ख्याल कुछ ऐसा है कि 'रंग मलूँ और खेलूं होली तुझसे यह सोचते ही हाथों का रंग लाल हो गया /दुपट्टा तेरा छूने की हिमाकत भर की मैंने और दिल मेरा रागे ख्याल हो गया। अद्भुत होती है मन की चेतन अचेतन अवस्थाएं। उसे स्मरण रहती है 'वह पुरानी डायरी डायरी में रखा गुलाब।' 'आरामकुर्सी' पर पसरा मन कभी 'गुब्बारे वाले' बच्चे की झुलसन से व्यथित होता है, कभी अपने भीतरी भय की भूलभुलैया में भटकता है. और कभी 'बसंत' के आकर्षण में बिंध जाता है. विस्मृत नहीं हो पाता है कभी भी कवियत्री के मन से 'मेरा भारत' क्योंकि वह तो रक्तमज्जा में इस तरह से प्रवाहित हो रहा है कि वह स्वयं ही संस्कृति से एकरूपा हो गई हैं और धर्म के साथ सार्थक तर्क कर रही हैं. एक और कविता जो बांधती है वह है 'न्याय की तुला' निर्भया को जब न्याय मिला तो जाने कितनों ने राहत की सांस ली और न्याय पर राष्ट्र का विश्वास दृढ़ हुआ, 'साधु हो या डाकूनेता हो या अभिनेताइसी तरह सजायाफ्ता बनें तो मानो देश प्रगति कर रहा है.। 'जो तटस्थ हैं समय लिखेगा उनका भी इतिहास' रामधारी सिंह 'दिनकर' की इस उक्ति के पक्ष में सशक्तता से उतरी है कविता 'तो क्या हुआ'-- 'कैसे नागरिक हो तुम घृणा की आग लगी चारों ओर और तुम कहते हो, तो क्या हुआ?' वस्तुतः कोमलता अपनी व्यापकता में कठोरता से भी भारी होती है. अपनी कोमलकांत अनुभूतियों को शब्दायीबाना पहनाने और उसे भावात्मकता से अलंकृत करने में सफल हैं शशि सक्सेनाजी।

छंदमुक्त कविताओं के भी अपने नियम होते हैं जो गद्य और कविता में अंतर स्थापित करते हैं। 'जीवन संगीत' की कुछ कविताओं से गुजरते हुए लगता है कि वहां विचार हैं, भाव हैं, परन्तु लयात्मकता अनुपस्थित है. संरचनात्मक गठन में कसावट की अपेक्षा है। विराम चिन्हों की सही व्यवस्था कविता को गहरे अर्थ देती है - ऐसा मेरा मानना है। यहाँ विराम-चिन्हों की अनुपस्थिति मुझे खलती है। भाषा सहज प्रवाहमयी है जो भावों को आसानी से पाठक तक पहुँचा देती है। उर्दू शब्दों का बहुतायत से प्रयोग किया गया है जो सटीक है किन्तु कुछ निश्चित उर्दू शब्दों के साथ नुक्ते का प्रयोग जरूरी होता है। प्रतीकात्मकता भी है और नए पुराने बिम्बों का भी प्रयोग दृष्टिगत होता है यथा- 'हर ओर चौराहों का जोर है।' 'गति तब उसकी आसमानी लगती है।', 'दूसरा हाथ खंजर सा हो गया है।' 'जीवन संगीत' का साहित्यिक जगत में तहे दिल से स्वागत है।

समीक्षक : डॉ. संगीता सक्सेना, जयपु

व्यंग्य

उमाकांत भारती
बिहार

नस्ल

सेठ के गेट कीपर ने एक अर्धनग्न बालक को गेट पर खड़े देखकर हट..हट कहते हुए उसे दुरदुराया। फिर भी ठीठ - सा खड़ा रहा बालक। 'कदाचित बहरा है' सोचते हुए दरबान ने लाठी चमकायी।

सेठ का पांच वर्षीय बालक अपने कमरे की खिड़की से देख रहा था यह मांजरा। उसने टीवी देख रही मां को झकझोरते हुए कहा - माम, वह किस नस्ल का कुत्ता है? दूर जाते हुए दीन बालक को देख कर सेठानी ने कहा कि कुत्ता नहीं है बेटा वह आपकी तरह ही बच्चा है।

फिर दूर हट! दूर हट! कुत्ता! दरबान अंकल ने उस बच्चे को ऐसा क्यों कहा?

गेट कीपर बे-अक्ल है, सेठानी ने जवाब दिया।

पापा भी तो ..हट.. हट.. कुत्ता.. बोले थे उसे? बच्चा बोला।

ज़िंदगी...

उड़ा देती है नींद कुछ,
ज़िम्मेदारीयाँ जीवन की।
रात में जागने वाला हर,
शख़्स आशिक़ नहीं होता।
ज़िंदगी में विरह भी ,
रातों की नींद उड़ा देती है।
पहले ज़िंदगी मे थोड़ी सी,
बैचेनी थी,
अब बैचेनी में थोड़ी सी,
ज़िंदगी रह गई है।

उमेश नाग, जयपुर

दस दोस्त तो दस दुश्मन

भारत में कई नीतिकार हुए हैं, जिन्होंने भारत के धर्म और राज्य को एक दिशा दी है। उन्हीं नीतिकारों में से एक प्रसिद्ध नीतिकार हुए हैं शुक्राचार्य। ऋषि भृगु के पुत्र और दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य की शुक्र-नीति आज भी प्रासंगिक मानी जाती है। शुक्राचार्य ने कई बातें मानव हितार्थ कही हैं। इन में से एक को यहाँ पर उद्धृत कर रहा हूँ।वे कहते हैं कि मनुष्य चाहे कितना भी सज्जन,गुणवान और धर्मनिष्ठ क्यों न हो,ईर्ष्या, द्वेष का थोड़ा-सा भाव उसके आचरण में रहता ही है।यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति मानी गयी है।इस प्रवृत्ति को केंद्र में रखकर नीतिकार शुक्राचार्य समझाते हैं- बहुत से लोगों को अपने मान-सम्मान को बढ़ा चढ़ाकर दिखाने की आदत होती है। इस आदत के कारण कई लोग उनसे ईर्ष्या करते हैं या फिर कुढ़ने लगते हैं। साथ ही इस आदत की वजह से उनके अपने भी उनसे दूरियां बना लेते हैं। अतः इस आदत से बचें। अपनी उपलब्धियों को बार-बार या फिर बढ़ा चढ़ा कर वर्णित न करें। याद रखें आपके अगर दस दोस्त हैं तो दस दुश्मन भी हो सकते हैं। एक बुढ़िया सर पर गठरी लादे अपने गांव से दूसरे गांव पैदल ही जा रही थी। धूप में ख़ासी तेज़ी थी। इतने में एक व्यक्ति वहाँ से गुजरा। वह व्यक्ति घोड़े पर सवार था। बुढ़िया ने आवाज़ दी-बेटा तुम कहाँ जा रहे हो? व्यक्ति ने गांव का नाम बताया तो बुढ़िया ने कहा बेटा, मैं भी वहीं जा रही हूँ। तुम मेरी यह गठरी वहाँ पहुंचा दोगे? मैं भी पीछे-पीछे आ रही हूँ। मारे गर्मी के यह पोटली उठायी नहीं जा रही। घुड़सवार मुकर गया और आगे बढ़ गया। इधर,बुढ़िया के दिमाग में एक बात आई।मैं भी कैसी बेअक्ल हूँ!वह व्यक्ति मेरी पोटली लेकर चम्पत हो जाता तो? उधर, व्यक्ति के दिमाग़ में भी एक बात आई-मैं भी कैसा मूर्ख हूँ! ले लेता बुढ़िया से वह गठरी हो सकता है कुछ माल होता उसमें। घुड़सवार वापस मुड़ा और बुढ़िया से बोला-अम्मा, लाओ यह पोटली, मैं ही पहुंचा देता हूँ। इस पर बुढ़िया बोली-ना बेटा, ना। कुछ तुम समझे कुछ हम समझे।

डा. शिवन कृष्ण रैणा

नये वर्ष में आपके कार्यस्थल पर सफलता के लिए कुछ नुस्ख़े

विजय सुलेख

दोस्तों, हमारे कार्यशील जीवन का लगभग 70% हिस्सा अपने कार्यालय, व्यापार या जीवन निर्वाहन हेतू धन उपार्जन में ही व्यतीत होता है। तो क्यों ना हम अपने कार्यस्थल को साफ-सुथरा रखें और काम करने के माहौल को ख़ुशनुमा रखें।

- सफाई एवं पवित्रता से चित्त प्रसन्न रहता है और कार्य में मन लगता है, अतः अपने कार्यस्थल को साफ-सुथरा रखें।
- ईमानदारी पूर्वक अपने व्यक्तित्व का विश्लेषण करें। ध्यान पूर्वक सुनने की आदत डालें एवं कार्य संबंधित महत्वपूर्ण सूचनाओं, नियम कानूनो को नोट करें और उन्हें समयानुसार लागू करें।
- सम्पन्नता प्राप्त करने के लिए मेहनत, कौशल और लक्ष्य का ध्यान रखना अति आवश्यक है।
- मधुर भाषण करें, कम बोलें, सोच समझकर बोलें। याद रहे, दो व्यक्तियों के बीच दख़लन्दाज़ी करना असभ्यता का परिचायक है। सलाह बहुत कीमती है, उसे बिन मांग ना दें।
- समय बलवान है, उसकी कद्र करें। समय के पाबंद रहें एवं सुनियोजित ढंग से अपनी सीट का कार्य पूरा करें।
- परिणाम के बारे में सोचें, सोच-समझ कर निर्णय लें। बदलते प्रतियोगी व्यावसायिक परिवेश में स्वयं को ढाल कर ग्राहकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर अत्याधुनिक तकनीकी सुविधा देते हुए उत्तम एवं श्रेष्ठतम सेवाएं प्रदान करें।
- जो व्यक्ति स्वयं प्रसन्न रहता है, वह दूसरों के लिये मुस्कराहटों के पूर बिखेरता है, लोकप्रियता उसके क़दम चूमती है.

कार्यस्थल पर आने व हर व्यक्ति का विशेष खयाल रखें। संतुष्ट ग्राहक सेवा प्रगति का आधार है।

- अपने कार्य से संबंधित जानकारी बढ़ायें एवं उसमें सुधार हेतु नवीनतम प्रयोग करें। स्वयं को प्रभावशाली बनायें एवं अपनी नेतृत्व शक्ति को बढ़ावें।
- अपने सीनियर, साथियों व अन्य स्टॉफ की आवश्यकताओं का ध्यान रखें एवं दिये गये कार्य के अनुसार उचित प्रशिक्षण की व्यवस्था करें। उनके 'कंस्ट्रक्टिव' सुझावों का स्वागत करें।
- किसी भी नये काम से परेशान ना हों, सलाह करें, विचार करें और तन्मयता से जुट जायें। कार्य स्वतः पूर्ण हो जाएगा। जरूरी काम को प्राथमिकता दें। याद रहे 'अन-अटेंडिड' छोटे-छोटे काम एक समय पर अत्यावश्यक हो जाते हैं।
- अपने से बड़ों का यथोचित सम्मान करें, सबकी प्रगति में अपनी उन्नति समझें। व्यापक सोच, अनुभव व ज्ञान से सबके प्रति सहायता पूर्ण दृष्टिकोण रखें।
- खाली समय में कार्य-संबंधी पुस्तकों, परिपत्रों, मार्गनिर्देशों का अध्ययन कर ज्ञानार्जन करें। ज्ञान बांटने से और अधिक बढ़ता है जैसे कि बीज के बोने से फसल।
- सबकी प्राइवेसी का सम्मान करें, किसी के डेस्क के पेपर पढ़ना अशिष्टता है। काम के अच्छे बनें, कान के कच्चे ना बनें। अनगर्ल बातों (गप्पों) में रुचि लेकर अपना एवं दूसरों का समय व्यर्थ न करें।
- बॉस की बातों को ध्यानपूर्वक सुनें, हर काम समय पर करें। अपनी संस्थान की बेहतरी के लिए अपनी शक्ति के अनुसार भरपूर प्रयास करें।
- टीम वर्क में विश्वास एवं धैर्य रखने से, व्यवहार कुशलता और सामूहिक प्रयासों से सब कार्य सम्पन्न हो जाते हैं।

लघुकथा

भ्रष्ट अधिकारी

अजय कुमार सिंह, बिहार

सुनीता एक गरीब, मेधावी और खूबसूरत लड़की है। गरीबी उसके मार्ग में रोड़ा की भूमिका में थी पर उसने सदा रोड़े को रौंदने का काम किया। एम. एस सी., बी. एड. करने के बाद उसे एक सरकारी हाई स्कूल में साइंस टीचर की नौकरी मिली। अब उसके घर की आर्थिक स्थिति सुधरी।

काफी लगन और मेहनत से वह सिविल सर्विसेज की तैयारी में जुट गई। अविवाहित लड़कियों को जिन प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, सुनीता उन सारी कठिनाईयों से दो दो हाथ करती है। चन्द दिनों पहले एक नौजवान सुनीता का जिला शिक्षा अधिकारी बनकर आया। उसे वह भा गई। वे उस पर तरह तरह से डोरे डालने का प्रयास करने लगे। एक दिन वह क्लास में पढ़ा रही थी, डी ई ओ साहब क्लास में आकर बैठ गए। वह बोल्ड होकर पढ़ाती रही और पीरियड समाप्ति के बाद वह ऑफिस आ गई। साहब ने उस पर गलत पढ़ाने का आरोप लगाया। वह डटी रही और कहा,आई एम राइट. (मैं ठीक हूं।) साहब बोले, डू यू नो, आई केन डिसमिस यू?.(क्या आपको पता है कि मैं आपको बर्खाश्त कर सकता हूँ?)

यू गो थ्रू द पावर्स वेस्टेड. डू नॉट ट्राय टू गो बियोंड योर एरिया.(अपने अंदर सन्निहित अधिकारों का अध्ययन करें। अपने अधिकार क्षेत्र से बाहर जाने की कोशिश न करें।) साहब ने मैडम को अपने कार्यालय में आने को कहा। इस पर मैडम आग बबूला होकर बोली, आप मुझे मौखिक कोई आदेश निर्गत न करें। जो कहना हो लिखित में कहें। स्मरण रहे, अपनी गलत मंशा के कारण आप कभी भी नंगा हो सकते हैं। साहब तमतमा कर निकल पड़े। अगले ही दिन यू. पी. एस. सी. का रिजल्ट आया। सफल उम्मीदवारों की सूची में सुनीता का नाम वन टू टेन में है। प्रत्यक्षदर्शी बताते है कि रिजल्ट देखकर साहब के चेहरे का रंग बदल गया। शाम को एक ख़ूबसूरत सा गुलदस्ता हाथ में लिए शुभकामना एवम बधाई देने साहब ने सुनीता के घर की ओर रुख़ किया।

दिल था हमारा पत्थर, पानी बना दिया...

सहराओं में बैठी थी
सहमी सी ज़िन्दगी ,
उसने इसे पढ़ा और
मानी बना दिया।
दिल था हमारा पत्थर,
पानी बना दिया ।
हम फाँकते थे धूल
किसी गरीब की तरह,
वो मिला तो इस फ़कीर को
रानी बना दिया,
दिल था हमारा पत्थर,
पानी बना दिया ।
लेकर इक इंद्रधनुष
आसमां की ज़ेब से,
उदास रंग थी चुनर,
धानी बना दिया,
दिल था हमारा पत्थर,
पानी बना दिया।
जो होती गुफ्तगू तो
कोई बात नहीं थी,
ख़ामोश रहकर उसने
कहानी बना दिया ,
दिल था हमारा पत्थर
पानी बना दिया...

डॉ कल्याणी कबीर
जमशेदपुर झारखंड

रिश्ते

वो हाथ पकड़ना मेरा...

डा. कृष्ण मनु, धनबाद

दिल्ली से चण्डीगढ़ की यात्रा के क्रम में फ्रेश होने के लिए 'हवेली' में रूकना हुआ। कार से नीचे पांव रखते ही पूरे बदन पर सनसनी सी दौड़ गई। लगा जैसे बर्फ के समुद्र में आपादमस्तक डूब गया होऊं। शीतल हवा के झोके की गरम कपड़े से जंग छिड़ गयी थी जिससे कपड़ा बेचारा हार हार जा रहा था। मैंने किसी तरह पाव भाजी के कुछ टुकड़े उदरस्थ किये और कॉफी पीया। बड़े पुत्र, बहू और दो पौत्रियों के साथ मैं सपत्नी था।

दोनों पोतियों की तो बन आई थी। ठंड को ठेंगा दिखाती हुई दौड़ लगा रही थीं। तरह तरह के व्यंजन का स्वाद सभी ने लिया। फिर वहां चले जहां गाड़ी पार्क की गयी थी। लौटने के क्रम में मैं सीढी पर लड़खड़ा गया। मैं सम्हलता कि साथ चल रहे मेरे पुत्र ने तेजी से बढ़ते हुए मेरा हाथ थाम लिया। मैं रेलिंग से टकराने से बच गया।

मैंने बेटे की ओर देखा। देखने के क्रम में एकाएक एक कौंध सी उठी और मेरे जेहन पर चित्रपट सा चल पड़ा। पुत्र का बालरूप.. खेलते हुए उसे ठोकर लगना.. गिरने से पहले उसे गोद में उठा लेना..गोद से चिपट कर उसका आश्वस्त होना लगा, रील तेजी से चलकर समाप्त हो गयी हो।

वह मुझे सभालते हुए गाड़ी तक ला रहा था और मैं सुकून की छांह में खुद को आराम करता हुआ महसूस कर रहा था।

प्रेरक प्रसंग

मेरे पापा...

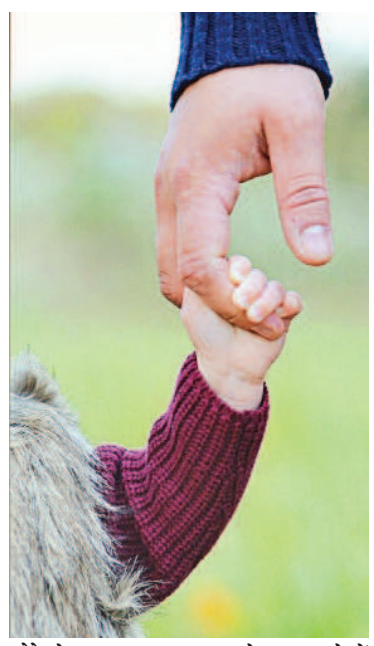

मेरे लेक्चरर पापा का जन्म तो एक क़स्बे में हुआ था मगर अपने अन्य भाईयों की तरह उन्होंने भी शहर में बसने का फ़ैसला लिया और जयपुर में ज़मीन ख़रीदी जिस पर हर गर्मियों की छुट्टियों में आकर वे मकान बनवाने का काम करते थे। कैसे , कितनी तकलीफ़ों से वो गुज़रे , ये एक अलग ही कहानी होगी ! बहरहाल, फ़्रंट-पोर्शन तैयार होने पर उन्होंने एक व्यापारी को मकान किराए पर दे दिया, यह सोचकर कि बच्चों की उच्च शिक्षा के वक़्त परिवार यहाँ ले आयेंगे। उस व्यापारी के ट्रक चलते थे जिससे फल-सब्जियों वग़ैरह की टोकरियों से उसका घर भरा रहता था। इधर सामने वाले पड़ोसी ने व्यापारी से संबंध बढ़ाने शुरु कर दिये। नतीजतन समय आने पर उस व्यापारी ने मकान ख़ाली करना तो दूर , उस पड़ोसी की शह पर पापा पर मुक़दमा और जड़ दिया कि 'मैं इस घर में इतने सालों से रह रहा हूँ !' इस पूरी प्रक्रिया के दौरान हम बच्चों ने अपने मेहनती माता-पिता को कितना परेशान देखा है ये शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता है । अपने ही बनाये मकान के हक़ के लिए उन्हें बार बार मुक़दमा लड़ने हेतु जयपुर आना पड़ता था । कितनी मानसिक और शारीरिक तकलीफ़ उन्हें उठानी पड़ती थी, साथ ही धन का खर्च अलग। लेकिन मेरे पापा कोई टूटने वाली हस्ती नहीं थे। न ही वो मेहनत से घबराने वाले थे । आख़िर मुक़दमा जीते और हमें अपने घर में रहना नसीब हुआ।

मेरे पापा ने हमें हमेशा यही सिखाया कि किसी के प्रति मन में द्वेष भाव मत पालो, चाहे वो तुम्हारा कितना ही नुक़सान कर ले। क्योंकि मनोमालिन्य रखने से अपना ही तो मन ख़राब होगा न् और सिद्धांत तो ये कहता है कि अपने मन को साफ़ रखो ।

अपने इसी सिद्धांत के चलते पापा ने उस पड़ौसी से सम्मानजनक संबंध बनाये रखे। बस यहीं से मेरे और पापा के बीच विचारों का मतभेद शुरु हुआ । छोटी थी तो क्या, इतनी समझ थी कि जिस इंसान ने आपके माता-पिता को बेवजह परेशान किया हो , वो सम्मान का पात्र कभी नहीं हो सकता । बड़ों-छोटों सभी को समान रूप से सम्मान देना मेरे संस्कारों में शामिल है । मगर ये परिवार?

'नहीं, मैं इन अंकल -आंटी को नमस्ते नहीं करूँगी । नहीं करूँगी, नहीं करूँगी, नहीं करूँगी !'

'ग़लत बात।', पापा का कहना होता।

लेकिन मेरे मन में ये बात बैठ गई थी कि ये परिवार इज़्ज़त के लायक़ है ही नहीं।

'मेरी मर्ज़ी!', और बग़ावती तेवर भी पैदाइशी थे।

ख़ैर !

कुछ समय बाद जब मकान का पिछला हिस्सा बन कर तैयार हुआ तो पापा ने एक-एक साल की लीज़ पर उसे भी किराए पर उठाना शुरु कर दिया और इस पड़ौसी परिवार ने भी एक एक किरायेदार से दोस्ती बढ़ाना और लगातार आना जाना ! पर कोई ना। मम्मी सहित हम सब ठहरे किताबों से मगजमारी करने वाले बशर, हमें क्या कोई आये कोई जाये! पापा की पोस्टिंग बाहर थी ही।

जब तीसरे किरायेदार रह रहे थे, तब नंबर आया सर्वेंट क्वार्टर बनाने का , जिसके रस्ते में ज़ाहिराना तौर पर पिछला हिस्सा की खिड़कियाँ पड़ने वाली थीं। । हालाँकि बामुश्किल एक महीना लगना था इस काम में, मगर इसी पड़ौसी ने एक बार फिर अपनी हक़ीक़त उजागर करते हुए हमारे किरायेदार को शह देकर फिर से स्टे लाने का काम करवा दिया । एक बार फिर से मेरे मम्मी पापा की तकलीफ़ें शुरु ... एक बार फिर से पापा को तन-मन-धन तीनों से तोड़ने की पूरी तैयारी कर दी थी उस परिवार ने । छोटा सा काम कितना लंबा खिंच गया। बार बार पेशी पर छुट्टी ले-लेकर आना, वकील के यहाँ चक्कर लगाना .. बिना किसी वजह से!

वो एक अलग बात है कि न्याय बहाल हुआ, हम मुक़दमा फिर से जीते और उसे मकान ख़ाली करने का हुक्म मिला ! कुछ वक़्त के बाद एक जानकार के हाथों इस किरायेदार ने अपनी बेतुकी हरकत पर बहुत पछतावा भेजा था क्योंकि हमने कभी भी किसी किरायेदार को परेशान नहीं किया था ।

और इस बार मैं, जो कि समझदार हो चुकी थी, पहुँच गई पापा का सामना करने ..

अब बोलिए पापा कि कौन सही है कौन ग़लत!

पापा तब तो कुछ नहीं बोले , पर जब उक्त पड़ौसी के हाथ-पॉव में फ्रैक्चर हो गया और वो अस्पताल में भर्ती हुए, तो पापा मुझे लेकर एक संवेदनशील इंसान का मानवता-धर्म निभाते हुए करने अस्पताल ज़रूर पहुँच गये!

ऐसे थे मेरे पापा!

डॉ. कविता माथुर, जयपुर

कहानी

स्त्रीत्व का सच

डा. मनोरमा गौतम

जेठ की तेज दुपहरी में बस से उतर कर स्वयं को गर्म लू से बचाते हुए अपने दुपट्टे से सिर को ढककर सड़क के किनार-किनारे चलती जाती है कविता, बस स्टैंड से थोड़ी सी ही दूरी पर उसका घर है, कांधे पर बैग टांगे पसीने से लतपथ माथे पर चिंता की शिकन लिए वो खटखटाती है दरवाजा, जैसे ही माँ दरवाजा खोलती हैं। माँ की प्रश्न भरी आँखों को देखकर वो समझ जाती है कि माँ क्या जानना चाहती हैं इससे पहले कि माँ कुछ पूछती कविता खुद ही बोल पड़ती है। इंटरव्यू तो अच्छा गया माँ अब देखतें हैं रिजल्ट क्या आता है? कमरे में जाते ही टेबल पर बैग रखकर बेड पर बदहवास वो पड़ जाती है। बिस्तर पर लेटे- लेटे उसका मन जीवन के तमाम उतार चढ़ाव में खो जाता है। अपने भाग्य को कोसते हुए बुदबुदाती है कविता-नहीं सोंचा था कि यह दिन भी आएगा। ज़िन्दगी की भागदौड़ में तथा उच्च स्तरीय शिक्षा ग्रहण करने की प्रबल इच्छा में कभी मौका ही नहीं मिला स्वयं के बारे में सोंचने का। एक के बाद एक डिग्री लेती चली गई पता ही नहीं चला कब वक्त हाथ से निकल गया। कब तीस पार कर गई इसका आभास तक नहीं हुआ। जब होश आया स्वयं के बारे में सोंचने का तब तक वक्त रेत की तरह हाथ से फिसलकर निकल चुका था। जीवन की रंगीनियों से कभी गुफ़्तगू ही नहीं कर पाई। जीवन में काली स्याही, नीली स्याही के अतिरिक्त और भी कई रंग होतें हैं इसका आभास तब हुआ जब सखियाँ, सहेलियां या हम उम्र लडकियाँ अपने पति, प्यार, यार तथा उनके साथ बिताए लम्हों के बारे में शरमाई नजरों तथा मीठी मुस्कान के साथ बताने लगी। तब मेरे मन के कोने में छुपी स्त्रीनुमा स्वाभाविक प्रवृति गुदगुदाने लगी। तब कहीं जाकर जाना मैनें कुछ तो था खालीपन जीवन में जिससे मैं अनभिज्ञ थी या जिसे मैं चाहकर भी महसूस नहीं कर पा रही थी। जीवन की इस वीरानगी में ठूंठे पेड़ सा मेरा मन जैसे भूल बैठा था कि बसंत भी होता है और ये बसंत मुरझाए जीव में भी प्राण भर देता है। जीवन की रंगीनियों से अनभिज्ञ मैं जैसे पाषाण हो चली थी। मेरी अंतर्निहित सम्वेदना कंजूस सेठ की तिजोरी के समान कहीं किसी कोने में छुपी बैठी थी। लोग तो मुख पर पर्दा डालतें हैं किन्तु मैं पगली अपने हृदय को ही चार दीवारी में कैद कर बैठी थी। न जाने किस भय, किस आशंका से त्रस्त अपनी भावनाओं को तिल-तिल कर मारे जा रही थी। मेरे भीतर उद्वलित मनोभाव जैसे चीख-चीख कर कह रहें हों मुझसे - मत मारो मुझे , मत करो मुझे पिंजड़े में कैद, लेने दो मुझे ज़िन्दगी का आनन्द , मैं भी प्रत्येक जीव की तरह प्राणी मात्र हूँ , मुझमे भी भावनाएं उद्वलित होती हैं , मैं भी पीना चाहती हूँ ज़िन्दगी का रस , लेकिन नहीं सुनी मैंने अपनी अंतरात्मा की आवाज क्या करती विवश थी मैं अपनी मर्यादाओं के हांथों , जकड़ रखा था मुझे मेरे संस्कारों ने। एक स्त्री होने के नाते स्त्रीनुमा भावी जीवन की कल्पना मेरे मस्तिष्क में आना स्वाभाविक था। उम्र के तीस पार कर चुकी थी फिर कौन सी किशोरावस्था की भांति लुका- छिपी वाले प्रेम की या अल्हड़पन की कामना रह गई थी। थी तो बस एक स्थिर और सुखमय जीवन की इच्छा। कहीं न कहीं मन के किसी कोने में एक जीवनसाथी की तलाश थी जिसके साथ बाकी की बची ज़िन्दगी सुकून से बिता सकूँ। एक ऐसा साथी जो जीवन के आखिरी पड़ाव तक साथ दे। मेरी अपनी संकुचित मानसिकता या फिर मेरे भीतर का डर जो भी था जिसके कारण मैंने अपना विवाह समय एवं भाग्य भरोसे छोड़ दिया था। पता नहीं क्यूँ ऐसा लगता था कि ऊपर वाले ने मेरे लिए भी किसी को बनाया है जब सही वक्त आएगा जब मेरा भाग्य जागेगा तो वो मुझे मिल ही जाएगा। यही सोच मैं जीवनपथ पर अग्रसर थी बस अपनी जिम्मेदारियों तथा उत्तरदायित्वों में संलग्न जीवन निर्वाह करती रही। धीरे - धीरे समय निकलता गया। न जाने कितने वसंत आए और चले गये। लेकिन मेरे जीवन का सूनापन अपने वसंत का इंतज़ार करता ही रहता था कभी तो वो आएगा मेरे जीवन को हरियाली से भरने। फिर एक दिन वो समय भी आया और मेरा मन मोरनी की तरह नाचने लगा। समर मेरा जीवनसाथी एक झटके में आया मेरे जीवन में। मैं अपनी उम्र की सीमाओं को लांघ बच्चों की तरह किलकारियां भरने लगी। मेरा हीरनी रुपी मन कुलाचे मारने लगी। कल्पनाओं के हिंडोले पे सवार मैं सपनों की दुनिया में गोते लगाए जा रही थी। लेकिन भाग्य को शायद कुछ और ही मंजूर था मेरी ये खुशियाँ ज्यादा समय तक नही रहने पाई। शादी की पहली ही रात को मेरा सपना चूर चूर हो गया। समर की दूरियों नें यह एहसास करा दिया था कि मेरी कोई जगह नहीं थी उनके जीवन में। हमारी पहली ही रात को समर ने परिवार की जो परिभाषा मुझे बताई थी उसकी परिधि में मैं थी ही नहीं , समर ने कहा था मेरे परिवार में सबसे पहले आती है मेरी माँ उसके बाद आता है मेरा परिवार यानि कि मेरे पिता , भाई - भाभी , बहिन - बहनोई , भतीजा - भतीजी , भांजा - भांजी आदि और उन सबके बाद आती हो तुम मतलब कि उनकी पत्नी (मैं)। जबकि सच्चाई यह है कि न तो सिर्फ अकेले माँ ही परिवार होती है और न ही सिर्फ अकेली पत्नी ही परिवार होती है जबकि परिवार का मतलब ही है जहाँ माता - पिता , भाई - बहिन , पति - पत्नी, बच्चे आदि सभी एकजुट होकर एक साथ एक छत के नीचे प्रेमभाव से रहते हो। एक पल को मुझे लगा कि शायद उनके जीवन में मैं अलग ही महत्व रखती होऊँगी इसीलिए उन्होंने मुझे परिवार की श्रेणी से बाहर रखा मैं इस बात को महसूस ही कर पाती कि उससे पहले ही समर ने मेरा भ्रम तोड़ दिया। समर नें कहा कि - अभी तुम्हें मेरे परिवार में शामिल होने में समय लगेगा , पहले एक - दो साल मैं तुम्हें समझूंगा , परखूंगा , जब तुम मुझे परिवार में शामिल करने योग्य लगोगी तब मैं तुम्हें अपने परिवार में शामिल करूँगा और उसके बाद ही कहीं हम अपने जीवनपथ पर अग्रसित होंगे। उस समय समर नें यह भी कहा कि यदि तुम्हें मुझे खुश रखना है तो पहले मेरे परिवार को खुश रखो। जबकि सच्चाई यह है कि विवाह के बाद ही लड़की उस परिवार की सदस्य बन जाती है फिर शामिल करने या न करने का कोई मतलब ही नहीं बनता। धीरे - धीरे वक्त निकलता गया मुझे लगा कि मैं अपने प्यार से समर का हृदय जीत लूंगी और एक दिन ऐसा आएगा कि समर भी मुझे प्यार करने लगेंगे लेकिन मेरा विश्वास झूठा साबित हुआ मेरे रोने - धोने से कभी - कभार समर ने मेरे से शारीरिक सम्बन्ध तो बना लिया लेकिन वो प्यार वो सम्मान नहीं दे पाए जो एक पत्नी को चाहिए था। समर के लिए मैं वो एक लड़की थी जिसे उन्होंने शादी कर अपने घर में रहने का स्थान दे दिया था , मुझे मेरी जरूरत की वस्तुएं लाकर देने , मेरा खाना खर्चा उठाने से अधिक मैं उनके लिए कुछ नहीं थी। समर का कहना था कि तुम्हारे पास रहने के लिए घर है , खाने - पहनने की कमी नहीं है और फिर क्या चाहिए तुम्हे , तुम बस चुपचाप मेरे घरवालों की सेवा करों और हाँ जुबान बंद करके रखना , तुम समझना कि तुम गूंगी हो , अगर मेरा प्यार चाहती हो तो जुबान पर ताला लगाकर रखना। ..... समय अपनी गति से आगे बढ़ रहा था और मेरी भी सहनशीलता खत्म होती जा रही थी। समर के दिल में स्थान बनाने तथा उनका प्यार पाने के लालच में मैं एक पत्नी और बहू बन उनका तथा उनके परिवार वालों की तमाम जिल्लतों को झेल रही थी। समर की माँ - बहिन को मैं कानी आँख भी नही बर्दास्त थी उनकी नज़रों में मैं कंगालों की खानदान से आई एक ऐसा बोझ थी जिसको मेरे माता पिता ने कूड़ा समझकर मुफ्त में फेंक दिया जिसकी खुंदस वो मेरे पे जब चाहे उतार देते थे। दिन प्रतिदिन उन लोगों के अत्याचार और भी अधिक बढतें जा रहें थे जोकि असहनीय थे ऊपर से समर का बर्ताव मेरे प्रति और भी क्रूर हुआ जा रहा था। परिस्थितियां एकदम विपरीत होती जा रही थी , मेरा दम घुटने लगा था। एक अनजाना सा भय आ घेरा था , मैं डर के साये में जीवन जीने लगी थी। आखिर हुआ वही जिसका भय था उन लोगों ने अपनी मोहरें बिछाई और जिसमे उनकी जीत हुई। उन लोगों ने न सिर्फ मुझे शारीरिक और मानसिक आघात पहुंचाया बल्कि निकाल बाहर किया मुझे अपने घर तथा जीवन से। और समर मेरा जीवनसाथी ऐसा करने से पहले उसने जरा भी नही सोंचा कि ऐसी स्थिति में मेरा क्या होगा , उसका हृदय मेरे लिए जरा भी नही पसीजा। नही झिंझोड़ा उसकी आत्मा ने उसे ऐसा कुकृत्य करने से पहले , नहीं याद आए उसे वो साथ फेरे , सात वचन , सात कसमें जो उसने मंडप में भरे समाज के सामने खाई थी। पंख कटे पक्षी के समान मैं जिसका न धरती न आसमान। बेघर , बेरोजगार , एकदम लाचार त्रिशंकू की तरह अधर में लटकी जिसका न माईका न ससुराल। तब मैनें सोंचा बस अब मैं नहीं रोऊँगी और न ही दर दर भटकूँगी , अब मैं लड़ूंगी विपरीत परिस्थितियों से और कायम करूंगी स्वयं का वजूद। अब मैं रुकुंगी नहीं मैं आगे बढ़ूँगी और तब तक बढ़ूँगी जब तक पा नहीं लुंगी अपना वजूद। मैं संघर्ष करूंगी और बनाऊँगी अपनी एक अलग पहचान। नहीं चाहिए मुझे किसी मर्द का सहारा और ऐसे मर्द का तो बिल्कुल नहीं जो मुझे शर्तों में बांधता हो।....

कविता अपने अतीत में खोई हुई थी तभी माँ के स्पर्श से उसका ध्यान भंग हुआ, माँ ने उसके सिर पर प्यार से हाँथ फेरते हुए कहा बेटा चिंता मत करो जो भी होगा अच्छा ही होगा, मेरी बेटी बहुत बहादुर है , तुम्हें सफलता जरुर मिलेगी, भगवान के घर देर है अंधेर नही..... अब चलो हाँथ - मुंह धो लो मैं खाना गर्म कर देती हूँ , खाना खाकर सो जाना वैसे भी आज बहुत थक गई हो।

महिला सशक्तिकरण की मिसाल बनाः छबड़ा

नारी शक्ति को समर्पित छबड़ा के उच्च पद

2021 जाते-जाते छबड़ा शहर को एक सौगात दे गया। जहाँ एक ओर बात की जाती है महिला सशक्तिकरण की वहीं एक सशक्त उदाहरण स्वरूप बनकर उभरा है छबड़ा नगर जिला बाराँ। छबड़ा के न्याय, प्रशासन, अनुशासन विभागों के सर्वोच्च पदों पर वर्तमान में महिलायें पदासीन हैं। यह एक सुखद संजोग है। हिलव्यू समाचार नारी शक्ति को प्रणाम करता है एवं इन महिला अधिकारियों का संक्षिप्त परिचय व संदेश के साथ आइये रूबरू होते हैं इन युवा महिला शख़्सियतों से...

साक्षात्कारकर्ताः शालिनी श्रीवास्तव

प्रीति नायक (आरजेएस)

अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश छबड़ा
जॉइनिंग बैच 2002

- 2012 में अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट के रूप में पदोन्नत।
- मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट धौलपुर 2017 के रूप में तैनात रहीं।
- 2017 में अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश के रूप में पदोन्नत हुईं।
- 2018 से 2021 की तुलना में विशेष न्यायाधीश डकैती प्रभावित क्षेत्र धौलपुर के पद पर पदस्थापन हुआ। अतिरिक्त जिला न्यायाधीश झालावाड़ के रूप में वर्तमान में पदभार सम्भाला।
- मार्च 2021 से अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश के रूप में छबड़ा में पदस्थापित हैं

महिला सशक्तिकरण के इस दौर में छबड़ा प्रशासन में उच्च पदों पर महिलाओं का होना आपको कैसा महसूस होता है?

पिछले कुछ वर्षों से महिला सशक्तिकरण के दौर में तेजी आई है। राज्य सरकार सरकार की मंशा इस तरह से परिलक्षित होती है कि पुरुष प्रधान क्षेत्रों में भी जो कि संवेदनशील क्षेत्र भी कहे जाते हैं उन क्षेत्रों में भी महिलाओं को पोस्टिंग मिलने लगी है। महिलाओं की शक्ति, दृढ़ता और कार्यशैली ने आम जनता में वह सरकार में विश्वास जागृत किया है। इससे महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ेगा और महिला शक्ति को बल मिलेगा। संवेदनशील पदों पर भी महिलाओं को पोस्टिंग मिलना इसका प्रमाण है।

मनीषा तिवारी (आरएएस)

उप जिला कलेक्टर (एसडीएम) छबड़ा

- 2007 उपजिला कलेक्टर, झालावाड़
- 2017 उपजिला कलेक्टर असनावर, भवानीमंडी
- 2020 से निरन्तर उपजिला कलेक्टर छबड़ा, बाराँ

इस दौरान संयोग से छबड़ा प्रशासन में, न्यायिक पद पर, पुलिस प्रशासन में एक साथ महिला शक्ति का उच्च पदों पर आसीन होने का संयोग कैसा अनुभव दे रहा है आपको?

यह बहुत ख़ुशी की बात है और गौरव का विषय है कि अब राज्य में ही नहीं पूरे देश में महिलाओं को संवेदनशील पदों पर स्थान मिलने लगा है।

अगर हम छोटे स्तर की भी बात करें तो पेट्रोल पंप में पेट्रोल भरने से लेकर हवाईजहाज चलाने तक और हवाईजहाज से लेकर लड़ाकू विमान तक, लड़ाकू आर्मी में भी अब संवेदनशील पदों पर महिलाओं को आगे आने का मौक़ा दिया जा रहा है। इससे यह महसूस होता है कि महिलाओं की कार्यशक्ति, दृढ़ता और कार्यकुशलता को अब उस विश्वास के साथ देखा जा रहा है। जिस विश्वास कि वह तलबगार थीं। पिछले कुछ समय से लगातार इस तरह की पोस्टिंग महिला जगत में आत्मविश्वास भरती है। असली महिला सशक्तिकरण का प्रमाण यही है कि अब हर क्षेत्र में लिंगभेद मिटे। आम लोगों में व सरकार में महिलाओं की कार्यशैली को लेकर विश्वास बढ़े।

पूजा नागर (आरपीएस)

उप अधीक्षक (डीवाईएसपी), छबड़ा
पोस्टिंग बैच -2019
बेसिक ट्रेनिंग आरपीए जयपुर से
फील्ड ट्रेनिंग उदयपुर से

छबड़ा में आपका हार्दिक अभिनंदन !

छबड़ा में आप बतौर पुलिस उप अधीक्षक के पद पर आपने ज्वाइन किया है। जैसा कि आपको ज्ञात होगा आपसे पूर्व यहाँ पर आरजेएस और एसडीएम भी महिला शक्ति आसीन हैं तो आप कैसा महसूस कर रही हैं?

देखिए जिस दौर में हम जी रहे हैं वहां पर महिला और पुरुष का भेद तो काफी हद तक कम हो गया है और यह बहुत खुशी की बात है कि छबड़ा में दोनों उच्च पदों पर महिला शक्ति ही मौजूद है।

हमारे विभाग में ऐसे तो आत्मविश्वास हमारी ट्रेनिंग के दौरान बहुत कूट-कूट कर भर दिया जाता है लेकिन जब उच्च पदों पर और अपने आसपास के किसी भी कार्य क्षेत्र में महिलाओं को काम करते हुए देखती हूँ तो महिला होने पर गौरव होता है और बड़ा अच्छा लगता है कि महिला सशक्तिकरण के इस दौर में महिलाओं को अब सभी पदों पर लिया जा रहा है।

पिछले कुछ वर्षों से महिला शक्ति ने भी अपनी कार्यशैली और कार्यप्रणाली से आम जनता का और सरकार का विश्वास जीता है और शायद यही एक वजह भी है कि अब हर क्षेत्र में महिलाओं को मौका दिया जा रहा है।

छबड़ा भी एक बेहद संवेदनशील इलाकों में आता है और यहाँ पर कार्य करना भी चुनौतीपूर्ण है।ऐसे में आपने अपनी क्या रणनीति तैयार की है?

यह आपने बिल्कुल सही कहा कि छबड़ा संवेदनशील व बड़े एरिया में आता है तो ऐसे में मैं यही बताना चाहूंगी कि आम जनता का विश्वास,साथ और सहयोग बहुत ज़रूरी है।

इसके साथ-साथ वहां के जनप्रतिनिधि व मीडिया अगर सकारात्मक रूप से सहयोग करेंगे तो मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूंगी कि मैं अपनी समस्त सेवाएं पूरी दृढ़ता और निष्ठा के साथ दे सकूँ। स्थानीय लोग,मीडिया व जनप्रतिनिधियों किसी भी क्षेत्र के विकास के लिए बेहद ज़रूरी स्तम्भ हैं अतः बहुत जरूरी होता है कि इनका रुख सकारात्मक हो और विकास का इच्छुक हो।

हम सिर्फ जनता के लिए अच्छा काम करना चाहते हैं और उसके साथ अच्छा परिणाम भी पाना चाहते हैं ऐसे में अगर टीम वर्क भावना से काम हो तो कार्य करने की शक्ति दुगुनी हो जाती है। यह विश्वास, सहयोग व सकारात्मक शक्ति अगर छबड़ा से मिलती है तो मैं अपना बेहतर देने की पुरजोर कोशिश करूंगी।

मेरे परिवार का मुझे पूरा सपोर्ट है। ऐसे में सभी चुनौतियों का सामना करने के लिए मैं तैयार हूँ। मैं अपने प्रोफेशन के प्रति में समर्पित हूँ। मेरे बैच की सभी महिला मित्रों को इसी तरह बड़े क्षेत्र मिलें हैं यह विश्वास हमें और बल देता है।

छबड़ाः विकास या विस्थापन

छबड़ा 1991

छबड़ा 2021

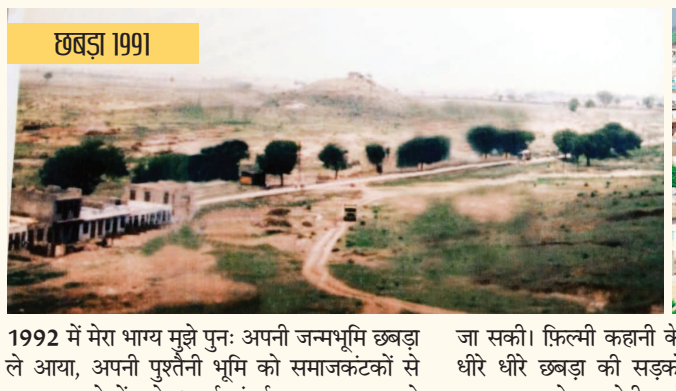

1992 में मेरा भाग्य मुझे पुनः अपनी जन्मभूमि छबड़ा ले आया, अपनी पुश्तैनी भूमि को समाजकंटकों से मुक्त करवाने में मुझे 6 वर्ष संघर्ष करना पड़ा। अपने परिवार और कर्मभूमि पाली मारवाड़ से 500 किमी दूर छबड़ा में रहना मेरे लिये बेहद चुनौतीपूर्ण रहा। पुश्तैनी भूमि के मध्य स्थित कन्या पहाड़ी व उस पर स्थित बंगले पर मैं अकेला तन्हा घण्टों ख़्यालों में गुम रहता था, अपनी भूमि को विकसित करने की योजनाएँ बनाता था, ख़्याली पुलाव बनाने में माहिर था। उस समय दिन के 12 बजे व 3 बजे कोटा से आने जाने वाली ट्रेनों की सीटी और तांगों के घोड़ों की पदचाप सुनता और आते जाते तांगों को गिनता रहता जो 40 से 50 हुआ करते थे।

दूसरी जगहों की तुलना में छबड़ा के घोड़े बहुत मज़बूत कद काठी के रहे हैं। छबड़ा के घोड़ों के मालिक अक्सर बहुत गर्व से अपने घोड़ों का बखान भी किया करते थे।

लंबे समय तक इन तांगेवालों व ऑटो रिक्शा चालकों के मध्य विवाद बना रहा। 'नया दौर' फ़िल्म की कार, तांगे की दौड़ कहानी छबड़ा में नहीं दोहराई जा सकी। फ़िल्मी कहानी के विपरीत तांगा हार गया, धीरे धीरे छबड़ा की सड़कों से तांगों व घोड़ों की क़दमताल ओझल होती चली गई और नये दौर के यात्रा साधन, वाहन छबड़ा की ज़मीन पर छाते चले गये। छबड़ा कभी छः बड़े दरवाजो के अंदर सिमटा हुआ था, पुराने लोग गर्व से अक्सर बताया करते थे कि नदी में बाढ़ का पानी सभी दरवाजों की दहलीजों को लगभग एक समान छूते थे। उस समय की निर्माण इंजीनियरिंग वास्तव में अद्भुत थी।

रेल्वे स्टेशन से छबड़ा क़स्बे की दूरी लगभग 2 किमी रही होगी, क़स्बे और स्टेशन के मध्य एक छोटी सी कच्ची पक्की सड़क के दोनों और पेड़ों की लंबी कतारें हुआ करती थीं, जिन्हें आप उस समय की दुर्लभ तस्वीर में देख सकते हैं।

जैसे जैसे छबड़ा की आबादी परकोटे से बाहर आने लगी, छबड़ा के विकास की सीमाएँ स्टेशन रोड पर अपनी बाहें पसारने लगीं जिसका श्रेय जाता है नगरपालिका द्वारा स्थापित 'इंद्रा कॉलोनी' को।

चूंकि छबड़ा क्षेत्र कृषि आधारित रहा है तो यहाँ आसपास अनेकों गांवों के किसान खाद, बीज, किराना, घरेलू सामान, कपड़े, जेवरात आदि की खरीदारी के लिये छबड़ा पर ही निर्भर रहते आये हैं जो आज भी बदस्तूर जारी है।

उनकी फसलें यहीं बिकतीं, इलाज, शिक्षा यहीं होते और व्यापारी वर्ग उनकी हर ज़रूरत की पूर्ति हेतु सदैव तत्पर रहते भले ही किसानों को ब्याज चुकाना पड़ता हो पर उनका कोई कार्य रुकता नहीं।

छबड़ा की साहूकारी आज भी समस्त हाड़ौती में प्रसिद्ध है। 1992 से1994 वह दौर रहा जब हिलव्यू कॉलोनी, शास्त्री नगर और एजाज नगर में गृहनिर्माण शुरू होने लगे और धरनावदा ,सालपुरा रोड पर भी कॉलोनियां स्थापित होती चली गईं। जैसे जैसे छबड़ा परकोटे से बाहर आता चला गया स्टेशन रोड के दोनों और नई-नई दुकानें बनती चली गईं, नगरपालिका की क़ीमती जगह धर्मशालाओं को नज़र होती चली गई, जिन पर भी विभिन्न समाजों ने दुकानें बना कर मार्ग को व्यस्त करने में मदद की।

सन 2004 तक विकास धीमा चल रहा था तभी मोतीपुरा थर्मल पॉवर स्टेशन का निर्माण प्रारम्भ हुआ, जिसके कारण धरनावदा रोड पर आवाजाही बढ़ने लगी, ट्रेक्टर ट्रॉलियाँ, मिस्त्रियों की दुकानों की शुरुआत के बाद किराना, कपड़ा, रेस्टोरेंट व्यापारी अपने पैर जमाते चले गये। इस बीच कवाई अडाणी थर्मल पावर प्रोजेक्ट प्रारंभ हुआ, जिसका लाभ भी छबड़ा को हुआ। धीरे-धीरे आसपास के ग्रामीण धरनावदा रोड से ही अपनी ज़रूरतों के सामान खरीदने लगे और परकोटे के अंदर जाने से बचने लगे, स्वाभाविक है कि परकोटे के अंदर स्थापित व्यापारियों में बैचेनी बढ़ने लगी और उन्होंने भी वक़्त के साथ क़दमताल करते हुए नये नये बड़े शोरूम दुकानें स्टेशन रोड पर बनाते चले गये।

आदर्श विद्या मंदिर बाहरी क्षेत्र में बनने वाला प्रथम विद्यालय था, गैस पाइप लाइन के कारण मुझे 100 फिट भूमि को निर्माण से मुक्त करना अनिवार्य था, ख़ाली स्थान सुलभ होने के कारण 100 फिट रोड के दोनों तरफ़ और धरनावदा चौराहे के आसपास मैकेनिकों व भवन निर्माण सम्बंधित दुकानों का क़ब्ज़ा होता चला गया। परकोटे के भीतर स्थित अदालतें उपजिला कलेक्टर, नगरपालिका भवन, बैंक बाहर शिफ्ट होने के साथ ही छबड़ा परकोटे का व्यस्त बाज़ार सुनसान होता चला गया। लाखों रुपयों की क़ीमतों के मकान दुकानों के रेट धड़ाम से नीचे आ गिरे और छबड़ा स्टेशन रोड की क़ीमतें जयपुर, कोटा के बाज़ारों की क़ीमतों से टक्कर लेने लगे। जो छबड़ा स्टेशन रोड कभी वीराना सा दिखाई देता था, हमारी पुश्तैनी भूमि राजस्व रिकार्ड में बंजर लिखी जाती रही है ,आज वो एक विकसित क्षेत्र बन चुका है। चूंकि विकास, उन्नति के साथ हर घर में वाहन होना आम बात हो गई है, भीतरी क्षेत्र की सँकरी गलियाँ भी लोगों का मोह भंग होने का कारण बनीं। वे आवासीय योजनाएँ अधिक सफल रहीं जिनकी सड़कें अधिक चौड़ी हैं।

अधिकाँश नगरों के भीतरी क्षेत्र आज भी अपनी उपयोगिता बनाये हुए हैं परन्तु उनकी तुलना में छबड़ा क़स्बे की स्थिति को हम विकास कम और विस्थापन अधिक कह सकते हैं। ■ **रिज़वान ऐजाज़ी**

छबड़ा के दीपक सोनी अपनी सर्वश्रेष्ठ कला प्रदर्शन में राज्य स्तर पर प्रथम स्थान के लिए हुए सम्मानित

हिलव्यू समाचार

छबड़ा। राजस्थान ललित कला अकादमी की और से 41वी छात्रकला प्रदर्शनी सोमवार 20 जनवरी से अकादमी संकुल स्थित आर्ट गैलरी जयपुर में शुरू हुई। प्रदर्शनी के विजेता 10 विद्यार्थियों में छबड़ा निवासी चित्रकार दीपक सोनी पुत्र श्री रामू सोनी को उनकी उत्कृष्ट कलाकृति 'सपनों की डोर' के लिए छात्र कला पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सभी विजेताओं को 10 -10 हजार रुपये के नगद पुरस्कार, प्रमाण पत्र और स्मृति चिह्न प्रदान किये गए।

दीपक इस पुरस्कार को पाने वाले छबड़ा के पहले कलाकार बने , साथ ही इनके चित्र 'सपनों की डोर' ने प्रदर्शनी के कैटलोगे के कवर पेज पर स्थान पाया, जिसका विमोचन समारोह के दौरान ही हुआ।

कार्यक्रम में कला एवं संस्कृति विभाग के सचिव पंकज ओझा, अतिरिक्त संभागीय आयुक्त बी एल गोयल, अकादमी सचिव रजनीश हर्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी के निदेशक संजय झाला, प्रदर्शनी अधिकारी विनय शर्मा सहित कई वरिष्ठ कलाकार व विद्यार्थी मौजूद रहे। यह प्रदर्शनी 24 दिसम्बर तक अवलोकन हेतु खुली रखी गई। दीपक का कहना है कि समाज कला विषय को अन्य विषयों से कम न आंके। इसमे अनेक संभावनाएं हैं। विद्यार्थी सही मार्गदर्शन पाकर स्वरूचि अनुसार कला के क्षेत्र में भी अपना बेहतर भविष्य बना सकते हैं।

उपजाऊ ज़मीन : फिसड्डी विकास यात्रा

हथेली पर सरसों नहीं उगती जनाब....

फोटोः हरि सोनी

मुझे बाराँ ज़िला पुलिस अधीक्षक श्रीमति विनीता ठाकुर के साथ छबड़ा, छीपा बड़ौद के स्मैक प्रभावित गाँवों में जनजागरण हेतु जाने का अवसर प्राप्त हुआ था। कच्चे खपरैल मकान ,टूटी फूटी नालियाँ, गन्दगी से भरी ऊबड़ खाबड़ सड़कें और बदहाल गांवों की स्थिति देख कर उनका सवाल था कि इतनी अफ़ीम, लहसुन सरसों, अनाज, सोयाबीन पैदा करने वाला यह क्षेत्र इतना पिछड़ा हुआ क्यों है।

न यहाँ के गांवों में रौनक़ है न ही निवासियों के चेहरों पर। उनके सामने कई स्मैक का सेवन करने और उत्पादन करने वाले बैठे थे जिनके चेहरों पर मुर्दनी, आँखें निस्तेज और पीली पड़ी हुई थीं।

हाँ ! ये भी ज़िंदा इंसान हैं ,यह सोच सोच कर मुझे बेहद मायूसी थी।

यह तस्वीर का एक रुख़ है दूसरी तरफ़ उपजाऊ भूमि की ख़ूबसूरती है जो पैदावार की विभिन्न अवस्थाओं में अपना रंग बदलती रहती है। कभी दूर दूर तक हरियाली छाई दिखाई देगी, कभी सरसों के पीले लहलहाते पीले फूल अपनी अलग ही छटा बिखेरे दिखाई देंगे। उपजाऊ भूमि होने के कारण कृषक वर्ग कई फ़सलें लेने का प्रयास करता है । निस्संदेह फ़सलों के समय हर कोई अपने अपने खेतों में कड़ी मेहनत करता दिखाई देता है ।

परन्तु मेहनत से ही किसान का भाग्य तय नहीं होता बल्कि वर्षा, बाढ़, अकाल, आसमानी आफ़त, सरकारी नीतियाँ, पैदावार के बाज़ार में आने के साथ ही गिरते दाम और बहुत सी बातों पर निर्भर करता है। मुझे डर है यह लिखते समय जन्मस्थली कहीं कर्मस्थली से तुलना करने पर क्रोधित नहीं हो जाये। जीवन का बहुत सारा समय पाली मारवाड़ में गुज़रा ,बहुत कुछ वहीं सीखा और जब वहाँ के सामाजिक ,आर्थिक ताने बाने की तुलना छबड़ा से की तो रात दिन का अंतर सामने आया । मारवाड़ में पानी की बेहद कमी रहती है , वर्षा की कमी से अक्सर तीन दिनों बाद जलदाय विभाग पानी सप्लाई करता है फिर भी नागरिक बहुत संतोषजनक रूप से अपनी दिनचर्या गुज़ार लेते हैं । वर्ष भर में एक फ़सल भी प्राप्त हो जाये तो भी उनके जीवन पर कोई असंतोष नज़र नहीं आता।

क्यों ? क्योंकि वे लोग मात्र कृषि पर निर्भर नहीं हैं। यह प्रश्न मैंने अपनी लिखित पुस्तक **'अन्नदाता की मौत'** में उठाया था।

रानी फालना जैसे छोटे छोटे कस्बों में टीवी रेडियो , गेंती फावड़े के निर्माण सहित सैकड़ों औद्योगिक इकाइयाँ कार्य कर रही हैं। पानी के अभाव में ग्रामीण क्षेत्र के नागरिकों ने अन्य वैकल्पिक माध्यमों को अपनाया है ,जिसके कारण वे खेतों पर निर्भर नहीं रहते हैं । पानी की उपलब्धता और उपजाऊ भूमि के चलते हाड़ौती क्षेत्र की ग्रामीण जनता मात्र खेती पर निर्भर होती चली गई ।निस्संदेह खेती के समय उन्हें जी तौड़ मेहनत करना पड़ती है परन्तु उसके बाद? वर्षभर के अधिकांश समय उनके पास कोई विशेष कार्य नहीं होता है। दुर्भाग्य से किसी वर्ष अतिवृष्टि या अकाल की स्थिति उत्पन्न हो जाये तो फसलों के पिटने की दशा में उनके पास सूदखोर महाजनों के पास जाने के सिवाय कोई दूसरा रास्ता नहीं बचता ।

शायद यही वजह है कि जहाँ पानी अधिक गहरा होता है वहाँ के व्यक्तियों में कार्य के प्रति अधिक गहराई पाई जाती है।

जब व्यक्ति रोटी कपड़ा मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताओं से उबर जाता है तो अब उसको अपने आसपास की ज़रूरतों समस्याओं पर ध्यान जाता है और संवेदनशील व्यक्ति स्वयं को तन मन धन से अपने समाज ,शहर ,सम्बन्धियों के विकास के प्रति उत्तरदायित्व समझने लगता है ।यही कारण है कि मारवाड़ के छोटे से छोटे गाँव में आलीशान निवास स्थलों, आलीशान इमारतों के अतिरिक्त चिकित्सक ,विद्यालय ,धर्मशालाएं ,मंदिर ,प्याऊ व अनेकों जनोपयोगी निर्माण दिखाई देते हैं । पाली मारवाड़ में गिनेचुने सरकारी कार्यालयों को छोड़ दिया जाये तो हर जनोपयोगी इमारत पर किसी व्यक्ति विशेष का नाम अंकित दिखाई देगा । धीरे धीरे यह वातावरण बनता जाता है और दूसरों से प्रेरित होकर धनाढ्य व्यक्ति अपनी श्रद्धा सामर्थ्य से जनहितकारी निर्माणों व कार्यों में बढ़ चढ़ कर भाग लेता है ।

डॉ. कृष्णाकांत पाठक की प्रेरणा व अथक मेहनत से छबड़ा में अमरचंद राजकुमारी बरड़िया महाविद्यालय व छीपा बड़ौद में प्रेमसिंह सिंघवी महाविद्यालय के अतिरिक्त किसी भवन पर दानदाता का नाम शायद ही अंकित हो । निस्संदेह परहित कार्य करने वाले व्यक्ति के चेहरे पर विशेष तेज व संतोष दिखाई देता है ।

छबड़ा औद्योगिक क्षेत्र में अवश्य कुछ औद्योगिक इकाइयाँ कार्यरत हैं परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों को आज भी कुटीर उद्योगों की स्थापना और जीवन को अधिक व्यवस्थित करने की आवश्यकता है । ■ **रिज़वान ऐजाज़ी**

छबड़ा में होगा कला मंथन का आयोजन

शिविर संयोजक दीपक सोनी ने बताया कि नववर्ष के पावन अवसर पर नव सृजनात्मक ऊर्जा के साथ बारां जिले के प्राकर्तिक सौंदर्य और अनमोल विरासत को संरक्षण एवं प्रोत्साहन हेतु कला चर्चा टीम के द्वारा दिनांक 5 जनवरी से 9 जनवरी 2022 तक देश के प्रतिष्ठित एवं ख़्यातनाम कलाकारों द्वारा छबड़ा कस्बे के स्वर्णकार धर्मशाला में कला मंथन (राष्ट्रीय कला कार्यशाला एवं आवासीय शिविर) का आयोजन किया जा रहा है। इस शिविर में कलाकारों का अलग-अलग रूप दर्शकों को देखने को मिलेगा। कहीं कलाकार आग से खेलते हुए आग से कैनवास पर पेंटिंग बना रहा है तो कहीं कोई मिट्टी से मूर्ति को आकार दे रहा है तो कहीं कोई जल रंगों को चित्रपट पर ढोलकर आकृतियाँ बना रहा है तो कोई प्राकर्तिक दृश्य कि ख़ूबसूरती को अपने कैनवास में उखेर रहा है तो कही मॉडर्न आर्ट की पेंटिंग देखने को मिलेगी तो कहीं मिनिएचर आर्ट तो कहीं कोयले से आकार देते हुए दिखाई देंगे। इस दौरान आगंतुक कलाकार बारां जिले के पुरातात्विक और कलात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानों पर तत्स्थलिय चित्रण एवं कला सृजन करने का कार्य करेंगे। इस आवासीय शिविर के दौरान कला कार्यशाला का आयोजन भी किया जायेगा जिसमें सभी कला प्रेमी और विद्यार्थी आगंतुक कलाकारों से कला से सम्बंधित चर्चा कर सकेंगे और साथ ही अगल अलग विद्याओं के बारे में जान सकेंगे। अंतिम दिवस में सभी चित्रों को प्रदर्शनी हेतु कला प्रेमियों एवं विद्यार्थियों के लिए खुला रखा जाएगा।

2022 आपकी झोली में लाया है बहुत कुछ

पंडित हितेश शर्मा,
कामाख्या-आसाम

मेष - (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

व्यवसाय : इस वर्ष व्यावसायिक कार्य में आसानी से सफलता मिलेगी. दशम और एकादश भाव का शनि आपको हर तरह से मदद करता है, यदि आप नौकरीपेशा हैं तो इस वर्ष आपको गोपनीय किस्म के कार्य, न्याय नीति, प्रशासन, वित्त जैसे महत्वपूर्ण कार्य सौंपे जा सकते हैं. आपको अधिकारी वर्ग का विश्वासपात्र बनने का मौका मिलेगा, परन्तु श्रमसाध्य कार्य रहेगा. इस वर्ष सम्मान वृद्धि, पदोन्नति लाभ, पूर्ण प्रतिनियुक्ति आदि का योग वर्ष के मध्य घटित हो सकता है. यदि आप सेवानिवृत्त हो रहे हैं तो आपको कहीं पुनः नियुक्ति मिल सकती है. लम्बे अरसे से यदि आपकी वरिष्ठता के या अन्य दावे नौकरी में रुके हैं तो वे भी आपके पक्ष में सुलझ जाएंगे.

धन-सम्पत्ति : पुरानी या कम उपयोगी सम्पत्ति का नये ढंग से उपयोग करने पर सक्रियता से विचार होगा तथा इस हेतु बड़ा खर्च भी हो सकता है. तैयार मकान, दुकान की खरीद का भी योग बन रहा है, कृषि या गोदाम कार्य हेतु भी सम्पत्ति की खरीद का संकेत है. सेकंड हैंड मशीनरी संयंत्र खरीद या बिक्री से भी आप लाभान्वित होंगे. नये यंत्रों की प्राप्ति से आपको धनार्जन में अपने व्यवसाय की प्रकृति के अनुसार अच्छी सुविधा मिल जाएगी.

घर-परिवार : पारिवारिक क्षेत्र में यदि घर-गृहस्थी एक से अधिक स्थान पर बंटी है, तो उसके एक स्थान पर हो जाने का संकेत है. पारिवारिक क्षेत्र में विवाह संबंधी दायित्व, भाई-बहन, भांजे के उत्तरदायित्व निर्वाह करने के लिए आप धन-साधन जुटाने में सफल होंगे. संतान पक्ष की चिन्ता अचानक बढ़ सकती है और इसका समाधान भी शीघ्र होगा. घर के किसी सदस्य की नौकरी लगने या उसके कारोबार में तरक्की होने का योग है.

स्वास्थ्य : इस वर्ष आपके स्वास्थ्य की कोई बड़ी समस्या दूर होगी. वर्ष के दौरान आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. कार्य कुशलता में वृद्धि होगी. कोई बड़ी व्याधि स्वास्थ्य में बाधक नहीं होगी. अस्वस्थ होने की स्थिति में उपचार से शीघ्र आराम मिलेगा. यदि आपके जन्म का शनि स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा नहीं है, तो इस वर्ष आपको मार्च और नवंबर-दिसंबर के मध्य उदर पीड़ा, जोड़ों की तकलीफ, गर्दन का दर्द या अनुवांशिक रोगों से कष्ट हो सकता है. लग्न का राहु भी पेट की शिकायत दे सकता है.

परीक्षा प्रतियोगिता : इस वर्ष अनुसंधान कार्यों में रुचि बढ़ेगी और सफलता भी मिलेगी. परीक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी. यदि आप उच्च अध्ययन के लिए बाहर जाना चाहते हैं तो प्रतिष्ठित संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा. प्रयत्न करने पर भाग्य आपका साथ होगा.

यात्रा, प्रवास, तबादला : यदि आप बाहर कार्यरत हैं तो इस वर्ष आपको अपने गृहनगर या उसके निकट आने का अवसर मिलेगा. उत्तर या पश्चिम दिशा से आप विशेष लाभान्वित होंगे. जनवरी का उत्तरार्ध, जून-जुलाई में यात्रा-भ्रमण अथवा लंबे अवकाश के संकेत हैं. यदि आपकी जन्मपत्रिका का शनि या राहु प्रतिकूल है तो मई-जून के दौरान स्थान परिवर्तन परेशानीदायक रह सकते हैं.

धार्मिक कार्य, ग्रहशांति : चींटियों को पंजीरी चुनाना, पक्षियों को दाना डालना लाभकारी रहेगा. इस वर्ष सत्संग लाभ का अवसर प्राप्त होगा. आध्यात्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी, किसी संत पुरुष के दर्शन का योग है. मेष राशि होने पर व्यक्ति के इष्ट देव हनुमान जी होते हैं. हनुमान जी की पूजा करने पर उन्हें शीघ्र फल मिलते हैं.

तुला - (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

व्यवसाय : इस वर्ष आप उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे. यदि आपने अपने कार्यक्षेत्र में विस्तार, बदलाव तथा नये कार्य आरम्भ या नई तकनीक अपनाने की कोशिश की है तो यह वर्ष आपके जीवन में तरक्की वाला साबित होगा. व्यवसायिक मामलों में साधन, धन तथा सहयोग मिलता रहेगा जिससे आपकी महत्वाकांक्षाएं पूरी हो सकेंगी. साझेदारी के माध्यम से नयी योजनाओं पर कार्य करने का योग है. समझौतावादी दृष्टिकोण आपकी उन्नति में सहायक रहेगा. कार्यक्षेत्र में आप अपने परिश्रम से सबसे अलग शीर्ष पर होंगे. नया उपक्रम, नयी महत्वाकांक्षा, सृजनशीलता, बड़ी योजना, मान-प्रतिष्ठा, सामाजिक सम्मान आदि बातों पर सफलता मिलेगी. भावनात्मक, बौद्धिक, व्यावसायिक आर्थिक या सामाजिक स्तर पर आपकी इन कार्यों से सम्बद्धता एवं उत्तरोत्तर संलग्नता बढ़ेगी.

धन-सम्पत्ति : इस वर्ष स्थायी सम्पत्ति प्राप्ति की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहने वाला है. बना बनाया मकान, पुरानी जायदाद, फैक्ट्री मशीनरी आदि की प्राप्ति योग प्रबल है. खेती बागवानी, स्थायी सम्पत्ति से किरायेदारी आदि के माध्यम से स्थायी लाभ प्राप्त होगा. नवंबर, दिसंबर के मध्य पुरानी लेनदारी मिलने का योग है. पारिवारिक क्षेत्र में भाई-बंधुओं आदि से यदि सम्पत्ति को लेकर कोई मतभेद है तो इस वर्ष निर्णायक स्थिति बनेगी.

घर-परिवार : पारिवारिक क्षेत्र में इस वर्ष शुभ कार्य शादी-विवाह, संतान प्राप्ति आदि का योग प्रबल है. भाई-बंधुओं की उन्नति भी होगी. पारिवारिक सुख-सौहार्द्र अच्छा रहेगा, संतान के करिअर के निर्माण में कुछ उलझनें रह सकती हैं.

स्वास्थ्य : कार्य क्षमता एवं चित्त की एकाग्रता अच्छी रहेगी. आपकी दिनचर्या, भोजन संबंधी आदत इस वर्ष कई कारणों से अनियमित होने का संकेत है. उदर विकार, मोटापाजन्य कष्ट, स्नायविक तनाव, पित्त विकार से परेशानी हो सकती है. वैसे सामान्य तौर पर आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, जिससे आप कठिन से कठिन श्रम करके अपने कार्य पूरे करते रहेंगे.

परीक्षा-प्रतियोगिता : इस वर्ष अध्ययन में एकाग्रता बढ़ेगी, गंभीर विषयों पर चिंता होगी. बौद्धिक कार्यों में आपकी योग्यता कीर्तिमान स्थापित कर सकती है. जून से नवंबर के मध्य अनिश्चय परिवर्तन तथा एकाग्रता में कमी लक्ष्य की प्राप्ति में थोड़ी बाधा भी बन सकती है. प्रतियोगी परीक्षाओं में उल्लेखनीय सफलता का योग है.

यात्रा प्रवास तबादला: इस वर्ष किसी बड़े उद्देश्य की पूर्ति को लेकर यात्राएं अधिक होंगी. यात्रा प्रवास में आपको अधिकतर सुख-सुविधाएं अच्छी मिलेंगी. उत्तर दिशा की यात्रा से लाभ होने का योग है. यदि आप लम्बे समय से स्थानांतरण पर बाहर हैं तो आपकी वापसी का योग बन सकता है.

धार्मिक कार्य, ग्रहशांति : आपको इष्टदेव की आराधना, शनि के बीज मंत्र का जप करना, किसी उद्यान आदि में पीपल या बड़ का पौधा लगाकर उसकी देखभाल का संकल्प लेना लाभकारी है. उत्तर तथा पश्चिम दिशा के तीर्थों आदि के दर्शन का योग बन सकता है. शनिवार का व्रत करना भी लाभकारी है. इस राशि का स्वामी ग्रह शुक्र होने के कारण इन लोगों को सफेद वस्त्र, मोती, तेल, गाय और पीली वस्तुओं का दान करना चाहिए.

वृषभ - (इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो)

व्यवसाय : इस वर्ष व्यवसाय में आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा. आपका यह श्रम निजी हित की पूर्ति में कम रहेगा और परोपकार में अधिक रहेगा. आपका इरादा व्यवसायिक क्षेत्र में बड़ी पूंजी खर्च करके महत्वाकांक्षी योजनाओं को साकार करने का बनेगा. यह एक दीर्घावधि का उपक्रम सिद्ध होगा, जिसके लाभकारी परिणाम थोड़ी देर से मिलेंगे. व्यवसायिक क्षेत्र में उन्नति होगी. यदि आप नौकरी पेशा हैं तो आपको अन्य विभाग में या बडे पद पर कार्य करने का प्रस्ताव मिल सकता है, जो सम्मानजनक और लाभदायक रहेगा. पारिवारिक दायित्व बढ़ने की संभावना है. अटके हुए भुगतान की प्राप्ति होने से राहत मिलेगी. आर्थिक स्थिति सुधरेगी, देनदारी में संतोष मिलेगा. ऋणभार में कमी का अनुभव होगा. अधिक लालच से बचें, जोखिम के कार्यों से दूर रहें.

धन-सम्पत्ति : यह भी सम्भव है कि इस वर्ष आपकी पुरानी सम्पत्ति की खरीद-बिक्री हो. बड़े उद्देश्यों के लिए पूंजीगत व्यय बढ़ेगा. महत्वाकांक्षी योजना का लाभ होगा. सम्पत्ति का निर्माण होने की स्थिति में उससे भी लाभ का योग है. नया निर्माण होने का योग अक्टूबर से दिसंबर के मध्य बन सकता है. वर्षान्त में घरेलू सुख-साधनों में खर्च होगा. किरायेदारी सम्बंधी विवाद हल होंगे.

घर-परिवार : पारिवारिक क्षेत्र में इस वर्ष संबंधियों के उत्तरदायित्वों के निर्वाह पर विशेष ध्यान देना पड़ेगा तथा खर्च भी बढ़ेगा. शादी विवाह में मदद करनी पड़ेगी. किसी संबंधी को शिक्षा, स्वास्थ्य, नौकरी में मदद करना पड़ेगा.

स्वास्थ्य : वर्ष के दौरान अधिकतर स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. मार्च में स्नायु तनाव, चोट मोच, रक्त की कमी सम्भव है. जून में लापरवाही के कारण स्वास्थ्य नरम गरम हो सकता है. एलर्जी से भी कष्ट की संभावना है. वर्षान्त में उच्च रक्तचाप के रोगियों को सावधानी रखनी चाहिये. स्वास्थ्य नरम गरम हो सकता है. कुल मिलाकर स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष उत्तम है.

परीक्षा-प्रतियोगिता : बौद्धिक श्रम में अच्छी सफलता के योग हैं. प्रतियोगिताओं में दूसरों को पीछे छोड़ने में सफल होंगे. प्रतियोगी परीक्षा के माध्यम से अच्छे संस्थान में प्रवेश मिल सकता है. नौकरी में भी प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से सफलता मिलेगी. समय अच्छा है, परिश्रम से लाभ उठाएं.

यात्रा, प्रवास, तबादला : आपके व्यवसाय में रद्दोबदल के कारण यात्राएं अधिक होंगी. मई जून और नवंबर-दिसंबर की यात्राएं विशेष लाभकारी रहेंगी. अप्रैल मई में लम्बी छुट्टी लेनी पड़ सकती है, या बाहर रहना पड़ सकता है. नौकरी में तबादला हो सकता है. तीर्थदर्शन के योग हैं.

धार्मिक कार्य, ग्रहशांति : चिंतन, मनन एवं अनुभूति दोनों स्तर पर उपलब्धियां आध्यात्मिक क्षेत्र में होंगी. सिद्ध संत या बुजुर्ग व्यक्ति का आशीर्वाद फलीभूत हो सकता है. राहु-केतु के कारण मानसिक अस्थिरता के संकेत हैं, इसलिए चीटियों को पंजीरी खिलाना, मछलियों को दाना चुगाना चाहिए. वृषभ राशि होने पर आपके इष्ट देव महालक्ष्मी होती हैं. महालक्ष्मी के विशेष रूप से पूजा करने से सारे कब कार्य सफल होते हैं. भगवान गणेश की उपासना से भी लाभ होगा

वृश्चिक - (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

व्यवसाय : इस वर्ष आपको अपने व्यवसाय की प्रकृति तथा जन्मपत्रिका में गुरु शनि राहु की स्थिति के अनुसार नये संस्थान की शुरुआत करने का मौका मिलेगा, ता. 29 अप्रैल से 12 जुलाई तक अढ़ैया शनि का अल्प प्रभाव लाभकारी रहेगा. विद्यमान फर्म कंपनी की सहायक कंपनी, शाखा खोलने में कारोबार की बढ़ती हुई साख व कामकाज की अधिकता मुख्य प्रेरणा रहेगी. नये उद्योग धंधे स्थापित करने के लिए भूमि-भवन व पूंजी एवं श्रम साधन की सहज उपलब्धता आपको लाभकारी रहेगी. यदि आप नौकरी पेशा हैं तो इस वर्ष आपको पदोन्नति मिलने का लाभ लंबे समय से रुके हुए वेतन संबंधी अभ्यावेदन मान्य किए जाने का योग है. व्यवसायिक क्षेत्र में किसी न किसी रूप में आपके गुप्त शत्रु समस्याएं भी बाधक बन सकते हैं. यदि आपका जन्म का शनि शुभ नहीं है तो मेहनत का कम परिणाम प्राप्त होगा.

धन-सम्पत्ति : इस वर्ष आपको नयी तथा पुरानी दोनों तरह की सम्पत्ति प्राप्ति का योग है. वर्तमान सम्पत्ति का विस्तार होने, नये सिरे से निर्माण होने, दुकान शोरूम की प्राप्ति होने का संकेत है. पारिवारिक क्षेत्र में भी संपत्ति के विभाजन या एक से अधिक स्थानों पर इसकी देखभाल की स्थिति बन सकती है. आपको व्यवसाय, उद्योग धंधे, कृषि बागवानी आदि से पूंजीगत लाभ प्राप्ति का योग है.

घर-परिवार : आपके परिवार में किसी सदस्य की नौकरी लगने, शिक्षा पूरी होने, विवाहादि मांगलिक कार्य होने और संतान की प्राप्ति होने तथा रिश्तेदार का आकर लम्बे अरसे तक आपके घर में रहने का संकेत है. सामजिक क्षेत्र में आपको सम्माननीय पद मिलने का योग है.

स्वास्थ्य : पुरानी बीमारी विशेषकर कफ-वात संबंधी, मूत्राशय आदि के विकार, अनियमित दिनचर्या से आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, किन्तु इलाज से शीघ्र स्वास्थ्य लाभ होगा. ऊंचाई से गिरने या फिसलने से चोट लगने की संभावना है, परन्तु इस वर्ष मनोवृत्ति उत्साह पूर्ण रहेगी, अधिकतर स्वास्थ्य ठीक रहेगा.

परीक्षा-प्रतियोगिता : यदि आप संस्थागत अध्ययन करना चाहते हैं तो अपनी बुद्धि कौशल से आपकी आकांक्षा पूरी हो सकती है. विषयों में रद्दोबदल से मानसिक तनाव की स्थिति निर्मित हो सकती है. मार्च और अप्रैल के दौरान पारिवारिक कारणों से परीक्षा की तैयारी में कमी आ सकती है.

यात्रा, प्रवास, तबादला : यदि आप तबादले पर घर-परिवार से दूर हैं तो इस वर्ष वापसी का योग घटित हो सकता है. अपने परिवार सहित आनंददायक यात्रा पर जाने का, हवाई यात्रा करने का, शिक्षा परीक्षा हेतु यात्रा का अवसर मिलेगा. अधिकतर स्थानांतरण तथा यात्रा प्रवास अनुकूल रहेंगे. किसी प्रभावशाली पदाधिकारी के हस्तक्षेप से अनचाहे स्थानांतरण होने की संभावना भी बनती है.

धार्मिक कार्य ग्रहशांति : इस वर्ष सार्वजनिक धार्मिक संस्थानों से जुड़ने का अवसर मिलेगा. शनिवार, मंगलवार को हनुमानजी की आराधना करना, शनिवार को तेल का और मंगलवार को घी का दीपक रखना लाभदायक है. सूर्यास्त पश्चात प्रदोषकाल में नित्य "ऊँ नमः शिवाय'' का जप करना लाभकारी रहेगा. इस राशि के जातकों का स्वामी ग्रह मंगल है. इस राशि के जातकों को लाल वस्त्र, मूंगा, सोना, केसर और तांबे का दान नहीं करना चाहिए. इसी के साथ काले चने, चाय की पत्ती, उड़द दाल और काली मिर्च का दान किया जा सकता है.

मिथुन - (का, की, कु, के, को, घ, ड़, छ, हा)

व्यवसाय : अप्रैल से जुलाई तक के समय को छोड़कर शेष समय अढ़ैया शनि का प्रभाव रहेगा. आपकी राशि वालों को गुरु का वर्ष भर नवम और दशम भाव में भ्रमण शुभ फल देगा. शनि जहां आपको परिश्रम अधिक कराते हैं, वहीं सफलताकारक भी हैं. यदि आपकी पत्रिका में शनि और गुरु एक साथ तथा केन्द्र या त्रिकोण में हैं, तो गोचर ग्रहों के शुभ फल भी अधिक और तत्काल मिलेगा. यदि आप नौकरीपेशा हैं तो इस वर्ष आपको अप्रत्याशित ढंग से पदोन्नति मिलने की संभावना है अथवा अधिकार एवं सम्मान बढ़ने के योग हैं, परन्तु परिश्रम भी अधिक होगा. सितंबर, अक्टूबर इस दृष्टि से महत्वपूर्ण घटना प्रसंगों वाले रहेंगे. इसी अवधि में अपनी पारी से पूर्व ही दूसरों को पीछे छोड़ते हुए पदोन्नति भी मिल सकती है. व्यापारिक लेन-देन संबंधी कार्य अथवा परामर्श कार्य नये सिरे से व्यवस्थित होंगे. वर्ष का उत्तरार्ध संघर्षों के साथ-साथ उत्तरोत्तर प्रगति का रहेगा.

धन-सम्पत्ति : गोचर के ग्रह आपको परिश्रम से अच्छा लाभ प्रदान करते हैं. धन लाभ, सम्पत्ति और सम्मान की प्राप्ति होगी. नये धंधे, कारोबार का विचार होगा. नये कार्यों में एजेंसी परामर्श, दुकान आदि से धन एवं सुख साधनों में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी. परिश्रम और बढ़ाने पर वर्षान्त में परिणाम आशाजनक मिलेंगे.

घर परिवार : घर के किसी संबंधी की आजीविका आरम्भ होने या बेहतर नौकरी लगने अथवा उनके उद्योग-धंधे, व्यापार में अच्छा लाभ मिलने का योग प्रबल है. चिन्ता दूर होगी और संतान की उन्नति होगी. मई से अक्टूबर के बीच कुटुम्बीय जनों के उन्नति के शुभ प्रसंग सामने आ सकते हैं.

स्वास्थ्य : वर्ष के दौरान अधिकतर स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, किन्तु मार्च में चोट-मोच या स्नायु संबंधी तनाव बन सकता है. वर्षान्त में एलर्जीजन्य कष्ट सम्भावित हैं. वरिष्ठजनों के स्वास्थ्य का ध्यान रखें. यदि आप उच्च रक्तचाप के मरीज हैं तो अगस्त, सितंबर, अक्टूबर सावधानी के हैं. इन सबके बावजूद यदि आपके जन्म के ग्रह प्रतिकूल नहीं हैं तो कोई बड़ी समस्या नहीं होगी.

परीक्षा प्रतियोगिता: गुरु का गोचर आपको बौद्धिक क्षेत्र में उच्च कोटि की सफलता दिला सकता है, अतएव परिश्रमी बने रहें. प्रतियोगी परीक्षाओं में आप दूसरों को पीछे छोड़कर आगे निकलने में सफल होंगे. जून, जुलाई, अगस्त का समय इस दृष्टि से विशेष आशाजनक रहेगा. संतान की उन्नति होगी.

यात्रा प्रवास तबादला : इस वर्ष में अनचाहे रद्दोबदल नहीं होंगे. मार्च और जून के उत्तरार्ध में नौकरी में अधिकारियों से परेशानी हो सकती है. नवंबर, दिसंबर में छुट्टी अधिक लेनी पड़ सकती है और घर के बाहर भी रहना पड़ सकता है. इस वर्ष परिवार के साथ आनंददायक यात्रा के योग हैं, तीर्थ दर्शन का लाभ होगा.

धार्मिक कार्य, ग्रहशांति : अढ़ैया शनि के कुप्रभाव से बचने के लिए शनि के बीज मंत्र का जप करना, हनुमानजी को तेल का दीपक रखना, हनुमान चालीसा या बजरंग बाण का पाठ करना लाभकारी रहेगा. शनि की लौह मुद्रिका अथवा जमुनिया धारण कर सकते हैं. कुलदेवी की आराधना भी लाभकारी रहेगी. इस राशि का स्वामी ग्रह बुध है. इस राशि के जातकों को हरे रंग की वस्तुओं का दान करने से बचना चाहिए. आप पीली दाल, बर्तन, कपड़े, फल और कांसा से संबंधित वस्तुओं का दान कर सकते हैं.

धनु - (ये, यो, भा, भी, भू, भे, फा, ढ़ा, धा)

व्यवसाय : इस वर्ष आपका कारोबार अपनी पूरी क्षमता पर पहुंचने के साथ-साथ नयी कार्य प्रणाली एवं आधुनिक तकनीक के कारण नयी ऊर्जा से नये उद्देश्यों की ओर बढ़ेगा. यदि आप फैक्ट्री, संयंत्र, उत्पादन या वितरण कार्य से सम्बन्धित मालिक, व्यवस्थापक या कर्मचारी हैं तो यह वर्ष आपके लिए विशेष उन्नतिकारक सिद्ध होगा. यदि आप नौकरीपेशा हैं तो अपने व्यवसाय की प्रकृति के अनुसार महत्वपूर्ण उतार-चढ़ाव का सामना जून से नवंबर के मध्य हो सकता है. इस वर्ष आपकी राशि वालों को उतरता हुआ शनि लाभदायक रहेगा. यदि आपकी पत्रिका में शनि शुभ है तो लाभ होने, विभागीय परीक्षाओं में सफलता मिलने, प्रतिद्वंद्वी के आपके कार्य क्षेत्र से हटने का योग बन सकता है.

धन-सम्पत्ति : यह वर्ष स्थायी संपत्ति प्राप्ति की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहने वाला है. बना बनाया मकान, पुरानी जायदाद, तैयार नयी फैक्ट्री, मशीनरी आदि प्राप्ति का योग है. कृषि बागवानी में अच्छे लाभ की संभावना है. कृषि उपकरण भी खरीदे जा सकते हैं. किरायेदारी, पट्टेदारी आदि से भी स्थायी लाभ का योग है. बंटवारे में पैतृक सम्पत्ति मिल सकती है अथवा कहीं अन्य तरीके से भी लाभ के योग पाए जाते हैं.

घर परिवार : इस वर्ष संतान पक्ष की नौकरी या निजी व्यवसाय आदि के आरम्भ होने से आर्थिक मामलों में आपको पर्याप्त राहत मिलेगी. इसके अलावा आपके जिम्मेदारी, कर्ज अदायगी, व्यवसायिक उपक्रम में भी संतान पक्ष की ओर से जिम्मेदारीपूर्ण दृष्टिकोण अपनाए जाने ग्रहों का संकेत है. घर में अप्रैल मई में नये शुभ कार्य होने का योग है.

स्वास्थ्य : चौथे गुरु और शनि के प्रभाव से अधिक कार्यभार, अव्यवस्थित कार्य पद्धति के कारण जनवरी से मई से अगस्त के बीच स्वास्थ्य कष्ट तथा कार्य की अनुकूलता में कमी हो सकती है. इस अवधि में उदर विकार, हृदय रोग, डायबिटीज जैसी बीमारियां उभर सकती हैं. वर्ष के मध्य कंधे, कमर में दर्द, चोट की संभावना है. इन सबके बावजूद अन्य ग्रहों की आपको अच्छी मदद मिलेगी, जिससे आप अपने स्वास्थ्य को शीघ्र संतुलित बना लेंगे.

परीक्षा-प्रतियोगिता : करिअर की दृष्टि से यह वर्ष उपलब्धियों से भरा रहेगा. विभागीय परीक्षाओं में अथवा उच्च अनुसंधान जैसे कार्यों में अच्छी सफलता मिलेगी. गोचर ग्रह के कारण बीच-बीच में बाधाएं भी पैदा होंगी, भ्रमित कर सकता है. परन्तु राशि स्वामी गुरु के कारण अंत में बाधाएं दूर होकर सफलता मिलेगी.

यात्रा, प्रवास, तबादला : इस वर्ष मार्च से जून के बीच अनुकूल स्थानांतरण या मनचाहे यात्रा प्रवेश होने का संकेत है. प्रयास करने पर परिवर्तन निरस्त भी हो सकता है. यदि आप नौकरी में घर से दूर हैं अथवा अन्यत्र व्यवसाय कर रहे हैं तो वर्ष के मध्य या वर्ष के अंत में वापसी का योग है.

धार्मिक कार्य, ग्रहशांति : आपको उत्तर दिशा की यात्रा, संतों का समागम, सत्संग और घर पर धार्मिक कार्य का आयोजन कर मानसिक प्रसन्नता प्राप्त करेंगे. मां दुर्गाजी की आराधना करना, रक्त पुष्प अर्पण करना लाभकारी है. इस राशि का स्वामी बृहस्पति है. इस राशि के जातकों को पीली वस्तु, तांबा, केसर, किताब और काली वस्तुओं का दान करना बेहद शुभ माना गया है.

कर्क - (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

व्यवसाय : इस वर्ष अप्रैल से गुरु का शुभकारक प्रभाव विशेष रूप से रहेगा, अतएव इस वर्ष आप व्यवसाय में कोई नया कार्य अवश्य करेंगे. यदि आप नौकरीपेशा हैं तो नये पद बनने से पदोन्नति होने, नये विभाग में प्रतिनियुक्ति मिलने का योग प्रबल है तथा यह योग मार्च में घटित हो सकता है. आपकी पत्रिका में शनि शुभ है तो इस वर्ष आपको लम्बे अरसे से चली आ रही कई समस्याओं से अच्छी राहत मिल सकेगी. आपने यदि अपनी क्षमता से अधिक कारोबार का विस्तार कर लिया है तो इस वर्ष आप उन्हें व्यवस्थित करने तथा लाभजनक स्थिति में ले आने में सफल होंगे. आपका मान-सम्मान विशेष बढ़ेगा, इसका भी आपकी व्यावसायिक गतिविधियों पर रचनात्मक प्रभाव पड़ेगा. यदि आपकी पत्रिका में शनि अनुकूल है तो जनवरी से मई के मध्य तथा जून से नवंबर के बीच व्यावसायिक क्षेत्र में लाभ, कार्यों में सहयोग, सफलता तथा उत्साह बढ़ाने वाला रहेगा.

धन-सम्पत्ति : इस वर्ष स्थायी संपत्ति, भूमि भवन, दुकान, गोदाम, गैरेज, शोरूम आदि की प्राप्ति आपके व्यवसाय की प्रकृति तथा पत्रिका के ग्रहयोग के अनुसार निश्चय ही हो सकती है. विद्यमान सम्पत्ति में से कुछ का विक्रय कर नयी खरीद होने का संकेत है. आप जिस भूमि भवन आदि पर किराया दे रहे हैं, वह ही आप आसान किश्तों पर खरीद सकते हैं.

घर-परिवार : परिवार में इस वर्ष संबंधी जनों के अलावा अन्य नये-पुराने रिश्तेदारों की जिम्मेदारी उठानी पड़ सकती है. शादी-विवाह में खर्च तथा सामाजिक रीति-रिवाजों में रिश्तेदारों पर खर्च करना पड़ सकता है, जिसकी पूर्ति गोचर के ग्रहयोग से सरलता हो सकेगी. किसी संतान की उन्नति का योग है.

स्वास्थ्य : इस वर्ष आपका स्वास्थ्य अधिकतर ठीक रहेगा, नये उपक्रमों में आपका उत्साह बना रहेगा. यद्यपि मार्च और जून में कुछ निराश रह सकते हैं, पुरानी व्याधि से पीड़ा दे सकती है. डायबिटीज के रोगियों को सकारात्मक रिपोर्ट प्राप्त हो सकती है. मार्च, जून में वाहन का प्रयोग सावधानी पूर्वक करें, चोट-चपेट की समस्या बन सकती है.

परीक्षा प्रतियोगिता : इस वर्ष बाधाओं के बावजूद आप अध्ययन में सबको पीछे छोड़ते हुए उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करेंगे. नये विषयों के अध्ययन में आप आगे बढ़ेंगे, जिसमें कुछ बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है, परन्तु आपके गोचर के ग्रहयोग के प्रभाव से आने वाली समस्याओं का सरलता से समाधान करते हुए सफलता प्राप्त कर सकेंगे.

यात्रा, प्रवास, तबादला : इस वर्ष आपको कारोबार को लेकर लाभकारी यात्राओं के अवसर भी प्राप्त होंगे. यदि आप इच्छित स्थान या कार्यक्षेत्र में बदलाव करना चाहते हैं तो सफलता प्राप्त हो सकती है. मार्च, अप्रैल और जून के अंत में यात्रा आदि के योग बन सकते हैं, जिसमें आपको अपनी सजगता बनाए रखना लाभकारी सिद्ध होगा.

धार्मिक कार्य, ग्रहशांति : इस वर्ष परोपकारी गतिविधियां, सामाजिक ट्रस्ट के संचालन आदि में महत्वपूर्ण कार्य मिल सकता है. आपके द्वारा इस वर्ष कोई धार्मिक अनुष्ठान, उत्तर दिशा के तीर्थ का दर्शन करने के अवसर मिलेंगे. भगवान गणेशजी की आराधना करना, गणेशजी के बीज मंत्र का जप करना कष्ट निवारण में सहायक रहेगा. इस राशि का स्वामी ग्रह चंद्र है. इस राशि के जातकों को पीली चीजों का दान करना चाहिए. जैसे पीली दाल, गुड़ या काली दाल का भी दान किया जा सकता है.

मकर - (भो, जा, जी, खा, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

व्यवसाय : इस वर्ष आपकी राशि वालों को वर्ष शनि के कारण परिश्रम अधिक होगा और लाभ भी मिलेगा. गुरु का भ्रमण दूसरे और तीसरे भाव में लाभकारी है. यदि आपकी पत्रिका में शनि अच्छी स्थिति में है तो उच्च व्यक्ति के परामर्शदाता, सचिव, सलाहकार आदि बनाए जाने का प्रस्ताव भी अनायास मिल सकता है, इससे आपकी ख्याति बढ़ेगी. उद्योगधंधे में नये उपक्रम स्थापित करने, नयी तकनीक के प्रयोग से उत्पादन, वितरण एजेंसी कार्य किये जाने का योग बन रहा है. मई से आगे के समय में कोई नया कार्य स्वतंत्र रूप से आरम्भ करने का प्रयास शुरू करेंगे, इसमें आपको मई और अगस्त में कई प्रकार की बाधाएं आ सकती हैं अथवा मार्केट आदि में मांग की कमी आदि कारणों से परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, जिन पर आपका कोई नियंत्रण नहीं होगा.

धन-सम्पत्ति : इस वर्ष नयी सम्पत्ति का निर्माण या खरीद के साथ-साथ पुरानी कम उपयोगी सम्पत्ति, मशीनरी आदि को उपयोगी बनाने पर भी व्यय अधिक होगा. कृषि बागवानी के क्षेत्र में यदि आप पहले से ही रुचि रखते हैं तो इस वर्ष आपका ध्यान नये संस्थानों के उपयोग की ओर अधिक रहेगा. वाहन, मशीनरी की प्राप्ति इस वर्ष की विशेषता रहेगी. उद्योगधंधे में आप अपने प्लांट का नवीनीकरण करने पर अतिरिक्त व्यय करेंगे.

घर-परिवार : संतान की ओर से विशेष प्रसंग होंगे. वरिष्ठ संतान की उन्नति, शिक्षा के क्षेत्र में सफलता, नौकरी शादी व्यवसाय आदि क्षेत्र में कार्य बन सकते है. वर्ष के मध्य संबंधीजनों के मध्य दायित्व बढ़ाने वाले प्रसंग होने के संकेत हैं. सामाजिक क्षेत्र में आपका महत्व बढ़ेगा. भाई-बंधुओं की उन्नति हो सकती है. परिवार के वृद्धजनों की चिंता का योग है.

स्वास्थ्य : वर्ष के आरम्भ में उदर या मूत्र विकार की संभावना है. आपके व्यक्तित्व में आकर्षण बढ़ेगा. राहु और केतु के प्रभाव से चर्बी बढ़ने की संभावना है. हृदय रोगियों को हृदय संबंधी समस्या उभर सकती है, फिर भी वर्ष भर आपका स्वास्थ्य अधिकतम अच्छा रहेगा. कार्य कुशलता बेहतर रहेगी. कोई बड़ी व्याधि का योग नहीं है.

परीक्षा-प्रतियोगिता : आपको संस्थागत दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से अपनी शैक्षणिक और व्यावसायिक योग्यता बढ़ाने का अवसर इस वर्ष प्राप्त होगा. इस अवसर का सदुपयोग समय रहते कर लेना बेहतर होगा. आपके करिअर को नयी ऊंचाइयों तक ले जाने में इस वर्ष परिस्थितियां आपके अनुकूल रहेंगी. आपको प्रतियोगी परीक्षा में नौकरी और छात्रवृत्ति मिलने की संभावना है.

यात्रा, प्रवास, तबादला : कार्य क्षेत्र में बड़े स्थान परिवर्तन अधिकतर नहीं होंगे. जो भी स्थानांतरण या कार्य क्षेत्र संबंधी बदलाव होंगे, वे सब आपकी इच्छा या सहमति से होंगे. आपके लिए उन्नतिकारक व सुविधाजनक समय कहा जा सकता है. पवित्र स्थल के दर्शन या प्राकृतिक स्थलों की सैर हो सकती है.

धार्मिक कार्य, ग्रहशांति : आपकी राशि में शनि राहु का विशेष प्रभाव है, इसलिए चीटियों को आटा शक्कर चुनाना, पीपल की पूजा करना, तेल का दीपक रखना, पक्षियों को दाना डालना लाभकारी रहेगा. हनुमानजी की आराधना लाभकारी रहेगी. इस राशि का स्वामी ग्रह शनि है. इस राशि के जातक चने की दाल, तेल, नीले और काले कपड़े, तिल, लोहा, सोना आदि का दान कर सकते हैं.

सिंह - (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

व्यवसाय : आप अपने अथक परिश्रम से इस वर्ष व्यवसाय में अपने लिए एक विशेष जगह बना सकेंगे. यदि आप उद्योग, व्यापार एजेंसी कार्य में उत्पादन कार्य करते हैं तो पूंजीगत किए गए खर्चों की भरपाई इस वर्ष हो सकेगी. अलाभकारी औद्योगिक व्यापारिक इकाइयां, एजेंसी, शोरूम आदि इकाई अपने स्वरूप बदलने के कारण लाभकारी सिद्ध हो सकती हैं. औद्योगिक व्यावसायिक उपक्रम में समय अनुकूल होने के कारण लाभार्जन शीघ्र मिलने लगेगा. आपको पदोन्नति में सफलता मिल सकती है. पत्रिका में ग्रहस्थिति अनुकूल होने पर नौकरी-धंधे में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा तथा आपको सम्मानपूर्ण एवं गोपनीय प्रकृति कार्यों की जिम्मेदारी मिल सकती है, जिसे निर्वहन करने में सफलता मिलेगी. व्यावसायिक मामलों में अप्रत्याशित उतार-चढ़ाव, हानि, परेशानी आने की संभावना है. फरवरी, मार्च, जून का उत्तरार्ध इस दृष्टि से घटना प्रधान रह सकता है. ग्रह अनुकूल होने से आपको मदद भी मिलेगी. नवंबर, दिसंबर और मार्च से मई का समय कार्यक्षेत्र में उन्नति, समृद्धि के मार्ग प्रशस्त करेगा और लाभ प्राप्ति की स्थितियां बन सकती हैं.

धन-सम्पत्ति : आपको इस वर्ष चल और अचल दोनों प्रकार की सम्पत्तियों की प्राप्ति हो सकती है. बैंक में जमा पूंजी के बढ़ने, स्वर्ण आभूषण की प्राप्ति होने तथा सुख-सुविधा के नये आधुनिक साधन प्राप्ति का योग है. यदि सम्पत्ति की खरीद निर्माण कार्य में बाधा आ रही है अथवा लाभ प्राप्त नहीं हो पा रहा है तो इस वर्ष पूरे हो सकेंगे. उद्योग-धंधे या व्यापार नौकरी में अच्छी तरक्की होगी, जिससे लाभ भी प्राप्त होगा. जून में प्रापर्टी, बचत धन, कीमती वस्तु में हानि के प्रति सावधानी रखें.

घर-परिवार : पारिवारिक क्षेत्र में चली रही तनाव अलगाव की समस्या इस वर्ष दूर हो सकेगी, साथ ही भाई-बंधु या पड़ोसी से आपसी मतभेद हो सकता है, किन्तु कोई समस्या नहीं बनेगी. मई से नवंबर के बीच घर-परिवार में शुभ कार्य, शादी, यज्ञोपवीत आदि संस्कार होने का संयोग बनेगा. संतान पक्ष की उन्नति होगी. सामाजिक क्षेत्र में यश मिलेगा.

स्वास्थ्य : इस वर्ष अष्टम गुरु और चौथे केतु के कारण आपको पुरानी व्याधि, जोड़ों में दर्द, सर्दी कफजन्य व्याधियां तथा स्नायविक तनाव या कंधे-कमर-घुटनों में तकलीफ संभावित है. परन्तु अन्य ग्रहों के प्रभाव से शीघ्र लाभ होगा तथा अधिकतर स्वास्थ्य अच्छा बना रहेगा.

परीक्षा-प्रतियोगिता: इस वर्ष आपके द्वारा किया गया परिश्रम सार्थक होगा, समय आपका साथ देगा, अतः भाग्य और पुरुषार्थ का मेल होने से आप दूसरों को आश्चर्य चकित करते हुए उल्लेखनीय सफलता परीक्षा-प्रतियोगिता में प्राप्त कर सकेंगे. अध्ययन में आने वाली समस्याओं का निराकरण मई से होने लगेगा.

यात्रा, प्रवास, तबादला : यदि आप नौकरी में बाहर हैं तो इस वर्ष इच्छानुसार तबादला कराकर घर वापस हो सकते हैं. किसी लम्बी यात्रा, भ्रमण या लम्बे अवकाश लेने की दृष्टि से यह वर्ष महत्वपूर्ण है. इस वर्ष धार्मिक तीर्थस्थान की यात्रा का योग भी बन रहा है.

धार्मिक कार्य, ग्रहशांति : इस वर्ष केले का पूजन करना, मछलियों को दाना चुगाना लाभकारी है. आपका धर्मशास्त्रों के अध्ययन में तथा सत्संग लाभ लेने की ओर ध्यान रहेगा. धार्मिक अनुष्ठान, भगवान शिव जी की आराधना से दैहिक-दैविक-भौतिक तीनों तापों का निवारण होगा.

कुंभ - (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द)

व्यवसाय : पूरे वर्ष आपकी राशि वालों को साढ़ेसाती शनि का प्रभाव रहेगा परन्तु शनि आपका राशि स्वामी है, इसलिए परिश्रम और परेशानी देगा परंतु लाभ भी अच्छा देगा. अन्य ग्रहों के प्रभाव से इस वर्ष व्यवसायिक क्षेत्र में नये कार्यों की प्रेरणा मिलेगी. नये उद्योगधंधे के लिए महत्वाकांक्षी, ब्लूप्रिंट रूपरेखा इस वर्ष तेजी से आकार लेगी. किसी प्रभावशाली व्यक्ति के माध्यम से आपको अपनी योजनाओं को आगे बढ़ाने में मदद मिल सकती है. एजेंसी कार्य, ट्रांसपोर्ट, प्रचार प्रसार, मीडिया, प्रकाशन, लेखन, बौद्धिक और धार्मिक कार्य में अधिकांश समय सफलता मिलेगी. नौकरी पेशा व्यक्तियों के लिए नये पदों का सृजन हो सकता है, या अन्य तरह से लाभ होंगे. सितंबर से नवंबर के मध्य व्यावसायिक सहयोगियों की अस्वस्थ्यता या अन्य कारणों से व्यावसायिक-प्रशासनिक नीतिगत फेर-बदल से बाधा का संकेत है, जो किसी हितचिंतक की सलाह से दूर होगी. इस वर्ष आपको स्थान या कार्य परिवर्तन का विचार जुलाई से सितंबर के मध्य आ सकता है.

धन-सम्पत्ति : इस वर्ष के आरंभ में पूंजीगत बड़े व्यय हो सकते हैं, जो आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति की दिशा में एक बड़ा आधार बनेगा. बड़े कार्यों के लिए पूंजी की व्यवस्था में कोई विशेष कठिनाइयां नहीं होंगी. विभिन्न माध्यम से या आसान किश्तों पर ऋण की व्यवस्था हो सकती है. कर्ज की वापसी भी आप सुविधाजनक स्थिति से कर सकते हैं. स्थायी सम्पत्ति के मामलों में इस वर्ष कुछ समस्या पैदा होगी. अधिकार आदि के विभाजन को लेकर कुछ समस्याएं बन सकती हैं.

घर परिवार: पारिवारिक क्षेत्र में मई से जुलाई के मध्य किसी निकट संबंधी के स्वास्थ्य, कष्ट आदि के कारण परेशानी रहने से अशांति बन सकती है. घर-परिवार में संतान पक्ष की ओर से शादी-विवाह और उन्नति के शुभ प्रसंग सामने आएंगे. संतान पक्ष के लिए वर्षांत का समय विशेष उत्तम रहेगा. संतान की उन्नति के योग हैं.

स्वास्थ्य : अधिकतर स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, आपकी कार्य क्षमता बनी रहेगी. आपको पित्त संबंधी व्याधि, डायबिटीज, लीवर से संबंधित छोटी मोटी शिकायत हो सकती है, जो इलाज से शीघ्र ठीक हो जाएगी. फरवरी से मई के बीच चित्त में एकाग्रता की कमी का अनुभव हो सकता है. रक्तचाप में वृद्धि की संभावना है. संयम और औषधि से उस पर नियंत्रण होगा.

परीक्षा प्रतियोगिता : आपको इस वर्ष कड़ी प्रतिद्वंद्विता का सामना करना पड़ेगा, परन्तु परिश्रम करने पर आपको उसका उचित फल प्राप्त होगा. जनवरी से मार्च और जुलाई से सितंबर के मध्य चित्त में अशांति के कारण आपको अपना लक्ष्य साधने में रुकावट आ सकती है.

यात्रा, प्रवास, तबादला : मार्च से मई के मध्य उत्तर दिशा की यात्रा, भ्रमण आदि हो सकता है. यदि आप तबादले पर बाहर हैं तो इस दौरान आपकी इच्छित स्थान पर वापसी हो सकती है. विभागीय परितर्वन का योग भी इस वर्ष घटित हो सकता है. यदि अपने इच्छा के स्थान पर विभागीय परिवर्तन चाहते हैं तो प्रयासों में सफलता मिलेगी.

धार्मिक कार्य, ग्रहशांति : मनोरंजक स्थल और धार्मिक स्थलों के दर्शन का योग है, सत्संग का लाभ होगा. घर पर अनुष्ठान पूजन का आयोजन हो सकता है. शनि की शांति के लिए हनुमानजी को चोला चढ़ाना, शनि के मंत्र का जप करना, शनिवार को हनुमानजी के दर्शन करना, गुरुवार को गाय को केला खिलाना लाभकारी रहेगा.

कन्या - (टो, पा, पी, पू, पे, पो, ष, ण, ठ)

व्यवसाय : यदि आपकी पत्रिका में गुरु या शनि या दोनों शुभ हैं तो आपको इस वर्ष व्यवसाय के सिलसिले में देशदेशान्तर का भ्रमण करने अथवा विदेश जाने का अवसर भी मिलेगा. आपको विदेशी पूंजी या तकनीक के माध्यम से अपना कारोबार बढ़ाने का मौका मिलेगा. नौकरी उद्योग-धंधे के सिलसिले में पदोन्नति पर कारोबार की नयी शाखाएं खोलने का मौका मिलेगा. व्यवसाय में सम्पत्ति के निर्माण पर तथा पुरानी देनदारियों के समाधान पर पूंजीगत व्यय होने के भी संकेत हैं. यदि आप नौकरीपेशा हैं तथा आपकी पदोन्नति रुकी हुई है या अन्य कोई कानूनी विवाद आपके व्यावसायिक मामले, पार्टनरशिप आदि में बाधक बन रहा है तो इस वर्ष इसका निपटारा हो सकेगा.

धन-सम्पत्ति : इस वर्ष लंबे समय से बकाया धन प्राप्त हो सकता है, जिससे आपको आर्थिक लाभ प्राप्त होता रहेगा. बैंक से लोन, किसी की जमानत तथा बड़े कर्ज लेने से बचना चाहिए. इस वर्ष अपनी इच्छा की पूर्ति हेतु सम्पत्ति के निर्माण या खरीद या नवीनीकरण पर खर्च हो सकता है. कानूनी विवाद या झगड़े के कारण अपव्यय होने का संकेत है, जिसमें जमा धन के खर्च होने की संभावना है.

स्वास्थ्य : आपको इस वर्ष स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं, लीवर की खराबी, अपच, गैस ट्रबल आदि से कष्ट हो सकता है. यदि पत्रिका में ग्रहयोग अनुकूल नहीं है तो जोड़ों में दर्द, चोट-मोच, दुर्घटना आदि से सावधानी बरतना लाभकारी रहेगा.

घर-परिवार : इस वर्ष घरेलू जिम्मेदारियां बढ़ सकती हैं, जिनके निर्वहन हेतु आपको अपने संबंधीजनों से सहयोग तथा साधन मिलता रहेगा. कोई संबंधी आपको अपनी बचत या धन सम्पत्ति आदि के उपयोग का अधिकार भी दे सकता है. वर्ष के मध्य में शुभ कार्य होने का योग है. परिवार के किसी सदस्यों को घर के निकट भूमि-भवन या नौकरी-धंधे की प्राप्ति से हर्ष और उल्लास का वातावरण बनेगा.

परीक्षा-प्रतियोगिता : परीक्षा प्रतियोगिता में इच्छानुकूल सफलता प्राप्त करने के लिए अधिक परिश्रम व लगनशीलता से कार्य करना होगा. मार्च से जून के मध्य अप्रत्याशित ढंग से सफलता मिल सकती है. उच्च अध्ययन में विषय परिवर्तन या अन्य विलम्ब सम्भावित हैं. करिअर की दृष्टि से यह वर्ष उपलब्धियों वाला रहेगा.

यात्रा, प्रवास, तबादला : इस वर्ष व्यवसाय या नौकरी में एक से अधिक बार परिवर्तन हो सकते हैं, यदि आपकी काफी समय से किसी पद या नगर में वापसी रुकी है तो मार्च से जून के मध्य यह वापसी हो सकती है.

धार्मिक कार्य, ग्रहशांति : हनुमानजी की आराधना करना, राहु के मंत्र का जप करना और श्रीराम रक्षा स्त्रोत का पाठ करना विशेष लाभकारी है. आपको तीर्थयात्रा, संतों का समागम, धार्मिक कार्य का लाभ होगा. कन्या राशि होने से आपके इष्ट देव मां दुर्गा, सरस्वती होती हैं. उनकी कृपा से आप जीवन में आनंद प्राप्त कर सकते हैं. इस राशि का स्वामी ग्रह बुध है. इस राशि के लोगों को हरी वस्तुओं का दान नहीं देना चाहिए.

मीन - (दी, दू, दे, दो, चा, ची, थ, झ, त्र)

व्यवसाय : इस वर्ष आपके कारोबार में लम्बे समय से रुके हुए कार्य बन सकते हैं, आप अपने कारोबार का नवीनीकरण तथा इसमें नयी तकनीक के उपयोग से गुणवत्ता एवं मात्रा बढ़ाने का विचार बनाएंगे, जो वर्ष के मध्य में आकार ले सकता है. फरवरी से अप्रैल के मध्य आपको अपने उद्योगधंधे या शादी के कार्यों में आकस्मिक कठिनाइयों का अनुभव होगा. शुभचिंतक या किसी निकट संबंधी की मदद परामर्श आदि से लाभ मिलेगा. आपको व्यवसायिक उपक्रमों में नये सिरे से बढ़ने के लिए उनकी शाखाओं-शोरूम खोलने में मदद मिल सकती है. यदि आप नौकरीपेशा हैं तो दूसरों के रिटायरमेंट या अचानक हट जाने से पदोन्नति हो सकती है. नये शोरूम या प्रोडक्ट बनाने पर विचार बन सकता है.

धन-सम्पत्ति : इस वर्ष कुछ माध्यमों से बचत होगी. बहुमूल्य रत्न सामग्री, स्वर्ण आभूषण, कीमती सजावटी वस्तुएं खरीद सकते हैं. इस वर्ष आपके बड़े उद्देश्यों पर व्यय अधिक हो सकता है, जिसमें शुभ कार्यों, विवाह और कारोबार का विस्तार मुख्य रहेगा. फरवरी से जून के मध्य कुछ महत्वपूर्ण निर्णय होंगे, जिसका आपको अच्छा लाभ मिलेगा. व्यवसाय या भवन के नवीनीकरण, कृषि भूमि, बाग-बगीचे को अधिक उपजाऊ बनाने के लिए भी व्यय हो सकता है.

स्वास्थ्य: इस वर्ष श्वांस या मधुमेह संबंधी पुराने रोगियों को कष्ट हो सकता है. एलर्जी और जोड़ों में जकड़न और वृद्धावस्थाजन्य व्याधियों से कष्ट के योग हैं. इस दृष्टि से मई से जून और सितंबर से नवंबर के मध्य विशेष ध्यान रखें. उपचार से लाभ होगा.

घर परिवार : इस वर्ष पारिवारिक क्षेत्र में आप किसी बड़े उत्तरदायित्व, शादी-विवाह-शिक्षा आदि से जुड़ी उलझनों को निपटाने में सफल होंगे. अतिरिक्त धन की व्यवस्था भी हो सकेगी. इस वर्ष आपका कोई संबंधी आपके यहां पढ़ाई या इलाज के लिए अथवा नौकरी खोजने के लिए आकर लंबे समय तक रह सकता है. फरवरी, मार्च और जून में पारिवारिक कष्ट, संबंधी जनों के कष्ट से उत्तरदायित्व बढ़ेंगे. सामाजिक क्षेत्र में सम्मान मिलेगा.

परीक्षा प्रतियोगिता : इस वर्ष परिक्षाओं में सामान्यतः अच्छी सफलता मिलेगी, इससे आपको अपने लक्ष्य की पूर्ति में रुकावट नहीं आएगी. फरवरी से मई के दौरान आपको अपनी प्रतियोगिता परीक्षाओं में करिअर से जुड़ी तैयारी में पारिवारिक या पुरानी समस्याओं के कारण पर्याप्त ध्यान दे पाने में कठिनाई आ सकती है.

यात्रा, प्रवास, तबादला : मई या जून के उत्तरार्ध में अनचाहे स्थान पर तबादला हो सकता है, जो प्रयास करने से निरस्त भी हो जाएगा. इस वर्ष लंबा अवकाश लेकर परिवार के साथ धार्मिक और मनोरंजक यात्रा के योग मई से जून के मध्य बन सकते हैं. व्यावसायिक यात्राओं के विशेष योग हैं.

धार्मिक कार्य, ग्रहशांति : शनि, गुरु और केतु की शांति के लिए शनिवार को हनुमानजी की आराधना करना और गुरुवार को गाय को केला खिलाना, शिवजी की आराधना करना लाभकारी रहेगा. पुण्यस्थल के दर्शन और निवास का संयोग भी जनवरी से मई के बीच बन सकता है.

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

12

जयपुर >> मंगलवार, 28 दिसम्बर, 2021

कांग्रेस व देश का डीएनए एक, मोदी सरकार डीएनए खत्म नहीं कर पाएगीः गहलोत

बाड़ा पदमपुरा में कांग्रेस का तीन दिवसीय अधिवेशन में गहलोत ने कार्यकर्ताओं से सरकार की कमियां बताने को कहा

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। कांग्रेस का तीन दिवसीय प्रशिक्षिण शिविर आज से बाड़ा पदमपुरा में प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने केन्द्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहा, मोदी सरकार कितनी ही कोशिश कर ले, देश से कांग्रेस का डीएनए खत्म नहीं कर पाएगी। देश में आज हालात खराब है। देश किस दिशा में जा रहा है इसका किसी को पता नहीं। हरिद्वार में हुई धर्म संसद के अंदर पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और मुस्लिमों के खिलाफ किस तरह से जहर उगला गया है, कोई मुकदमा दर्ज नहीं हुआ, कोई कार्यवाही नहीं हुई। यह दुर्भाग्यपूर्ण है। देश खतरनाक दिशा में जा रहा है। संवैधानिक संस्थाओं इनकम टैक्स, सीबीआई ,सब दबाव में काम कर रहे हैं। चुनाव के समय केंद्रीय एजेंसियों के छापे पड़ते हैं। हमें भी पॉलीटिकल क्राइसिस के समय इसका अनुभव है कि किस प्रकार से हमारे ऊपर छापे मारे गए थे। यह लोग फासिस्ट बादी प्रवृत्ति के लोग हैं। देश में कई जगह लिंचिंग होती है। देश का और कांग्रेस का डीएनए एक है। केंद्र की मोदी सरकार कितनी भी कोशिश कर ले देश से कांग्रेस का डीएनए खत्म नहीं कर पाएगी।

कांग्रेस के दफ्तर हमारे मंदिर

गहलोत ने कहा कि राजधानी जयपुर में हुई राष्ट्रव्यापी कांग्रेस रैली से देश भर में राजस्थान का मान सम्मान बढ़ा है। सब ने अपने स्तर पर रैली को सफल बनाने में योगदान दिया। जिला कांग्रेस कमेटियों के दफ्तर हमारे मंदिर हैं उनमे हमारी आस्था होनी चाहिए। जिला और ब्लॉक कांग्रेस के ऑफिस आस्था का केंद्र है। जनता को लगना चाहिए कि अगर वह इनके कार्यालय आते हैं तो उनकी समस्याओं का समाधान होना चाहिए।

अच्छा काम करके भी मार्केटिंग में फेल, बीजेपी उस्तादः कांग्रेस अच्छा काम करती है। अच्छे फैसलों व कार्यक्रमों से प्रदेश का विकास और जनता की भलाई होती है, लेकिन हम अच्छा करते हुए उसे जनता तक पहुंचा नहीं पाते हैं। हम मार्केटिंग में पिछड़े जाते हैं। जबकि भाजपा वाले मार्केटिंग में उस्ताद है। वे कुछ नहीं करते, लेकिन मार्केटिंग में माहिर है। हम अच्छा करके भी मार्केटिंग नहीं कर पाते हैं। कांग्रेस कार्यकर्ताओं को इस तरफ ध्यान देना होगा।

पार्टी खुला अधिवेशन करें, सरकार की भी आलोचना होः राजस्थान में ऐसा पहली बार हुआ है जब शासन के तीन साल पूरे होने के बावजूद एंटीइन्कमबैंसी नहीं है। सरकार शानदार काम कर रही है। सत्ता और संगठन मिलकर काम कर रहे हैं ऐसा पहली बार हुआ है। गहलोत ने कार्यकर्ताओं से कहा कि आप हमें सरकार की कमियां भी बताई, ताकि उन पर गंभीरता से काम किया जा सके। कार्यकर्ता पार्टी की रीढ़ है। बिना कार्यकर्ताओं के कोई पार्टी नहीं चल सकती। कांग्रेस सहित सभी पार्टियों में एक परंपरा है कि अधिवेशन में कोई ना कोई प्रस्ताव पारित किए जाएं। पार्टी का खुला अधिवेशन होना चाहिए जिसमें सरकार की भी आलोचना होनी चाहिए। सरकार में क्या कमियां है इसे पार्टी कार्यकर्ता बेहतर बता सकते हैं हम कितनी ही योजनाएं लेकर आ जाएं लेकिन अगर कार्यकर्ताओं की भागीदारी उन योजनाओं में नहीं होगी तो फिर जनता तक वह योजना नहीं पहुंच पाएंगे। पार्टी कार्यकर्ताओं का मान सम्मान करना हमारे जहन में है और हमारे जहन में नहीं होगा तो किसके जेहन में होगा।

डोटासरा बोले...

संगठन से ही सत्ता

कार्यक्रम में पीसीसी चीफ गोविंद सिंह डोटासरा ने कहा कि संगठन से ही सत्ता हासिल होती है। संगठन और कार्यकर्ताओं के दम पर ही लम्बे समय तक लोगों के दिलों में राज किया जा सकता है। संगठन के प्रति निष्ठा रखने वाले व्यक्ति सदैव सफल रहते है और राजनीति में लंबी ऊंचाइयों को हासिल करते है। संगठन का रास्ता सत्ता तक जाता है, मुझे जब सत्ता और संगठन में चुनाव करना था तो मैंने संगठन को चुना। क्योंकि संगठन महत्वपूर्ण होता है। तीन दिन तक चलने वाले शिविर में सैकड़ों कार्यकर्ता पार्टी की रीति नीति के बारे में जानेंगे।

जयपुर विकास प्राधिकरण की उपलब्धियाँ

जयपुर विकास प्राधिकरण राज्य सरकार की आकांक्षा और संकल्पों के साथ शहर के सुनियोजित विकास के साथ-साथ आधारभूत ढांचे को सुदृढ़ करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहता है। जेडीए की रचनात्मक सोच और सामाजिक सरोकार से जुड़े फैसलों के कारण स्थाई विकास का एक ऐसा मॉडल्स हो साकार होता नजर आ रहा है। जहाँ शहर की तस्वीर बहुत तेज़ी से बदल रही है। शहर के सुदृढ़ीकरण और सुनियोजित विकास के नए आयाम जल्दी ही सामने होंगे।

राज्य सरकार के तीन वर्ष पूर्व होने पर जयपुर में परियोजनाओं का शिलान्यास एवं लोकार्पण 21 दिसम्बर 2021 को जेडीए परिसर में हुआ

गांधी दर्शन म्यूजियम एवं महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ गवर्नेन्स एवं सोशल साइंस

माननीय मुख्यमंत्री ने बजट घोषणा में 2021-22 में गांधी दर्शन म्यूजियम में महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ गवर्नेन्स एवं सोशल साइंस का निर्माण सेंट्रल पार्क स्थित पूर्व लक्ष्मी विलास होटल की भूमि पर किए जाने की घोषणा की है। कार्य की कंसल्टेंसी के लिए क्यूसीबीसी सिस्टम के तहत निविदा आमंत्रित कर कंसलटेंट को नियुक्त किया गया है और वर्तमान में कार्य प्रगति पर चल रहा है।

भूखण्ड व पट्टे आवंटन

समाचार पत्रों में विज्ञप्ति जारी कर ऑनलाइन आवेदन मांगे गये। पृथ्वीराज नगर आयोजित शिविरों में 44591 पट्टे 15 नवंबर 2021 तक जारी किए जा चुके हैं। पाकिस्तान विस्थापितों को भूखंड आवंटन की प्रक्रिया के तहत 100 लोगों को खूसर विस्तार योजना में भूखंड आवंटित किए गए हैं। शेष 176 की लाठी शीघ्र ही निकाले जाने की कार्रवाई की जायेगी।

ऑनलाइन सेवाएं

जयपुर विकास प्राधिकरण अब ऑनलाइन भी उपलब्ध है। लीज डीड (पट्टा) नाम हस्तांतरण, नाम प्रतिस्थापन, लीज मुक्ति प्रमाण पत्र, बेहतर उप विभाजन एवं पुनर्गठन सेवाएं जेडीए पोर्टल पर संचालित रहती हैं।

नई आवासीय योजनाओं का शुभारम्भ

जेडीए द्वारा अफोर्डेबल हाउसिंग पॉलिसी, निजी खातेदारी तथा राजस्थान टाउनशिप पॉलिसी 2010 के तहत विभिन्न योजनाओं में ईडब्ल्यूएस/एलआईजी/एमआईजीए जैसे वर्ग के लिए फ्लैट्स/भूखंडों का समय समय पर लॉटरी ऑक्शन किया जाता है ।

द्रव्यवती नदी परियोजना

लगभग 95.38 प्रतिशत भौतिक कार्य पूर्ण हो गया है। द्रव्यवती नदी का 16 किलोमीटर का कार्य पूर्ण कर आम जनता को समर्पित कर दिया गया है। परियोजना क्षेत्र में कुल 170 एमएलडी समता के पांच एसटीपी प्लांट स्थापित हैं। परियोजना क्षेत्र में 3 रन उद्यान विकसित किए जा चुके हैं। नाले के दोनों ओर भूमि का लैंडस्कैपिंग का कार्य किया जा चुका है।

सड़कों का निर्माण

जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा सड़कों का निर्माण, सुदृढ़ीकरण एवं नवीनिकरण का कार्य निरंतर प्रगति पर है। जिसमें दिसंबर 2018 से सितंबर 2021 तक 819.74 किलोमीटर सड़कों का निर्माण सड़कों का निर्माण सुदृढ़ीकरण एवं नवीनीकरण किया गया है।

कोविड-19 में जेडीए की भूमिका

जेडीए द्वारा कोविड-19 के अंतर्गत कोरोना की प्रथम लहर में ही दिनांक 9 अप्रैल 2020 से क्वारंटिन सेंटरों की स्थापना की गई। इन सेंटरों में कोरोना से संक्रमित और अंतरराष्ट्रीय उड़ानों से आने वाले व्यक्तियों के ठहरने, नाश्ते, खाने एवं पेयजल की व्यवस्था की गई।

कोरोना की दूसरी लहर प्रारम्भ होने पर दिनांक 26 अप्रैल 2021 से राधा स्वामी सत्संग व्यास भवन, बीलवा में कोरोना केयर सेंटर की स्थापना व संचालन जेडीए द्वारा किया गया। शहर के चिकित्सालय में मरीजों की संख्या बढ़ोतरी होने पर 2000 मरीजों के इलाज की व्यवस्था केंद्र स्थापित किया गया। कोरोना वायरस के दौरान जेडीए द्वारा कार्यालय के सामने ही 'मास्क की दीवार' नाम से केंद्र स्थापित किया गया जिसमें जरूरतमंदों को निःशुल्क 6 लाख मास्क का वितरण किया गया।

ई निविदा

निविदाओं को शत-प्रतिशत ऑनलाइन कर दिया गया है। बोली दाता ऑनलाइन के माध्यम से जेडीए की निविदा में भाग ले सकेंगे एवं संबंधित भुगतान केवल ऑनलाइन के माध्यम से जमा कर सकेंगे।

किशनबाग परियोजना

विद्याधर नगर स्थित स्वर्ण जयंती गार्डन के समीप किशन बाग गांव में नाहरगढ़ की तलहटी में प्राकृतिक रूप में बने रेत के टीबों के रूप में अनुपयोगी पड़ी जेडीए की 64.30 हेक्टेयर भूमि पर मरुस्थलीय क्षेत्र में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले वनस्पति की थीम पर किशन बागवानी की परियोजना विकसित की गई।

अनुसूचित जाति/जनजाति, महिलाओं व युवाओं के लिए प्रयास

अनुसूचित जाति/जनजाति महिलाओं को व युवाओं के लिए अनेक तरह के प्रयास किए गए। पालड़ी मीणा आवास योजना में स्थित वैम्बे क्वार्टर्स में कच्ची बस्ती के 338 परिवारों को पुनर्वास किया गया। लखेसरा योजना में मिरासी समाज के परिवारों को पुनर्वास के उद्देश्य से योजना सृजित की गई जिसमें 509 मिरासी समाज के लोग निवासरत हैं। साइट एंड सर्विस योजना में बाल्मीकि समाज के लोगों को बसाया गया जिसमें 509 परिवारों को आवासों का आवंटन किया गया। बीएसयूपी फ्लैट्स जयसिंहपुरा खोर में जेडीए द्वारा गरीब परिवारों के निवास हेतु योजना स्थापित की गई जिसमें 689 परिवारों को पुनर्वास किया गया। जोन 10 क्षेत्राधिकार में व्यापारियों और ट्रक यूनियन के वर्ग को बसाने के उद्देश्य से मुख्य दिल्ली रोड पर ऑटोमोबाइल नगर और लक्कड़ पत्थर मंडी योजना सृजित की गई जहां वर्तमान में व्यापारी वर्ग व्यापार कर रहे हैं जिसमें 530 व्यक्तियों को आवास आवंटन किया गया है।

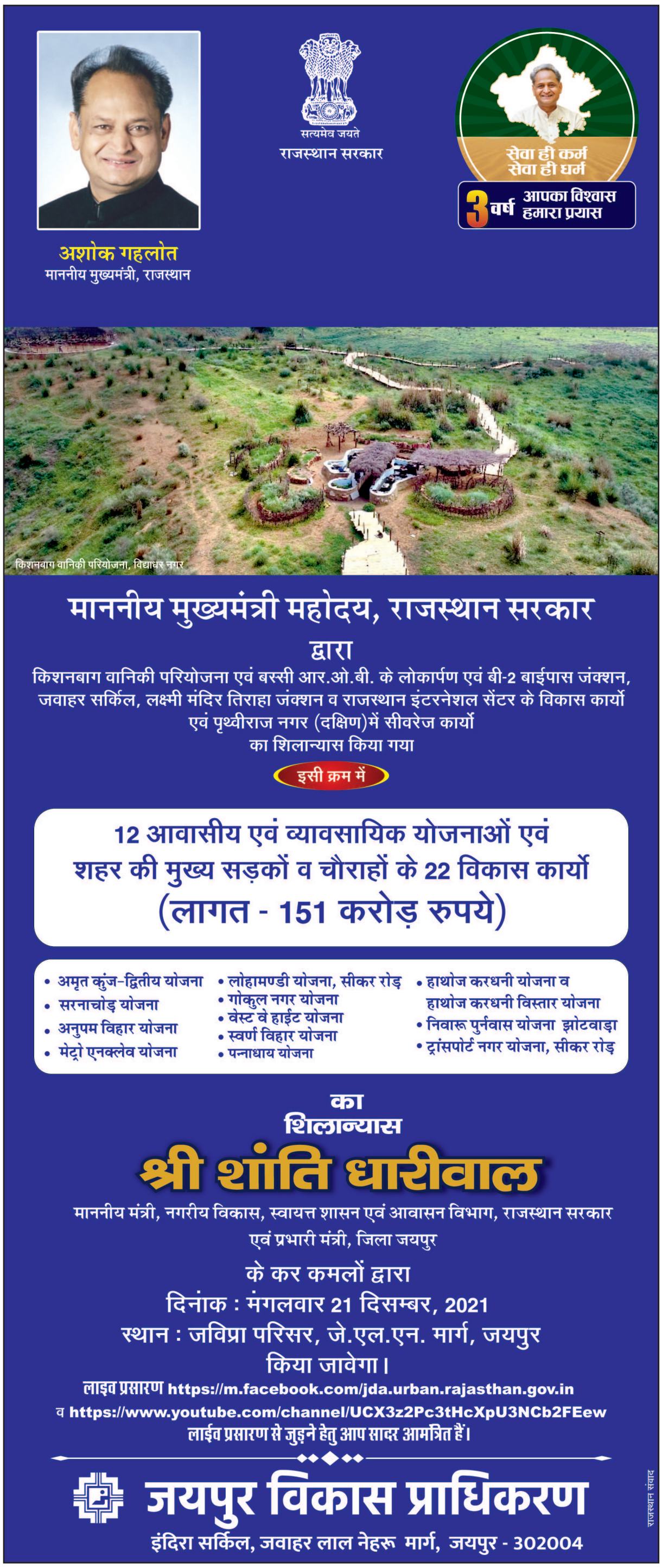

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, एवं मुद्रक **रिज़वान एजाज़ी के लिए** अम्बर ऑफसेट प्राइवेट लिमिटेड, डी.एल. टॉवर, 3-ए, विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जेएलएन मार्ग, जयपुर में मुद्रित एवं महिमा क्लासिक 601, बी-84, रमन मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित।
संपादक : शालिनी श्रीवास्तव, फोन : 0141-2620340 मो.: 9460678701, 7976561127 (21 जून 2014 से निरन्तर प्रकाशित) **hillviewsamachar@gmail.com**